Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

# विधाताका विधान।

Of course the book is not full of much romance but no doubt is heart rendering tragic story

## पहला परिच्छेद।

बाबू कामाख्यानाथ ज्यों ही अपनी बैठकमें जाकर बैठे, त्यों ही नौकरने आकर उनसे कहा कि ज्योतिरत्न महाशय आ रहे हैं। यह सुनते ही वे बैठे न रह सके और हड़बड़ाकर उठ खड़े हुए। इतनेमें सफेद वस्त्र पहने हुए, सफेद उत्तरीयसे अपना शरीर ढके हुए और खड़ाऊँ पहने हुए एक प्रौढ़ ब्राह्मणने बैठकमें प्रवेश किया। जिस समय उन ब्राह्मण महाशयने दाहिना हाथ कुछ ऊपर उठाकर इशारेसे चुपचाप आशीर्वाद दिया, उस समय अनतिक्रान्त-यौवन, उन्नत महिमकान्ति और लब्ध-प्रतिष्ठ जमींन्दार बाबू कामाख्यानाथ मारे आनन्दके बालकोंकी तरह विह्वल हो गए और उन्होने झुककर ब्राह्मण महोदयकी चरणरज लेकर मस्तकसे लगाई। उक्त ब्राह्मण देवताके शरीरपर कोई ऐसा चिह्न नहीं दिखलाई देता था जो पाण्डित्यके गौरवका प्रकाशक हो। उन दिनों हाथमें सुँघनीसे भरा हुआ बेल रखना लंबा टीका लगाना और खूब लम्बी शिखा रखना, यही तीनों पाण्डित्यके सूचक लक्षण थे; और इन तीनोंमेंसे एक भी लक्षण पंडितजीमें नहीं था। तो भी उनका गोरा रंग, लम्बा चौड़ा शरीर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


उन्नत नासिका और प्रशस्त ललाट उनका जो कुछ परिचय देता था, उसके कारण जो कोई उन्हें देखता था, उसे उन्हें प्रणाम करनेके लिए विवश होकर आगे बढ़ना ही पड़ता था। जब दोनों आदमी बैठ गए, तब बाबू कामख्यानाथने जिज्ञासापूर्ण दृष्टिसे उनके मुखकी ओर देखा। ब्राह्मणके हाथमें हल्दीके रंगके लपेटे हुए दो कागज़ थे। बैठनेके समय उन्होंने वे दोनों कागज़ विस्तृत आसनपर एक ओर रख दिये थे। ज़मीन्दार महाशयके नीरव प्रश्नके उत्तरस्वरूप उन्होंने उन्हीं दोनों कागज़ोंकी ओर देखकर कहा,—मैंने जो कुछ अनुमान किया था, अब ठीक वही होता हुआ दिखलाई पड़ता है। लग्न स्थिर करनेके भ्रममें सारी जन्मपत्री ही ग़लत हो गई। जब लग्न ही ठीक नहीं था, तब मेरा जी नहीं चाहा कि जन्म-कुंडली और भाव-कुंडली बनाऊँ और ग्रहों तथा नक्षत्रोंके फलोंकी गणना करूँ। पर साथ ही मुझसे चुपचाप बैठा भी न रहा गया। निरंजनके जन्मस्थान और जन्मसमयका ठीक ठीक निर्धारण करके मैंने यह नई जन्मपत्री तैयार की है। इस जन्मपत्रीकी बातोंके साथ आपके लड़केके आकार प्रकार और स्वभाव आदिका बहुत कुछ मिलान मिलता है। खैर; इन सब बातोंको रहने दीजिए। आप इस बातका भय बिलकुल छोड़ दीजिए कि उसपर किसी प्रकारका अरिष्ट है। दीर्घ आयु देनेवाले लग्न और चन्द्रमामें ही निरंजनका जन्म हुआ है। मैं अभी आपको यह बात अच्छी तरह समझा देता हूँ कि जिस तरह यह पहली जन्मपत्री ठीक नहीं है, उसी प्रकार इसमें बतलाए हुए अरिष्ट भी बिलकुल मिथ्या हैं।

ज़मीन्दार महाशय स्तब्ध नेत्रोंसे ब्राह्मणकी ओर देखते रहे। जिन ब्राह्मण देवताके मुँहसे यह बातें निकलीं थीं, यद्यपि उनके प्रति बाबू कामाख्यानाथके मनमें एकान्त और अखंड विश्वास था और उनकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


सब बातोंको वे सत्य समझते थे, तथापि उनका मन मानों बहुत दिनोंके बँधे हुए संस्कारको एकदम छोड़नेके लिए तैयार नहीं होता था। इसी लिए ये सब बातें सुनकर भी बाबू कामाख्यानाथ विचलित नहीं हुए और स्थिर भावसे ब्राह्मण महोदयके मुखकी ओर देखते रहे। उनका बहुत दिनोंसे दुर्भावनाओंसे ग्रस्त और निराश मस्तिष्क इस अभावनीय संवादको इतने सहजमें धारण नहीं कर सकता था। ज्योतिरत्न महाशयने बाबू कामाख्यानाथके इस विमूढ़ भावका अर्थ समझ लिया और कहा—मुझे इस जन्मपत्रीमें सन् और तारीखके साथ आपके लड़केके जन्मस्थानका नाम लिखा हुआ नहीं मिला। क्या जन्मपत्री बनानेवाला यह नहीं जानता था अथवा आपने उससे नहीं कहा था कि इस बालकका जन्म बंगाल देशकी उत्तरी सीमा परके कूचबिहार राज्यमें हुआ था?

कामाख्यानाथने उत्तर दिया—यह तो मैं नहीं कह सकता, क्योंकि उस समय निरंजनके नाना जीते थे। उन्होंने निरंजनके जन्मके दो तीन बरस बाद किसी ज्योतिषीसे यह जन्मपत्री तैयार कराई थी।

ज्यो०—निरंजनके नाना कहाँ रहते थे?

का०—यहीं पासके एक गाँवमें। परन्तु पहले वे कूचबिहारमें रहा करते थे। निरंजनके जन्मके थोड़े ही दिनों बाद उन्होंने विदेशका रहना छोड़ दिया और बाल बच्चोंको लेकर अपने देशमें आकर रहने लगे। इसके बाद वे कहीं बाहर नहीं गये।

ज्यो०—तब तो प्रायः यही सम्भव है कि उन्होंने इसी देशके किसी पंडितसे यह जन्मपत्री तैयार कराई हो। जान पड़ता है कि वे ज्योतिषीको बालकका जन्मस्थान बतलाना भूल गए थे। अथवा उन्होंने यह सोचा हो कि जन्मस्थान बतलानेकी कोई विशेष आवश्यकता ही नहीं है।

का०—हाँ, यह हो सकता है। मैं उन दिनों छोटा था, बड़े बूढ़ोंके कामोंमें दखल नहीं दिया करता था। तो भी आपकी इस समयकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बातें सुनकर मुझे स्मरण आता है कि उन्होंने एक कागज़पर निरंजनके जन्मका सन्, तारीख और समय लिख रखा था। ज्योतिषीने उसीको देखकर जन्मपत्री बनाई होगी।

ज्योतिरत्नजीने बहुत गम्भीर होकर कहा—परन्तु ज्योतिष जाननेवाला हर एक पंडित समझता है कि इस दक्षिण बंगालमें कहीं कहीं एक राशिके लग्नमानमें दो तीन पलकी कमी वेशी हुआ करती है। जिन लोगोंको जन्मपत्री तैयार करनेके लिए पहले लग्न तक स्थिर करना पड़ता है, उन्हें सबसे पहले यह जान लेना चाहिए कि जातकका जन्म किस स्थानपर हुआ है। जन्मपत्री बनानेवालेकी इतनी बड़ी भूलसे बड़ा अनर्थ होता है। परन्तु यह भूल दोनों ओरसे हुई है। खैर; अब तो अपने अनुमानके लिए एक बहुत दृढ़ आधार मिल गया। जन्मपत्री बनानेवालेने जन्म-समयमें दक्षिण बंगालके लग्नमानके अनुसार मेष राशिमें लग्न स्थिर किया था। परन्तु बालकका जन्म यहाँसे बहुत दूर उत्तर बंगालमें हुआ था। वहाँके लग्नमानमें और यहाँके लग्नमानमें बहुत अन्तर है। यहाँसे चार पाँच पल पहले ही वहाँ वृष राशिका उदय हुआ होगा और जब इस प्रकार लग्न एक राशिसे दूसरे राशिमें चला गया, तब सारी जन्मपत्री ही व्यर्थ और निकम्मी हो गई।

अब मानो कामाख्यानाथकी समझमें सब बातें अच्छी तरह आ गईं। इस नवीन धारणाके साथ ही साथ मानो उनके मनमें एक नवीन आशाका संचार हुआ। उन्होंने कुछ व्यग्र स्वरमें कहा—आपने तो नया लग्न निरूपण करके ही न यह संक्षिप्त जन्मपत्री बनाई है?

ज्यो०—भला संक्षिप्त जन्मपत्री बनाकर मैं कैसे ला सकता था? शुभ ग्रहके दंडमें और अपापविद्ध स्थानमें इस लग्नकी स्थिति देखकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


और भावस्फुट गणनासे भावकुंडलीमें बलवान् चन्द्रमाको तुंग रूपमें लग्नस्थ देखकर निरंजनकी पूरी और बड़ी जन्मपत्री बनाकर ही मैं निश्चिन्त हुआ। जन्मपत्रीमें लग्न ही सब कुछ है। उसी लग्नमें अशुभ दर्शनके बदले ऐसा अचिन्तनीय शुभ संयोग देखकर ज्योतिषी मात्र आपसे आप समस्त जीवनका फलाफल जाननेके लिए व्यग्र हो उठता है।

का०—यही नहीं बल्कि मैं तो देखता हूँ कि जब आपने यह सुना था कि निरंजनको मारकेश पड़ा है, तब आप बहुत दुःखी थे और आपने केवल कुतूहलवश उसकी जन्मपत्री नहीं देखी थी।

ज्योतिरत्नने हँसते हुए कहा—यह तो ठीक ही है। परन्तु निरंजनका चेहरा देखकर भी मुझे यह विश्वास नहीं होता था कि वह अल्पायु है। बहुत दिनोंतक ज्योतिष-शास्त्र देखते देखते अनुमान-शास्त्रमें भी तो मेरा बहुत कुछ प्रवेश हो गया है न। लेकिन यह सब जानते और समझते हुए भी मुझे बहुत कुतूहल हुआ था। पहले निरंजनकी जन्म-पत्री देखनेके लिए मैंने जो इतना आग्रह किया था, उसका कारण यही था कि मैं बहुत सूक्ष्म भावसे अनुसन्धान करके यह जानना चाहता था कि किसी शुभ योगका आभास मिलता है या नहीं; और यदि आभास मिल जाय तो आपको कुछ आश्वासन दूँ। अब तो मेरा कहना केवल यही है कि मेरी तैयार की हुई यह जन्मपत्री आप एक बार किसी अच्छे और प्रसिद्ध ज्योतिषीको दिखला लें। शायद मुझसे भी कोई भूल हो गई हो।

कामाख्यानाथने रोककर कहा—अब फिर ऐसा आदेश मत कीजि-एगा। निरंजनकी जन्मपत्री जबसे तैयार हुई है, तबसे इधर सत्रह वर्षमें वह कई बड़े बड़े ज्योतिषियोंको दिखलाई जा चुकी है। सब लोगोंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जन्मपत्री देखकर बराबर अरिष्ट ही बतलाया; और यह अरिष्ट दूर करनेके लिए बहुतसे होम, जप और स्वस्त्ययन आदि भी हो चुके हैं। परन्तु किसीने आपकी तरह सन्देह करके लग्न स्थिर करनेके सम्बन्धमें इस बातपर विचार नहीं किया और न जन्मस्थानके नामका ही कोई जिक्र किया। सभी लोग बस जन्मपत्रीमें लिखे लग्नको ही मानकर चलते रहे हैं। आज जब आपने दूसरे विधाता पुरुषकी भाँति निरंजनके जीवनके सम्बन्धमें नया सांकेतिक प्रकाश दिखलाया है, तब मैं यह नहीं चाहता कि एक और नया सन्देह खड़ा करके यह प्रकाश बुझा दूँ। यह बात नहीं है कि मैं बिलकुल अन्ध भावसे ज्योतिषपर विश्वास रखता हूँ। मैं यह जानता हूँ कि मनुष्यके सब प्रकारके ज्ञान और बुद्धि-कौशलके ऊपर एक महा नियन्ताकी उँगली ही सदा विजय प्राप्त करती है। चारों ओरसे पूरी पूरी निराशा होनेपर भी मैं उसी नियन्त्रण करनेवाली शक्तिपर निर्भर रहकर अपना कर्तव्य करता आ रहा हूँ। अब आपकी बातोंसे मुझमें नई आशाका संचार हुआ है और मैं अपने आपको उसी विधिके विधानपर छोड़ देता हूँ। यद्यपि मैं बराबर यही समझता था कि निरंजनकी आयु अधिक नहीं है, तो भी उसकी प्रबल ज्ञान-तृष्णा देखकर मैंने उसे पढ़ाने लिखानेमें न तो कभी कोई कसर की और न उसमें बाधा दी। आप तो देखते ही हैं कि सिर्फ पढ़ाई लिखाईके लिए ही वह प्रायः यहाँ न रहकर शहरमें रहा करता है। आजतक मैंने कभी यह नहीं सोचा कि यह जितने दिन है, मेरे पास ही रहे। अरिष्टके भयसे मैंने उसकी पढ़ाई लिखाईमें कभी बाधा नहीं दी।

ज्योतिरत्न महाशयने उन दोनों जन्मपत्रियोंमेंसे एक जन्मपत्री हाथमें उठा ली और धीमे स्वरमें कहना आरम्भ किया—चौथे भावमें जो केन्द्रगत बलवान् बुध है, उससे यही निर्दिष्ट होता है कि इस बालकमें विद्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


और पांडित्य बहुत अधिक होगा। दशमस्थ तुंगी ग्रह भी बालकके बहुत अधिक सौभाग्यका सूचक है। बालकका जन्म ऐसे लग्न और चन्द्रमामें हुआ है कि उसकी आयु बहुत अधिक होगी। तनु भावस्थ बृहस्पति, केन्द्रवर्ती तुंगी आत्मकारक और शुभभावस्थ रवि भी इस दीर्घायु योगमें सहायक हो रहे हैं। यह बालक अल्पायु हो ही नहीं सकता।

कामाख्यानाथने झुककर ज्योतिरत्नके चरण छूए और कहा—आप उसे आशीर्वाद दीजिए जिसमें आपकी यह शुभ कामना सफल हो। अब इससे और अधिक कोई बात जाननेकी मुझे कोई आवश्यकता नहीं है। वह बहुत ही छोटा था, जब कि उसकी माताका देहान्त हो गया; इसी लिए—।

ज्योतिरत्न महाशयने बीचमें ही रोककर कहा—यह तो उसकी जन्मपत्रीसे ही सिद्ध होता है कि उसे माताका बहुत ही कम सुख है। चतुर्थदर्शी मंगलकी अन्तर्दशामें ही माताकी मृत्यु हुई है। पर इस जन्मपत्रीमें सामान्य कष्टके अतिरिक्त मुझे और कोई बात दिखाई नहीं देती।

कामा०—हो सकता है। परन्तु इन सब विषयोंमें मेरी जो धारणा थी, वह मैंने आपसे कह दी। मैं बहुत दिनोंसे सुनता आ रहा हूँ कि मेरी जन्मपत्रीमें लिखा है कि अन्तिम अवस्थामें मैं भग्नहृदय और नष्ट-संज्ञ हो जाऊँगा। इसी लिए मैं सोचता था कि कहीं निरंजनके कारण ही मुझे यह कष्ट न हो। पर आज जो मैं अपनी इस धारणाका परित्याग करता हूँ, वह केवल आपका ही अनुग्रह है।

ज्योतिरत्न महाशय कुछ देर तक चुपचाप रहकर कामाख्यानाथके प्रशान्त और गम्भीर मुखकी ओर देखते रहे। फिर उन्होंने मृदु स्वरमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा—क्या आपकी अन्तिम अवस्था इस प्रकार बीतेगी? यह तो बड़े आश्चर्यकी बात है! लेकिन निरंजनके पितृ-स्थानमें मुझे तो कोई ऐसी बात दिखाई नहीं देती। पर मुझे पहलेसे इस विषयमें किसी प्रकारकी शंका भी नहीं थी; इसी लिए मैंने इस बातकी अच्छी तरह जाँच नहीं की।

इतना कहकर ज्योतिरत्न महाशय दूसरी बड़ी जन्मपत्री खोलने लगे; परन्तु कामाख्यानाथने उन्हें बीचमें ही रोककर कहा—नहीं, अब आप इसके लिए व्यर्थ कष्ट न करें, अब इस विषयमें मेरे मनमें जरा भी कुतूहल नहीं रह गया है। संसारमें एक लड़का और एक लड़की बस यही दोनों मेरे अवलम्बन हैं। लड़कीके भाग्यमें जो कुछ लिखा था, वह तो भगवानने मुझे उसकी अवस्थाके बारहवें वर्षमें ही बतला दिया था। केवल निरंजनके अरिष्टका मुझे ध्यान रहता था। पर फिर भी मैं यही कहा करता था कि यद्भाव्यं तद्भवतु भगवन् पूर्वकर्मानुरूपं। जिसे अपनी सन्तानके सम्बन्धमें ही इतनी अधिक चिन्ताएँ करनी पड़ती हों, वह स्वयं अपने लिए किसी प्रकारकी चिन्ता कर ही नहीं सकता। परन्तु आशामें भी एक बहुत बड़ा दोष है। आज आपने जिस प्रकारकी दक्षतासे निरंजनकी जन्मपत्रीके फलमें परिवर्तन कर दिया है, उसने मेरे मनमें इस प्रकार अलक्षित रूपसे आशाका संचार कर दिया है कि अब मैं सोचता हूँ कि यदि रमाके विवाहके समय आप इस गाँवमें आए होते, तो मैं उसे कभी ऐसे अल्पायु पात्रको न सौंपता। आप मेरी लड़की रमाका हाल जानते हैं?

ज्यो०—कात्यायिनीसे मैं उसका नाम तो बराबर सुना करता हूँ। भला इस गाँवमें कौन ऐसा होगा जो आपके बाल बच्चोंको न जानता हो! और फिर दीन दरिद्रोंमें तो एक भी ऐसा न होगा जो उन्हें न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


जानता हो । आत्मा वै जायते पुत्रः । आखिर तो वे आपकी ही सन्तान हैं। पन्द्रह सोलह वर्षकी लड़कीमें इतनी दया माया और इतनी देव-भक्ति; ऐसी बातें तो मैंने बस पुराणों आदिमें ही पढ़ी थीं ।

कामाख्यानाथने ठंढी साँस लेते हुए कहा—स्नेहके कारण अन्धे होकर लोग इस प्रकारकी न जानें कितनी ही असार जल्पनाएँ किया करते हैं। वे अपने मनमें इस बातका तो कभी विश्वास ही नहीं करना चाहते कि जो कुछ शुभ और जो कुछ श्रेयः होता है, वही उस नियन्ताके हाथसे इस संसारमें उतर आता है। इसी लिए मुझे कभी कभी ऐसी भ्रान्ति होती है कि भगवान्‌के चरणमें जो फूल उत्सर्ग किया जाता है, वह भी नष्ट होता है। ज्योतिरत्न महाशय, मैं अपनी इस कन्याका हाल आपको क्या बतलाऊँ—इतना कहते कहते कामाख्यानाथकी आँखोंमें स्नेहके कारण जल भर आया ।

ज्योतिरत्नने सहानुभूतिपूर्वक उत्तर दिया—कामाख्यानाथजी, कात्यायनीके मुँहसे मैं सभी बातें सुन चुका हूँ । महेन्द्रसे निरंजनका हाल भी सुना है। वे लोग आपके लड़के और लड़कीके गुणोंपर बहुत ही मुग्ध हैं।

कामाख्यानाथने सम्मानपूर्वक कहा—आप जो मुझपर बिना किसी हेतुके ही इतना अधिक स्नेह रखते हैं, वही इसका एक मात्र कारण है। अभी आपको इस गाँवमें आए थोड़े ही दिन हुए हैं। परन्तु इन थोड़े दिनोंके परिचयसे ही मुझे मानो ऐसा जान पड़ने लगा है कि स्वर्गसे मेरे पितृदेव लौट आए हैं। मेरी प्रत्येक चिन्ता और प्रत्येक मानसिक कष्टके कारण आप सदा जिस प्रकार व्यग्र रहते हैं, उसी प्रकार उसके प्रतिकारके लिए भी व्यस्त रहते हैं। आपके परिवारके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोगोंके साथ मेरे पुत्र और कन्याका जो स्नेह-बन्धन है, उसे मैं अपने लड़के और लड़कीके लिए बहुत बड़े सौभाग्यकी बात समझता हूँ। इन थोड़े दिनोंमें ही आपके परिवारके लोगोंने अपने आपको गाँव भरके लोगोंकी श्रद्धाका भाजन बना लिया है। जो हो, पर मैं एक बातकी ओर आपका ध्यान दिला देना चाहता हूँ कि आप मुझे सदाके लिए एक प्रकारसे स्नेह और अभय दान देकर भी धर्मके सामने पतित कर रहे हैं।

ज्यो०—हैं! यह आप क्या कहते हैं! आप सरीखे स्वभावसे ही धार्मिक पुरुषको मैं अधर्ममें प्रवृत्त करता हूँ?

कामाख्यानाथने बहुत ही विनीत भावसे कहा—आप मुझे 'तुम' कहकर सम्बोधन किया करें।

ज्योतिरत्न महाशयने हँसते हुए कहा—अच्छा ऐसा ही सही। लेकिन अभी तुमने जो बात कही थी, उसका क्या अर्थ?

कामा०—मैंने कई बार मनमें विचार किया कि वह बात आपसे कहूँ, पर मुझे साहस नहीं होता था। धीरे धीरे आपके स्नेहका इतना परिचय पाकर आज मुझे कहनेका साहस हुआ है। आप मुझपर पुत्र-तुल्य स्नेह रखते हैं। मैं भी आपकी ही जाति और श्रेणीका हूँ; लेकिन फिर भी आप मुझे अपने गंगा तीरके निवासके लिए मालगुजारी लेनेके लिए बाध्य करते हैं। जिस स्थानसे कर लेनेका शास्त्रोंमें निषेध है, उस देवमन्दिरके पासकी और गंगातटकी देवभूमिकी मालगुजारी भी मुझे चुपचाप लेनी पड़ती है। और फिर इसमें आपत्ति करनेका भी मुझे साहस नहीं होता।

ज्योतिरत्न महाशयने स्नेहपूर्वक और हँसते हुए कहा—कामाख्यानाथ, तुम तो शास्त्रोंकी बातोंसे भली भाँति अवगत हो। तुम मेरा पितृतुल्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


सम्मान करते हो। उसी अधिकारसे मैं भी तुम्हारे साथ यथेष्ट दौरात्म्यका व्यवहार करता हूँ।

कामा०—यदि यह बात छोड़ दी जाय, तो भी आज तक मुझे कोई ऐसा सुयोग नहीं मिला, जिससे मैं आपके प्रति अपनी थोड़ी बहुत श्रद्धा भक्ति भी प्रकट करके कृतार्थ होता।

ज्यो०—भला यह तो बतलाओ कि तुम्हारी यह श्रद्धा मेरे लिए जितना अधिक मूल्य रखती है, उतना अधिक मूल्य और भी कोई चीज रखती है? और फिर तुम तो मुझे नित्य ही सब कुछ दिया करते हो। इससे अधिक तुम अपनी और श्रद्धा क्या और कैसे प्रकट करोगे? अनाथों और दरिद्रोंकी बात जाने दो, तुम तो सदा सहायताकी प्रार्थना करनेवाले और आर्थिक कामनासे रहित ब्राह्मणोंको अजस्र दान दिया करते हो। उन ब्राह्मणोंमेंसे मेरे जैसे अप्रसिद्ध और अज्ञात ब्राह्मणने जितना कुछ पाया है, उतना क्या और किसीने भी पाया है? इसीलिए मैं कहता हूँ कि एक मिथ्या क्षोभसे अपना मन व्यर्थ दुखी मत करो।

थोड़ी देर तक कामाख्यानाथ बिलकुल चुप रहे। सहसा मानो उन्हें कोई बात याद आ गई और उन्होंने व्यग्र भावसे कहा—लेकिन आपने अपने भावी जामाता महेन्द्रकी लिखाई पढ़ाईके विषयमें—

ज्योतिरत्न महाशय मानो यह बात नहीं सुनना चाहते थे। उन्होंने सिर हिला कर और कुछ उत्तेजित होकर कामाख्यानाथको बीचमें ही रोककर कहा—महेन्द्र मेरा भावी जामाता नहीं है, वह मेरा पुत्र है, पालित पुत्र है। क्या यह बात तुम्हें नहीं मालूम?

कामा०—जी हाँ, यह तो मैं जानता हूँ। परन्तु कुछ लोग यह भी कहते हैं कि आपने एक उपयुक्त वर अपने घरमें ही रख लिया है;

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और इसी लिए कन्याकी अवस्था अधिक हो जानेपर भी आप उसके विवाहके लिए किसी प्रकारका प्रयत्न नहीं करते।

ज्यो०—नहीं कामाख्यानाथ, महेन्द्र अनाथ है; इसी लिए मैं उसे बहुत दिनोंसे अपने पास रखे हुए हूँ। मेरे घरमें बहुत दिनों तक कोई सन्तान नहीं हुई थी, इसी लिए मेरी स्त्रीने उसे अपने पास रखकर पुत्रके समान पाला था। कात्यायनी हम लोगोंकी अन्तिम अवस्थाकी सन्तान है। ब्राह्मणी महेन्द्रको अपने पुत्रसे भी बढ़कर समझती है; इसी लिए उसके मुँहसे लोग इस प्रकारकी बातें सुनकर यह अनुमान करते हैं कि मैं अपनी कन्याका विवाह भी उसीके साथ करूँगा।

कामा०—यदि ऐसा हो भी जाय, तो मेरी समझमें बहुत अच्छा है। मैंने महेन्द्रको देखा है। देखने सुननेमें भी वह बहुत सुन्दर है। उसके स्वभाव और विद्या-बुद्धिके सम्बन्धमें मैंने जो कुछ सुना है—

ज्यो०—कामाख्यानाथ, यह ठीक है कि रूप और गुण आदि सभी बातोंके विचारसे कात्यायनीके लिए महेन्द्र बहुत उपयुक्त पात्र है, परन्तु फिर भी यह विवाह किसी प्रकार नहीं हो सकता। यदि यह विवाह हो सकता होता, तो क्या सत्रह वर्षकी अवस्था तक कात्यायनी अविवाहित रहती? यह सम्बन्ध किसी प्रकार हो नहीं सकता।

इतना कहते कहते ज्योतिरत्न महाशयने एक साँस ले ली।

कामाख्यानाथ जो बात कहना चाहते थे, प्रसंगवश उसके लिए बहुत अच्छा अवसर हाथ आ गया था। परन्तु जब उनकी वह बात इस प्रकार कट गई, तब वे कुछ दुखी हुए और फिरसे वह अवसर प्राप्त करनेकी चेष्टा करते हुए उन्होंने कुछ कुंठित भावसे कहा—क्या मैं आपसे यह पूछ सकता हूँ कि इस सम्बन्धमें कौनसी बात बाधक हुई? आप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


मुझे अपने पुत्रके समान समझते हैं, इसी लिए मुझे आपसे यह प्रश्न करनेका साहस हुआ है ।

ज्यो०—नहीं, इसमें कुंठित होनेकी कोई बात नहीं है। बात यह है कि मेरी कन्याके गण, राशि और वर्ण आदि अत्यन्त उच्च हैं। उसके लिए उपयुक्त पात्र ढूँढ़नेके विचारसे इधर छः सात वर्षोंमें मैंने बहुतसे लड़कोंकी कुंडलियाँ देखी हैं, पर आजतक मुझे उसके लिए एक भी उपयुक्त वर नहीं मिला । साधारण लड़कोंकी कुंडलियोंसे मेरी लड़कीकी कुंडली किसी तरह मिलती ही नहीं । जबतक उसे कोई उपयुक्त पति न मिलेगा, तबतक शुभ लग्नस्थ बृहस्पतिकी सप्तमपर पड़नेवाली पूर्ण दृष्टिका सारा फल ही वृथा हो जायगा । जिस ज्योतिषशास्त्रके साक्षी ये सूर्य और चन्द्रमा हैं, वह क्या झूठा हो जायगा ?

कामाख्यानाथने कुछ विस्मित होकर कहा—सचमुच यह तो बड़े आश्चर्यकी बात है । आपने अबतक इतने पात्रोंकी कुंडलियाँ देखीं, पर आपको अपनी कन्याके लिए एक भी उपयुक्त वर न मिला ?

ज्यो०—हाँ हुई तो कुछ ऐसी ही बात है । जो थोड़ेसे सुपात्र वर मुझे मिले भी, उनमेंसे कोई हीन वर्ण था और कोई हीन गणराशिवाला । कहीं चन्द्रमा, नक्षत्र, ग्रह और तारा आदि प्रतिकूल पड़ते थे, कहीं अरिष्टषडक, विषम सप्तक और अरिद्विद्वादश आदि दोष पड़ते थे । ये सब दोष बिलकुल ही त्याज्य हैं । और फिर जिन लड़कोंकी कुंडलियोंमें ये सब दोष नहीं थे और जो ज्योतिषशास्त्रकी दृष्टिसे उपयुक्त थे, वे प्रायः अयोग्य और कुपात्र थे । और कुपात्रके हाथमें कन्याको सौंपनेकी अपेक्षा उसे अविवाहित रखना सौ गुना अच्छा है ।

कामा०—आप सरीखे बड़ों और समझदारोंके लिए यह बात बहुत ही उपयुक्त है; पर साथ ही आपको समाजकी बात भी कुछ विचार कर लेना चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ज्यो०—मैं इस प्रकारकी बातोंसे नहीं डरता । हम लोग ठहरे मुख्य कुलीन । अच्छा घर वर न मिलनेके कारण मेरी एक बूआ आजन्म कुमारी ही रही थीं । समाज हम लोगोंकी जाति नष्ट करनेकी शक्ति नहीं रखता ।

कामा०—तो क्या फिर आपकी यही इच्छा है कि कन्याका विवाह ही न हो ?

ज्यो०—भला यह कभी हो सकता है ! क्या अपनी गौरी समान कन्याके लिए शिवके समान उपयुक्त वर मिलनेके लिए मैं दिन रात ईश्वरसे प्रार्थना नहीं किया करता ? व्यर्थ बहुतसी जन्म कुंडलियोंको देखते देखते अन्तमें मैंने अपने मनके अनुसार एक कल्पित कुंडली तैयार की है। अब मैं किसी पात्रकी जन्मकुंडली देखते ही उसके लग्न और ग्रहोंको देखते ही यह समझ लेता हूँ कि यह मेरी कन्याके लिए उपयुक्त है या नहीं । जबसे मैंने कात्यायनीके विवाहके लिए उपयुक्त वरके गण, राशि, वर्ण, नक्षत्र, चन्द्र और तारा आदिका हिसाब करके अपने मनसे कल्पित जन्मपत्री तैयार कर ली है, तबसे मैं व्यर्थ कष्ट नहीं करता । नई जन्मपत्री हाथमें आते ही मैं तुरन्त समझ लेता हूँ कि यह वर कात्यायनीके लिए उपयुक्त नहीं है। मेरी कल्पित जन्मपत्री सदा मेरी आँखोंके सामने बनी रहती है ।

कुछ देर तक चुप रहनेके बाद कामाख्यानाथने कहा—आपके सामने कुछ कहना तो धृष्टता ही है, तो भी स्नेहके अधिकारसे मैं कुछ कहना चाहता हूँ । जिस अदृष्ट या विधिके विधानके अनेक अकल्पित और अचिन्त्य रहस्य नित्य इस संसारमें देखनेमें आते हैं और जिनके कारण-सूत्रोंका आज तक कोई शास्त्र निश्चित रूपसे पता नहीं लगा सका, क्या उस अदृष्ट या विधि-विधान नामक विश्वनियन्ताकी बातोंको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


अच्छी तरह समझनेकी इस क्षुद्र मनुष्यमें शक्ति है? यह बात कभी मनुष्यकी धारणामें आ ही नहीं सकती कि वह विश्वनियन्ता किस जगह मनुष्यको क्या दिखलाता है, क्या समझाता है और अन्तमें किस अपूर्व रूपसे उसका फल उसी विधिके विधानमें ही मिला देता है। यदि आप इसे मेरा अपराध न समझें, तो मैं कहूँगा कि यदि व्यर्थ इतना न भटककर आप अपनी समझसे किसी योग्य वरको कन्याका हाथ पकड़ा देते, तो विधिका विधान भी समान रूपसे पालित होता; और जो आपको यह मानसिक अशान्ति तथा उद्विग्नता हो रही है, उससे भी आप बचे रहते।

ज्योतिरत्नने ठंढी साँस लेते हुए कहा—तुम जो कुछ कहते हो, वह है तो ठीक; लेकिन बहुत दिनोंसे मेरा जो संस्कार चला आ रहा है, उसके कारण अब मैं इस मार्गसे हट भी तो नहीं सकता। अब तो मुझे सदा इसी पथपर चलना पड़ेगा। मैंने जो अपनी कल्पित कुंडलीकी बात तुम्हें सुनाई है, उसके कारण शायद तुम यह समझते होगे कि मेरा दिमाग फिर गया है। और बात भी कुछ कुछ यही है कि उसके विवाहकी चिन्ता करते करते और अनेक जन्मपत्रियाँ देखते देखते हताश होनेके कारण मैं विभ्रान्त हो गया हूँ। सम्भव है कि शुक्रकी वक्रताके कारण कात्यायनीका विवाह ही न हो, किन्तु बृहस्पतिके सुसंयोगकी आशा भी मैं कभी छोड़ न सकूँगा। यदि उपयुक्त पात्र न मिलनेके कारण कात्यायनीका विवाह न हो, तो इसके लिए मैं दुखी नहीं होऊँगा। कामाख्यानाथ, तुम अपने मनमें कभी यह न समझना कि इस सर्वशुद्धा गौरीके समान कन्याकी इस उच्चांगकी कुंडलीके कारण मैं कुछ विपद्ग्रस्त हूँ। मेरा तो यह विश्वास है कि बड़े पुण्यसे मैंने ऐसी कन्या पाई है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामाख्यानाथने कुछ अस्पष्ट स्वरमें कहा—भगवानकी लीला ! और तब स्पष्ट स्वरमें कहा—परन्तु आपने महेन्द्रके विषयमें तो कुछ कहा ही नहीं। उसके—

ज्यो०—महेन्द्रकी बात छोड़ दो। उसकी जन्मकुंडलीकी बात तो मैं किसी प्रकार भूल ही नहीं सकता।

कामा०—मैं उसके विवाहकी बात नहीं कहता। मैं तो केवल यह जानना चाहता हूँ कि आपने उसे इस अवस्थामें भी अपने घरमें क्यों रख छोड़ा है ?

ज्योतिरत्न महाशय अब अपने मस्तिष्कको प्रकृतिस्थ करनेका प्रयत्न करने लगे। कन्याके विवाहके सम्बन्धमें बातें करते करते मानो वे बाह्य ज्ञानसे रहित हो गए थे। अब दूसरा प्रसंग छिड़नेपर उन्होंने अपने मनको स्थिर और शान्त करते हुए कहा—ओः—हाँ महेन्द्रको ! जबसे हम लोग इस गाँवमें आए हैं, तबसे उसकी पढ़ाई लिखाईकी कोई ठीक व्यवस्था नहीं हो सकी है।

कामा०—निरंजनसे उसकी विद्या और बुद्धिके सम्बन्धमें मैंने जो कुछ सुना है, उससे तो मैं समझता हूँ कि यदि उसे शहरमें रखकर पढ़ाया लिखाया जाय, तो वह थोड़े ही समयमें बहुत अधिक उन्नति कर सकता है।

ज्यो०—मैंने उसे कई बरस तक पढ़नेके लिए शहरमें रक्खा था; पर मेरी स्त्रीको इससे बहुत दुःख और कष्ट होता था। वह चाहती है कि महेन्द्रने मुझसे जो कुछ सीख लिया है, वही उसके लिए बहुत है। वह भी आगे चलकर मेरे ही समान ब्राह्मण पंडित बनकर जीविका निर्वाह करे। इसीलिए विवश होकर साल भरसे लिखना पढ़ना छुड़ाकर अपने पास बुला लिया है; और अब मैं स्वयं ही उसे ज्योतिष पढ़ाया करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कामा०—आप तो मेरी अपेक्षा यह बात बहुत अच्छी तरह जानते ही होंगे कि जब तक मनुष्यको देश कालके उपयुक्त विद्या न आवे, तब तक उसकी यथेष्ट उन्नति नहीं होती और वे तो स्त्री ठहरीं, वे तो जिसे सन्तानके तुल्य समझतीं हैं, उसके लिए विशेष कातर होंगी ही । परन्तु यदि उन्हें अच्छी तरह यह बात बतला दी जाय कि इसमें सन्तानकी क्या और कितनी हानि है, तो वे बड़ी प्रसन्नतासे यह कष्ट सहनेके लिए तैयार हो जायँगी ।

ज्यो०—यह ठीक है; पर इसमें एक बात और है । पर उसे जाने दो । मैं तो उसका बिलकुल ही विरोधी हूँ । मैं भी यह चाहता हूँ कि महेन्द्र हम लोगोंसे दूर ही रहा करे । लेकिन जबसे मैं इस गाँवमें आया हूँ, तबसे उसे शहर भेजनेका मुझे सुभीता ही नहीं हुआ ।

कामाख्यानाथने हाथ जोड़ कर कहा—मेरी एक भिक्षा है । यदि आप मेरी यह प्रार्थना स्वीकृत न करेंगे, तो मैं समझूँगा कि आप मुझ-पर नितान्त ही अवकृपा रखते हैं ।

ज्योतिरत्नने थोड़ी देर तक कामाख्यानाथके मुँहकी ओर देखनेके उपरान्त कहा—मैं समझता हूँ कि तुम क्या चाहते हो । परन्तु सुनो कामाख्यानाथ, यद्यपि वह अवस्थामें निरंजनसे तीन चार बरस बड़ा है, तथापि विद्याके विचारसे वह अभी उसका संगी होनेके योग्य नहीं है । बाल्यावस्थामें मैंने उसे कुछ बँगला और संस्कृत की शिक्षा दी थी । वह अच्छी तरह फारसी भी जानता है । परन्तु राजभाषाके ज्ञानमें वह निरंजनके समान नहीं है ।

कामा०—आप क्या कह रहे हैं ! उसका संस्कृत और फारसीका ज्ञान निरंजनकी अपेक्षा बहुत अधिक है । उसके सरीखा संगी पाकर

 CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निरंजन धन्य होगा । मैं उसकी जैसी प्रतिभायुक्त मुखश्री देखता हूँ और उसकी बुद्धिमत्ताके सम्बन्धमें जो बातें सुनता हूँ उससे मैं समझता हूँ कि अँगरेजीमें भी निरंजनके समान योग्यता प्राप्त करनेमें उसे अधिक बिलम्ब न लगेगा। बस अब आप इस सम्बन्धमें अपनी स्वीकृति देकर ही मुझे कृतार्थ करें ।

पहले तो कुछ देर तक ज्योतिरत्न महाशय चुपचाप रहे फिर ठंढी साँस लेकर मानो आपही आप कहने लगे—न जाने क्यों मुझे पौरुष इसप्रकार भूल गया है । मैं क्यों दिनपर दिन इतना निराश होता जाता हूँ। नहीं कामाख्यानाथ, मैं ऐसा सुयोग हाथसे न जाने दूँगा । मैं उसे तुम लोगों सरीखे देव-सहवासमें ही रक्खूँगा। मैंने सुना है कि भाग्यदेवी भी कभी कभी पौरुषके आगे हार मान बैठती हैं। लेकिन सुनो कामाख्यानाथ, तुम्हें मेरी एक बात माननी पड़ेगी । तुमसे मैंने जो जमीन लगानपर ली है, उसका आधा उपस्वत्व भी तुम्हें महेन्द्रके लिए लेना होगा । तुम यदि मेरी यह बात मान कर और उसके मंगल तथा उन्नतिकी कामना करके उसे अपने पास रखना चाहो, तो ऐसा हो सकता है ।

कामाख्यानाथ कुछ दुःखितसे होकर थोड़ी देर तक चुप रहे। ज्योतिरत्नने फिर कोमल स्वरसे कहा—मुझपर तुम्हारी जैसी श्रद्धा है, उसीके जोरपर मैं तुमसे यह अनुरोध कर रहा हूँ । यदि तुम मेरा इतना सम्मान न करते होते, तो क्या मैं तुमसे यह बात कहनेका साहस कर सकता था ! यह तो तुम जानते ही हो कि मेरी आवश्यकताएँ बहुत ही कम हैं । मैं जो तुमसे अपने लिए वृथा व्यय कराऊँ, उससे अच्छा यही है कि उससे किसी वास्तविक अभावग्रस्त व्यक्तिका यथेष्ट उपकार हो । तुम्हारे लिए यही तो एक काम है नहीं; तुम तो इस प्रकारके नित्य बहुतसे काम किया करते हो । तुम्हारे द्वारा नित्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ही बहुतसे लोगोंका अभाव दूर हुआ करता है । मेरे सहमत न होनेका मुख्य कारण केवल यही है कि यद्यपि ब्राह्मणीने महेन्द्रको अपने गर्भसे नहीं उत्पन्न किया है, तथापि वह उसे अपने पुत्रसे बढ़कर चाहती है । एक तो उसकी इच्छा होनेपर भी मैं महेन्द्रके साथ कात्यायनीका विवाह नहीं कर रहा हूँ । तिसपर यदि मैं उसे दूसरेकी सहायतापर छोड़ दूँ, तो उसे बहुत अधिक मानसिक कष्ट होगा । साथ ही महेन्द्रको भी दुःख होगा । और यदि इन सब बातोंको जाने दिया जाय, तो भी सबसे बड़ी बात यह है कि मुझे ऐसा काम कदापि न करना चाहिए । हमारे घरमें पुत्रकी जगह वही महेन्द्र है । यदि इन सब बातोंको खूब अच्छी तरह समझ बूझकर तुम उसे अपनी पुत्रके साथ रखना चाहोगे, तो मैं समझूँगा कि तुम उसके शुभचिन्तक हो—दैवनियोजित महापुरुष हो । बतलाओ, यह बात तुम्हें मंजूर है ?

ज्योतिरत्नके इस कथनका कामाख्यानाथ प्रतिवाद भी नहीं कर सकते थे और असम्मति भी नहीं प्रकट कर सकते थे । उन्होंने सिर झुकाकर केवल यही कहा—मेरे लिए आपकी इच्छा ही सबसे बढ़कर है । आप जैसी आज्ञा देंगे वैसा ही होगा । परन्तु आप मुझे इतना पराया समझते हैं, इसका मुझे बहुत दुःख—

ज्योतिरत्नने उन्हें बीचमें ही रोककर कहा—अभिमान मत करना । कामाख्यानाथ, अभी तुम यह नहीं जानते हो कि आज मैं तुमसे कितनी बड़ी सहायता लेता हूँ और अपने सिर कितना बड़ा एहसान लेता हूँ । क्या तुच्छ आर्थिक सहायता ही संसारमें सबसे बढ़कर है ? जिस महेन्द्रको मैं अपने पुत्रसे भी बढ़कर समझता हूँ, उसे तुम्हारे आश्रयमें देकर मेरे मनमें कितनी बड़ी बड़ी आशाएँ उत्पन्न हुई हैं, यह तुम नहीं जानते ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कामा०—आप ऐसी बातें क्यों कहते हैं? क्या उसकी जन्मपत्रीके सम्बन्धमें भी आपके मनमें किसी प्रकारकी चिन्ता या अशान्ति है? इसके सिवा और तो मुझे कोई ऐसी बात नहीं मालूम होती जिसके कारण आपको महेन्द्रके सम्बन्धमें इतनी चिन्ता हो।

ज्यो०—तुम जो अनुमान करते हो, वह बहुत ठीक है। परन्तु अब इन सब बातोंको जाने दो। हाँ, मैं जरा एक बार तुम्हारी भी जन्मपत्री देखना चाहता हूँ। तुम कहते हो कि तुम्हें अपनी अन्तिम अवस्थामें भग्नहृदय होना पड़ेगा। तो जब तक मैं इसका कारण न समझ लूँ, तब तक मुझे चैन नहीं पड़ सकता।

कामाख्यानाथने कुछ दुखी होकर क्षोभकी हँसी हँसते हुए कहा—क्षमा कीजिए। इन सब बातोंको जाने दीजिए, और कोई बात छेड़िए। जिसे लोग अदृष्ट कहते हैं उसे देखने या जाननेके लिए आप इतने उतावले न हों। एक बात आप सदाके लिए बिलकुल ही भूल जाए। नियतिः केन बाध्यते।

ज्यो०—कामाख्यानाथ, अब मन किसी और तरफ नहीं लग सकता। यह ज्योतिष मुझपर भूतकी तरह सवार है। मैं सच कहता हूँ, आज तुमने अन्तर्यामीकी तरह मेरे मनकी बात दोहराकर कही है। मुझे तो डर है कि यह ज्योतिष शास्त्रकी इतनी अधिक आलोचना कहीं मुझे अन्तमें पागल न कर दे। यही नहीं, कन्याके विवाहके सम्बन्धमें भी बहुत अधिक जन्मपत्रियोंको देखनेके कारण कुछ लोग सन्देह कर सकते हैं कि कन्या ही कुलक्षण है अथवा उसका वैधव्य योग है। इसी लिए जल्दी कोई पात्र भी उसके लिए तैयार नहीं होता। मैं समझता हूँ कि ज्योतिषका आवश्यकतासे इतना अधिक विचार करनेके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


कारण ही मेरे चारों ओर इतने दिनोंसे अशान्तिकी यह आग धधक रही है। फिर भी चाहे जो हो, मैं अपने इस विचारसे पीछे नहीं हट सकता। इस भूतका ऐसा ही विलक्षण प्रभाव है। इसी लिए मैं तुम्हारी भी जन्मपत्री देखना चाहता हूँ।

कामा०—अच्छी बात है, तो फिर देख लीजिए। परन्तु इसके लिए कोई विशेष परिश्रम न कीजिएगा। इसके सत्य और मिथ्याके निराकरणके लिए व्यर्थ कष्ट मत उठाइएगा।

ज्यो०—अच्छी बात है। ऐसा ही सही। परन्तु कठिनता तो यह है कि मुझे इस बातपर विश्वास ही नहीं होता। तुम्हारे जैसे सज्जनका यदि ऐसा परिणाम हो तो फिर—

कामा०—फिर आप वही बात कहते हैं।

इतना कहकर कामाख्यानाथ अपने स्थानपरसे उठे और उन्होंने पासकी एक अलमारी खोली और उसमेंसे हल्दीके रंगकी वैसी ही जन्मपत्री निकाली और ज्योतिरत्नके हाथमें देकर हँसते हुए कहा—यदि आदमी अच्छी तरह यह बात समझ ले कि हमारी समस्त चेष्टाओं और समस्त विद्या बुद्धिसे कहीं बढ़कर बलवती उस परमात्माकी इच्छा है, तो फिर उसके इस प्रकार विद्रोही होनेकी आशंका नहीं रह जाती। उस दशामें यदि उसके जीवनमें किसी प्रकारका दुःख उपस्थित होता है, तो भी दुःखसे भी अधिक दुःख देनेवाली अशान्ति उसके मनमें प्रवेश नहीं कर सकती।

परन्तु ज्योतिरत्नने कामाख्यानाथकी इस बातकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया और वे व्यग्रभावसे वह जन्मपत्री खोलकर उसपर झुक पड़े। कामाख्यानाथ कुछ देर तक चुपचाप सिर झुकाए बैठे रहे। इसके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


बाद जब उन्होंने ज्योतिरत्नके मुखकी ओर देखा तब उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। जान पड़ता था कि ज्योतिरत्न बहुत ही विचलित हो गए हैं। धीरे धीरे उनका चेहरा लाल होने लगा। उनके मस्तककी नसें मानो फूलने लगीं, आँखें और नासिकाके रन्ध्र मानो फैलने लगे, दृष्टि क्रमशः स्थिर होने लगी और साँस अधिक गहरी होने तथा उत्तरोत्तर अधिक विलम्बसे आने लगी। कामाख्यानाथका आश्चर्य ही बढ़ने लगा। पहले वे कुछ देरतक चुपचाप ज्योतिरत्नके मुखकी ओर देखते रहे और अन्तमें मृदु शान्त स्वरमें बोले, मेरी समझमें तो यदि आज आप यह जन्मपत्री यों ही छोड़ देते तो बहुत अच्छा होता। समय अधिक हो गया है और आपको स्नान सन्ध्या आदिके लिए—

परन्तु ज्योतिरत्नने मानो उनकी ये बातें सुनी ही नहीं। उन्होंने एक बार बहुत उद्विग्न तथा व्यग्र भावसे उनकी ओर देखकर फिर उसी जन्मपत्रीकी ओर ध्यान दिया। परन्तु उस जन्मपत्रीपर भी उनकी दृष्टि अधिक समय तक स्थिर न रह सकी। उन्होंने फिर बहुत ही उदासीनतासे कामाख्यानाथके मुखकी ओर देखा। कामाख्यानाथने फिर विनीत स्वरमें कहा—समय अधिक हो गया है। आपको स्नान सन्ध्या आदिके लिए—

ज्यो०—हाँ ठीक तो कहते हो। लेकिन कामाख्यानाथ यह क्या, मैंने यह क्या देखा ? कहीं मुझे भ्रम तो नहीं हो रहा है या मेरा मन ही इस समय ठिकाने नहीं है ? लेकिन यह तो—यह तो वही मेरी—बिलकुल वही लग्न, वही कुंडली, वही सब कुछ। सब बातें बिलकुल वही हैं।

कामा०—आज इन सब बातोंको जाने दीजिए। अब आपको जो कुछ कहना हो वह तीसरे पहर कहिएगा। आज आप कुछ अस्वस्थसे जान पड़ते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ज्यो०—हाँ आज मैं कुछ अस्वस्थ हूँ। कामाख्यानाथ, विधाता आज मुझे यह क्या दिखला रहे हैं?

कामा०—आप जरा अपना मन शान्त और दृढ़ करें, कुछ स्थिर होनेका प्रयत्न करें। अपने विचारोंपर इतना अधिक भरोसा मत कीजिए। थोड़ी देरके देखनेसे आप जितनी आशंका कर रहे हैं सम्भव है उतना अधिक खराब वह न भी हो। और मान लीजिए कि हो भी तो भय ही किस बातका है। जो दुर्दशाएँ मनुष्यकी कल्पनामें भी नहीं आ सकतीं वे सब भी तो मनुष्यके भाग्यमें बदी ही रहती हैं। तो फिर ऐसी बातोंसे डरना ही क्या! यदि मनुष्य भगवानका सदा स्मरण करता रहे तो फिर किसी प्रकारकी दुरवस्था उसे नष्ट नहीं कर सकती।

ज्यो०—नहीं कामाख्यानाथ, वह बात नहीं है। यह जन्मपत्री ऐसी है जिसकी मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था।

कामा०—मैं तो पहले ही आपसे कह चुका हूँ कि मैंने सुना है कि मेरी अन्तिम अवस्थाके सम्बन्धमें मनुष्यके ज्ञानने उस अज्ञात तत्त्वके सम्बन्धमें जो थोड़ा बहुत संकेत पाया है उसीका इसमें कुछ आभास है। लेकिन वह चाहे सच हो या झूठ—

ज्यो०—नहीं कामाख्यानाथ, वह झूठ नहीं हो सकता। यह वही जन्मपत्री है जो मैंने अपने मनमें कल्पना करके बनाई थी, जो सदा मेरी आँखोंके सामने और मनमें रहती है। वही लग्न, वही चन्द्रमा, सब बातें वही हैं। कात्यायनीके योग्य वरके लिए मैंने जिस जन्मकुंडलीकी कल्पना का थी, यह ठीक वही कुंडली है। भला इसमें मेरी भूल हो सकती है? तुम्हारी अन्तिम अवस्थाके सम्बन्धमें अथवा और किसी विषयमें तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने अब तक विचार ही नहीं किया है। केवल कुंडलीका ही कुछ आभास मुझे—

कामा०—ज्योतिरत्न महाशय, आपकी तबीयत ठीक नहीं मालूम होती है। आप अभी बैठे रहिए, उठिए मत। मैं किसी आदमीको बुलाता हूँ। आपकी तबीयत खराब हो रही है। मैं आपको इस अवस्थामें अकेले नहीं जाने दूँगा।

दोनों हाथोंसे कामाख्यानाथको रोककर ज्योतिरत्न सहसा ज़ोरसे उठ खड़े हुए और आदरसूचक स्वरमें बोले—कामाख्यानाथ, तुम भी शान्त हो। मेरे सम्बन्धमें किसी प्रकारका भय या चिन्ता मत करो। मेरी तबीयत बहुत ठीक है।

इतना कहकर ज्योतिरत्नने वह फैली हुई जन्मपत्री उठा ली और मोड़कर कामाख्यानाथके हाथमें देते हुए कहा—मैं नहीं समझता कि अब मैं इस जन्मपत्रीमें कोई और बात देख सकूँगा। मैंने इसकी केवल जन्मकुंडली देखी है। बस वही मेरे—जाने दो। अब मैं जाता हूँ।

इतना कहकर ज्योतिरत्न आशीर्वाद देते हुए उसी घबराहटमें जल्दीसे कमरेके बाहर चले गए। कामाख्यानाथ चुपचाप उनकी ओर देखते ही रह गए।

---

## दूसरा परिच्छेद।

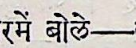

सूर्य अस्त हो गया है। पश्चिममें आरक्त कोमल राग विस्तृत नीले आकाशकी गोदमें आनन्दके सुन्दर आभासकी भाँति शोभित है। उसके ललाटमंडल पर रत्नकी तरह लाल आभावाली रोहिणी वधू धीरे धीरे पूर्वकी ओरसे निकल रही है। पृथ्वी मानो मुग्ध और विवश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


होकर रोमांचित शरीरसे उसके पैरोंपर पड़ी हुई दृष्टिसे उसकी ओर केवल देख रही है।

भागीरथीके तटपर ज्योतिरत्नके छोटेसे घरके आँगनमें एक वयस्का सधवा तुलसीके चबूतरेके पास बैठी हुई जप कर रही है। उसके सामने पंचपात्र आचमनी आदि पूजाके कई पात्र रखे हुए हैं। इतनेमें धीरेसे एक युवकने किवाड़ खोलकर आँगनमें प्रवेश किया और पुकारा, माँ।

वयस्का स्त्री बोली—कौन महेन्द्र, अब इतनी देर बाद तुझे माँ याद आई है। मैंने सुना कि दो दिनसे तुम निरंजनके साथ शहरसे आकर उसके यहाँ ठहरे हुए हो पर अभी तक तुम्हें माँका ध्यान नहीं था।

उस वयस्का स्त्रीने जप बन्द कर दिया था, माला हाथसे रख दी थी और वह परम स्नेहसे युवककी ओर देखती हुई अभिमानक्षुब्ध वाक्योंसे उसे सम्बोधन कर रही थी। परन्तु युवकके मुँहकी ओर अच्छी तरह देखनेपर उसका वाक्यस्रोत धीरे धीरे मानो आप ही आप रुक गया। उसने शंकित भावसे युवकके मुखकी ओर देखा और पूछा—तुम अच्छी तरह तो थे न? तुम ऐसे क्यों दिखाई देते हो? आओ, मेरे पास आओ।

युवकने सिर उठाकर और गम्भीर होकर पूछा—तुम पूजन कर रही हो। मैं तुम्हें छूऊँ?

वयस्का स्त्रीने उसकी इस बातपर कुछ ध्यान न दिया और व्याकुलतापूर्ण स्वरसे उसे बुलाने लगी। महेन्द्र आगे बढ़कर उसके पैरोंपर गिर पड़ा। उसके सिर और मुँहपर वह शंका और स्नेहके कारण काँपता हुआ हाथ फेरकर फिर पूछने लगी—महेन्द्र, तुम ऐसे क्यों दिखाई पड़ते हो? क्या वहाँ तुम्हारी तबीयत कुछ खराब थी?

महेन्द्र—नहीं माँ, मैं तो वहाँ बहुत अच्छी तरह था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माँ—तो फिर तुम ऐसे क्यों दिखाई पड़ते हो ? और फिर तुम दो दिनसे यहाँ आए हुए हो, घर क्यों नहीं आए ?

महे०—यों ही नहीं आया था माँ । कल निरंजनके साथ एक जगह घूमने चला गया था । और—

इतना कहते कहते महेन्द्रने कुछ उज्वल दृष्टिसे माँके मुँहकी ओर देखा । उसका स्वर मानो सहसा रुक गया । पर जब उसने देखा कि माता अब भी प्रत्याशापूर्ण नेत्रोंसे मेरी ओर देख रही है तब उसने गम्भीर स्वरमें कहा—माँ, मान लो कि अगर मैं नहीं आया तो फिर इसमें कौनसा ऐसा हरज हो गया, अब तो मेरे वहीं रहनेकी बात पक्की हुई है न ?

वयस्का स्त्रीने क्षुब्ध दृष्टिसे महेन्द्रकी ओर देखा । कुछ देर तक चुप रहनेके उपरान्त उसने कुछ भग्न स्वरमें कहा—महेन्द्र, अब मुझे बहुत बहुत दिन तो जीना नहीं है । पर जब तक मैं हूँ, तब तक तुम आकर मुझे देख जाया करो, मुझसे मिल जाया करो । तुम्हें बहुत दिनों तक यह कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा । तो क्या थोड़े दिनोंके लिए मेरे वास्ते तुम यह कष्ट न उठा सकोगे ?

इतना कहते कहते उस वयस्काके नेत्रोंसे आँसू निकल पड़े । जिस प्रकार माताको रोते देखकर छोटा बच्चा व्याकुल हो जाता है, उसी प्रकार उस वयस्काको रोते देख कर महेन्द्रने व्याकुलतापूर्वक माँ माँ कहते हुए उसकी गोदमें मुँह छिपा लिया और एक हाथ उसके पैरपर रख दिया । माँने उसका वह हाथ उठाकर अपनी गोदमें ले लिया और उसके सिर-पर अपना मुँह रखकर उसी प्रकार कहा—तुमने तो कात्यायनीसे भी पहले मुझे माँ बनाया था । वह जब पेटमें थी तब मैं सोचती थी कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


अब इस उम्रमें यह और नई सन्तान क्यों हो रही है। पर जिस दिन यह लड़की जनमी, उस दिन मेरे मनमें एक नई आशा हुई। तब मैंने सोचा कि अब कोई यह न कह सकेगा कि महेन्द्र मेरा अपना नहीं है पराया है। मुझे कोई सन्तान हुई ही नहीं थी, इस लिए किसीको विश्वास ही न होता था कि तुम मेरे लड़के हो। बस इसी बातका पहले मुझे बहुत दुःख रहा करता था। मुझे इस बातकी बड़ी साध थी कि कात्यायनीका ब्याह करके मैं अपने मनका वह दुःख दूर करूँगी। पर भगवानकी ऐसी मरजी हुई कि मेरी वह साध पूरी न हो सकी। बल्कि ऊपरसे इतना और हो गया कि इसी लिए तुम भी मेरे अपने न हो सके, पराए हो गए।

महे०—माँ, तुम मुझे माफ करो। बस, अब चुप करो। मैं तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ।

वयस्का—महेन्द्र, क्या मैं यह बात नहीं जानती कि उन्होंने क्यों तुम्हें इस प्रकार मुझसे दूर कर दिया है। इस ज्योतिषने ही उन्हें इतना निष्ठुर बना दिया है। मैं उनसे कह दूँगी कि तुम अपनी लड़कीको लेकर जो चाहो सो करो। चाहे उसका ब्याह करो चाहे मत करो। जिसमें वे दिनपर दिन तुम्हें इस प्रकार परायेकी तरह मुझसे दूर रखनेकी चेष्टा न करें। मुझसे अब यह नहीं सहा जाता।

इतना कहते कहते ब्राह्मणीने अश्रुपूर्ण दृष्टिसे देखा कि महेन्द्रका चेहरा बहुत ही उदास हो गया है। ऐसा जान पड़ता था कि वह किसी वेदनाको धक्का देकर हटानेके लिए प्राणपणसे चेष्टा कर रहा है, परन्तु वह वेदना अपनी अपराजेय शक्तिसे उसके मुखकी कालिमा बढ़ा रही है। यह समझकर माताने ठंढी साँस ली। उसके गोदमें सिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रखे हुए महेन्द्र धीरे धीरे सो गया था। उसका सारा शरीर जमीनपर पड़ा हुआ था, यह देखकर माता बहुत व्यग्र हुई। उसने कहा—महेन्द्र जमीनपर क्यों सोए हो? कात्यायनी, एक कम्बल तो ले आ।

महेन्द्रने उसकी गोदमें मुँह छिपाकर कहा—नहीं माँ, मुझे इसी तरह थोड़ी देर तक पड़ा रहने दो।

माता और पुत्र दोनों ही कुछ देर तक चुपचाप रहे। जब मनका वेग कुछ प्रकट हो गया, तब माता मानो कुछ सबला हो गई। हताश महेन्द्रके मुखकी ओर देखकर उसे कुछ आशा दिलानेके लिए उसने उसके मस्तकपर हाथ फेरते हुए कहा—महेन्द्र, मैं तुमसे एक बातके लिए अनुरोध करूँगी।

महे०—अनुरोध किस बातका माँ? जो कुछ कहना हो सो कहो। अनुरोधका नाम मत लो।

माँ०—तुम इस तरह दुखी होकर और मुझे छोड़कर मुझसे अलग मत हो। यह ज्योतिष उनके सिरपर ऐसा सवार है कि मैं देखती हूँ कि ब्याहके लिए उन्हें कोई वर पसन्द ही न आवेगा। देख तो रहे हो कि इसी फेरमें कात्यायनी सत्रह वर्षकी हो गई है। मैं तो समझती हूँ कि अन्तमें उन्हें राजी होना ही पड़ेगा। तो क्या तुम और कुछ दिनों तक न ठहर सकोगे? देखो ईश्वर अन्तमें क्या करता है।

महे०—माँ, मैं कहाँ तुमसे दूर चला गया हूँ? तुम क्यों इस तरहकी बातें करती हो? मैं कभी ज्यादा दिनों तक तो तुमसे दूर रहा नहीं था। इससे मुझे कुछ दुःख हुआ था और मैंने वह बात तुमसे कही थी। तुम्हारी गोदको छोड़कर मेरे लिए और जगह कौनसी है?

इतना कहते कहते फिर महेन्द्रका गला भर आया और उसने फिर माँकी गोदमें मुँह छिपा लिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


माँने स्नेहपूर्वक उसके सिरपर हाथ फेरते हुए कहा—मैं क्या यह बात नहीं जानती? मैंने तो स्वयं ही कई बार अपनी यह साध तुम्हें बतलाई है। लड़कीका दुर्भाग्य है और नहीं तो ऐसा अच्छा संयोग किसके भाग्यमें होता है? मेरा यह चाँदका जोड़ा देखकर न जाने कितनी मुझसे ईर्ष्या करती हैं। न जाने यह कमबख्त ज्योतिष किस बुरी साइतमें मेरे घर आया था। मैं स्वप्नमें भी यह नहीं समझती थी कि यह ज्योतिष मेरा ऐसा शत्रु हो जायगा। मुझे तो इसपर रत्ती भर भी विश्वास नहीं है। आग लगे इस ज्योतिषमें। इसीने उनका दिमाग़ खराब कर दिया है। तुम कभी इस ज्योतिषकी वाहियात बातोंपर ध्यान न देना। ज्योतिष कहता है कि कात्यायनीसे तेरा मेल नहीं बैठता। पर मैंने जो उसे जन्मसे ही मन ही मन तेरे साथ मिला रक्खा है, उससे भी क्या ज्योतिषका मेल बढ़कर है?

महेन्द्र स्तब्ध दृष्टिसे माताकी ओर देखता हुआ किसी और ही राज्यमें विचरण कर रहा था। जब उसकी आँखोंपर सहसा दीपकका प्रकाश पड़ा तब वह चकित होकर उठ बैठा। वह प्रकाश अन्दर कोठरीमेंसे आ रहा था। माँने उस कोठरीकी ओर देखकर कहा—कात्यायनी, आओ तुलसीकी आरती करो। दीपक हाथमें लेकर वहाँ क्यों खड़ी हो? अरे यह महेन्द्र है। तुमने पहचाना नहीं?

खुले हुए द्वारमें हाथमें दीपक लिए हुए प्रकाशके बीचमें देवीकी भाँति वह प्रतिमा चुपचाप खड़ी रही। माताके दोबारा बुलानेपर भी वह आँगनमें नहीं आई।

महेन्द्र स्तब्ध भावसे कुछ देरतक उसकी ओर देखता रहा और फिर कुछ चकित होकर उठ खड़ा हुआ। वह कुछ त्रस्त स्वरमें यह कहता हुआ वहाँसे चला गया—माँ, मैं थोड़ी देरमें फिर आता हूँ। वह इतनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जल्दी आँगनसे निकल गया कि वयस्का स्त्रीको उसे रोकनेका भी समय न मिला। वह ब्राह्मणी विमूढ़ भावसे देखती रह गई।

कात्यायनीने तुलसीके आगे दीपक रखकर प्रणाम किया और तब माँकी ओर घूमकर पुकारा—माँ।

कन्याको कुछ तीखे स्वरमें पुकारते हुए देखकर माँ चौक पड़ी। उसने पूछा, क्या है बेटी कात्यायनी?

का०—यह सब क्या है?

माँ०—कहाँ क्या है, तुम क्या पूछती हो?

का०—तुमने महेन्द्रसे ये सब बातें क्यों कहीं? बाबूजीने कई बार तुम्हें मना किया था न? जो बात उनको इतनी नापसन्द है उसकी तुम अबतक क्यों आशा किए चलती हो और महेन्द्रको क्यों इस प्रकार आशा दिलाती हो?

माँ पहले तो कुछ देर तक चुप रही, फिर दुःखित स्वरमें बोली—यह आशा क्या मैं आज कोई नये सिरसे कर रही हूँ? जानती हो जब तुम लोगोंका ज्योतिषशास्त्र इस घरमें आया था उससे बहुत पहलेसे मैं यह बात निश्चित कर चुकी थी।

का०—जब तुम नहीं जानती थीं तब यह आशा किया करती थीं। पर जब बाबूजीने तुमको मना कर दिया, तब फिर ये सब बातें क्यों करती हो?

माँ०—क्या आदमीका मन भी तुम्हारे ज्योतिषशास्त्रके अंकोंकी तरह है कि यदि ठीक न मिले तो मिटा दिया जाय और नए अंक रखकर मिलान मिलाया जाय? महेन्द्रके मनसे क्या यह बात सहजमें निकल सकती है?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


का०—इसमें तो तुम्हारा ही दोष है। तुम्हीं यह बात उसके मनसे नहीं निकलने देती हो। अब तुम आगेसे इस तरहकी बातें नहीं करने पाओगी।

कन्याकी अचंचल मूर्त्ति और दृढ़तासूचक वाक्योंसे माता बहुत दुःखी होकर मानो आप ही आप कहने लगी—भला यह तुम कैसे जान सकती हो कि मेरे मनमें इस बातकी कितने दिनोंसे साध थी ? इसी लिए मैंने तुम्हें उसे भइया कहकर पुकारनेकी आदत नहीं डाली थी। तुम नहीं जानती थीं, पर वह बहुत दिन पहलेसे ही जानता था।

का०—वह जानता था तो जाना करे। पर अब तुम आगेसे इस तरहकी बातें नहीं कहने पाओगी। अब मैं आजसे उसे भइया कहकर पुकारा करूँगी। बाबूजीकी इच्छाके विरुद्ध और उन्हें असन्तुष्ट करके तुम जो ऐसी इच्छा करती हो, यह तुम्हारा अन्याय है।

क्या है बेटी कात्यायनी ? किसका अन्याय है, किससे लड़ रही हो ? कहते हुए ज्योतिरत्न महाशयने आँगनमें प्रवेश किया।

पिताको देखते ही कात्यायनी दौड़कर उनके पास जा पहुँची और दोनों हाथोंसे उन्हें पकड़कर मारे प्रसन्नताके चिल्ला उठी—बाबूजी। परन्तु तुरन्त ही उसने अपनी वह चपलता रोककर और कुछ लज्जित होकर कहा—बाबूजी सन्ध्या हो गई, तुम गंगाजी कब जाओगे ?

इतना कहते हुए कात्यायनीने अपने दोनों हाथ पिताके शरीरपरसे हटा लिए और वह उनके मुँहकी ओर देखने लगी।

ज्यो०—बेटी, मैं तो अभी तक गंगा किनारे ही बैठा हुआ था। पर अभी तक मैंने सन्ध्यापासन आदि नहीं किया है।

का०—तुम अभी तक गंगा किनारे ही थे, जमींदार साहबके यहाँ नहीं गए थे ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ज्योतिरत्नने अस्फुट स्वरमें मानो आप ही आप कहा—नहीं बेटी। उनके यहाँका मेरा जाना तो तुम्हीने छुड़ा दिया।

का०—अच्छा तो तुम हाथ मुँह धो लो। मैं धोती और अँगोछा ले आती हूँ।

इतना कहकर कात्यायनी कोठरीमें चली गई।

ब्राह्मणीने अपने पतिके मुखकी ओर देखकर कहा—आज इतने अनमने क्यों हो? चेहरा इतना उतरा हुआ क्यों है?

ज्यो०—क्या तुम इसका कारण नहीं जानतीं?

स्त्री—भला मैं कैसे जान सकती हूँ? न तो तुम कभी अपनी चिन्ताका कोई अंश मुझे देते ही हो और न मेरी चिन्ताका कोई अंश आप लेते हो।

ज्यो०—आज मैंने तुम्हारी ही चिन्ताका अंश लिया है। कात्यायनीके ब्याहकी बात सोच रहा हूँ।

स्त्री—यह तो तुम्हारे लिए बिलकुल ही नई चिन्ता है। तुम्हें तो समाजका भी भय नहीं है। एक तो तुम्हारा कुल ही ऐसा है कि लड़कीके लिए जल्दी कोई वर न मिले। और यदि संयोगसे कोई वर मिल जाय तो तुम्हारा ज्योतिषशास्त्र रास्ता रोककर खड़ा हो जाता है। इससे मेरी तो समझमें ही नहीं आता कि इस मणिकांचन योगके कारण अन्तमें लड़कीके भाग्यमें क्या बदा होगा। या तो इस जन्ममें उसका ब्याह ही नहीं होगा और यदि हुआ भी तो वह किसी अभागेके हाथमें पड़ जायगी।

ज्योतिरत्नने सिर हिलाकर कहा—अभागा? जिसके साथ कात्यायनीका ब्याह होगा यदि वह भी अभागा निकला तो मैं समझूँगा कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


सारा ज्योतिषशास्त्र ही झूठा है। यह तो कभी हो ही नहीं सकता कि किसी अभागेके साथ उसका ब्याह हो। हाँ, यह हो सकता है कि उसका ब्याह ही न हो, वह सदा कुमारी ही रहे। मुझे तो कुछ ऐसा अन्दाज लगता है कि अन्तमें ऐसा ही होगा।

स्त्री—पर क्या तुम्हें कभी इस बातका ध्यान नहीं आता कि उस लड़कीके सिरपर तुम्हारे सिवा और कोई नहीं है?

ज्यो०—आज यही तो सोच रहा हूँ। शरीर ठहरा अनित्य। उस समय तुम लोगोंका क्या हाल होगा?

स्त्री—तो क्या तुम यह समझते हो कि मैं ही बहुत दिनों तक जीऊँगी? जो कुछ चिन्ता है वह तो लड़कीकी है।

ज्योतिरत्न महाशय यह कहते हुए वहीं बैठ गए कि यह सोचते सोचते तो आज सिरमें चक्कर आने लगा है।

स्त्री घबराकर उनके पास चली गई और उनके सिरपर हाथ फेरती हुई बोली—आज तक तो मैंने तुम्हें कभी इस प्रकार हताश होते हुए नहीं देखा था। आज तुम्हें इतनी चिन्ता क्यों हो रही है?

ज्योतिरत्न स्थिर दृष्टिसे आकाशकी ओर देखते रहे। उनकी स्त्रीने फिर कोमल स्वरमें कहा—महेन्द्र आज यहाँ आया था। आज देखा कि उसके मनसे अभिमान निकल गया है।

ज्यो०—आया था? ईश्वर करे वह जीता रहे, निष्कलंक रहे और चरित्रवान् हो। क्या अच्छा होता अगर मैं उसीको दे सकता होता।

स्त्री—तो फिर दे ही क्यों नहीं देते? और जो तुम निष्कलंक और चरित्रवान् होनेकी बात कहते हो, तो चन्द्रमामें भी कलंक है पर मेरे महेन्द्रमें कोई कलंक नहीं है। तुमने तो उसे बचपनसे ही पाला पोसा है। तुम क्या उसे नहीं जानते?


CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज्यो०—मैंने जो कुछ कहा, उसका मतलब तुमने नहीं समझा। केवल कात्यायनीके साथ उसके राशि नक्षत्रोंके न मिलनेकी बात नहीं है। उसके पंचम, नवम, तृतीय और एकादश स्थानमें पापग्रहके जो योग पड़े हैं, उन्हें मैं किसी तरह नहीं भूल सकता। इसी लिए तो मैं उसे अच्छे आदमियोंकी सोहबतमें रखना चाहता हूँ, जिसमें अगर किसी तरह हो सके, तो सच्चरित्र पुरुषोंके साथमें रहनेसे ही उसका दुर्भाग्य पराजित हो जाय।

स्त्री०—तुम तो यों ही व्यर्थकी बातें किया करते हो। मैं तुम्हारा ज्योतिष शास्त्र नहीं मानती। क्या सभी लोग इतनी बातें देख सुनकर ब्याह करते हैं?

ज्यो०—लोग बिना देखे सुने साँपका जहर भी तो खा जाते हैं और सुना है कि उनका बाल भी बाँका नहीं होता; परन्तु जान बूझकर तो विष खाया नहीं जाता। तुमने महेन्द्रका पुत्रसे भी अधिक स्नेहसे पालन पोषण किया है। सम्भव है कि तुम्हें भी उसके कारण बहुत कष्ट भोगना पड़े।

ब्राह्मणीने मानो बहुत डरकर कहा—राम राम ऐसी बात मत कहो। मेरा बच्चा यों ही अच्छा रहे, जीता रहे। उसे तुम्हारी लड़की नहीं चाहिए।

ज्यो०—यह आशा तो मैं बहुत दिन पहलेसे छोड़ चुका हूँ। लेकिन फिर ईश्वरने मुझे यह सब दिखलाया ही क्यों?

स्त्री—क्या दिखलाया? मुझे साफ साफ सब बातें बतलाओ। सब बातें मन ही मनमें रखकर इतने सन्तप्त न हो।

ज्यो०—एक दिन मैंने तुमसे कहा था न कि मैंने कामाख्यानाथकी कुंडली देखी है?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


स्त्री०—हाँ वह बात। तुम्हारे विचार जैसे बेढब हैं वैसी ही तुम्हारी बातें भी विलक्षण हुआ करती हैं। मैं बहुत दिनोंसे तुमसे ज्योतिष शास्त्रकी बातें सुनती आई हूँ। पर आज तक मैंने तुम्हें कभी यह कहते हुए तो नहीं सुना कि किसीकी जन्मपत्रीमें यह भी लिखा रहता है कि इसका ब्याह अमुकके साथ होगा।

ज्यो०—नहीं यह बात नहीं है। मैंने अपने मनसे बनाई हुई जन्मपत्रीमें जिस प्रकार लग्न चन्द्रमा और ग्रह आदि ठीक कर रखे हैं, उस तरहकी एक भी जन्मपत्री आज तक मेरे देखनेमें नहीं आई थी। लेकिन कामाख्यानाथकी जन्मपत्री तो मैंने बहुत ही थोड़ी देरके लिए हाथमें ली थी। फिर वह क्योंकर मेरे कल्पित आदर्शसे इतना अधिक मिल गई? मैं तो ठीक ऐसी ही जन्मकुंडली ढूँढ़ता था।

स्त्री—तुम कैसी बातें कर रहे हो? तुमने यह भी तो कहा था कि मारे डरके मैंने उसे ज्यादा नहीं देखा। तुम्हारे जैसे पागल ज्योतिषी ही सिर्फ एक नजर देखकर इतना विश्वास कर सकते हैं। अगर अपना दिमाग ठीक करके उसे अच्छी तरह देखते, तो शायद तुम्हारा यह भ्रम भी दूर हो जाता। शायद दो एक बातें मेल खा जाती तो खा जातीं, बाकी सब बेमेल ठहरतीं।

ज्यो०—लेकिन मैं तो उसे अच्छी तरह निश्चिन्त होकर देख ही नहीं सका। अपनी गौरी कन्याके लिए जिस वरकी प्रत्याशामें मैं इतने दिनोंसे बैठा हुआ हूँ, नित्य पूजा करनेके उपरान्त इष्ट देवतासे जिसके लिए मैं कामना और प्रार्थना करता हूँ, यदि मुझे अच्छी तरह मालूम हो जाय कि मेरी वह प्रार्थित वस्तु मेरे पास आ गई है तो—तो फिर तुम्हीं बतलाओ कि मुझे क्या करना चाहिए?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


स्त्री—मैं क्या बताऊँ कि तुम्हें क्या करना चाहिए? तुम जैसी जन्मकुंडली चाहते थे वैसी जन्मकुंडली तुम्हें मिल गई है, तो क्या इसी कारण उसके साथ ब्याह कर दिया जायगा? क्या उसे छोड़कर और किसीको तुम लड़की दोगे ही नहीं? यह भी कोई बात है। ज्योतिष क्या ज्योतिषका बाप भी यह नहीं कह सकता कि और किसी लड़केकी जन्मकुंडलीके साथ तुम्हारी लड़कीकी जन्म कुंडली मिलेगी ही नहीं। मान लिया कि तुम्हें वह कुंडली बहुत अच्छी जान पड़ी। लेकिन क्या इसी कारण तुम यह समझ लोगे कि वही तुम्हारी लड़कीका हाथ पकड़ेगा? क्या उसे छोड़कर और किसीके साथ लड़कीका ब्याह हो ही नहीं सकता? यह चिन्ता मनसे निकाल दो और जिस तरह इतने दिनों तक पात्र ढूँढ़ते रहे हो उसी तरह अब भी ज्योतिषके अनुसार अपने मनके मुताबिक वर ढूँढ़ते रहो।

ज्योतिरत्न मानो अपने आपसे ही कहने लगे—मैंने अब तक बहुतसी कुंडलियाँ देखीं, पर ऐसी कुंडली तो मुझे एक भी नहीं दिखलाई दी। कात्यायनीके जन्मस्थानमें बैठा हुआ जो सातवें स्थानको पूर्ण दृष्टिसे देख रहा है उसका फल यही होना चाहिए कि उसे ऐसा ही महापुरुष स्वामीके रूपमें मिलना चाहिए। कामाख्यानाथको जितना मैं जानता हूँ, उतना शायद ही और कोई न जानता होगा। कात्यायनीको ऐसा ही पति मिलना चाहिए।

स्त्री—तुम बार बार ऐसी बात मत कहो। क्या कात्यायनीके भाग्यमें ऐसा ही बूढ़ा वर लिखा है जो इतने दिनोंसे रँडुआ है और जिसके आगे कात्यायनीके बराबर लड़का मौजूद है? इतने दिनोंतक ढूँढ़ ढूँढ़कर तुमने उसके लिए यही वर पसन्द किया है? धन्य है तुम्हारी समझको!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ज्यो०—पार्वतीके विवाहके समय शिवजी भी तो रँडुए ही थे और उन्हें भी तो सब लोग बूढ़ा ही कहते थे। पर क्या गौरीके माता पिता ऐसा वर पाकर कृतार्थ नहीं हुए थे? और फिर तुम कामाख्यानाथको बूढ़ा क्यों कहती हो? उनकी अवस्था चालीससे शायद ही दो तीन बरस ऊपर होगी।

स्त्री—भला तुम भी कैसी बातें करते हो। मान लो कि वे बहुत बूढ़े नहीं हैं, तो भी क्या वे इतने दिनों बाद इस उमरमें तुम्हारी लड़कीसे ब्याह करने आवेंगे? उनका इतना बड़ा लड़का है, लड़की है। जब रमा छोटी थी, तभी उसकी माँ मर गई थी। उस समय उनकी ब्याह करनेकी उमर थी। उस समय तो उन्होंने ब्याह किया नहीं। इतने दिनों तक अकेले रहनेके बाद अब इस उमरमें वह तुम्हारी लड़कीके साथ ब्याह करेंगे? उनके आगे पन्द्रह बरसकी विधवा लड़की बैठी है, ब्याहने लायक लड़का है।

ज्यो०—ये सब बातें तो मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। कामाख्यानाथ कभी ब्याह नहीं करेंगे। और मैं भी उनसे कभी ऐसी धर्म-विगर्हित बातके लिए अनुरोध नहीं कर सकता। इससे तुम निश्चिन्त रहो।

स्त्री—यदि ऐसा ही है, तो फिर इस बातके लिए इतनी चिन्ता क्यों करते हो?

ज्यो०—मैं यही सोचता हूँ कि तुम्हारी कात्यायनीका ब्याह करनेकी इच्छा मुझे छोड़ देनी पड़ेगी। जरा विधाताका यह कौतुक तो देखो कि उन्होंने जिस आदमीको मेरे मनके मुताबिक योग्य वर बतलाया, उसे ऐसी अवस्थामें मुझे दिखलाया कि उसके सम्बन्धमें मेरा इस प्रकारकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कामना करना भी अन्याय है। वे देवता हैं। मैं मनके द्वारा भी उनका स्पर्श नहीं कर सकता। इसी लिए कहता हूँ कि मेरे किए तुम्हारी लड़कीका ब्याह न हो सकेगा। देखता हूँ कि उसे सदा कुमारी ही रहना पड़ेगा।

ब्राह्मणीको मानो रुलाई आने लगी। उसने भरे हुए गलेसे कहा, तुमने इसी लिए ज्योतिष पढ़ा था! अन्तमें तुमने यही करनी की!

ज्योतिरत्नने इस प्रकार सिर झुका लिया जिससे सूचित होता था कि उनके पास और कोई उपाय नहीं है।

पहले तो कुछ देर तक ब्राह्मणी चुप रही, फिर उसने कोमल स्वरसे कहा—जमींदारकी इतनी प्रशंसा मैंने कभी नहीं सुनी थी। केवल तुम्हीं नहीं छोटे बड़े सभी यही कहते हैं कि वह बिलकुल देवता हैं। उनकी लड़की और लड़का दोनों ही वैसे हैं। हाँ, यही है कि उमर कुछ ज्यादा है। लेकिन लड़कीके यों ही कुँआरे रहनेसे तो यही अच्छा है। तो फिर क्या तुम उनसे एक बार इस बातका जिक्र करोगे?

ज्योतिरत्न चटपट उठकर खड़े हो गए और बोले—नहीं नहीं, ऐसी बात मत कहो। इसी प्रलोभनसे बचनेके लिए तो मैंने उनके यहाँ ज्यादा आना जाना छोड़ दिया है। मैं कभी ऐसी अनुपयुक्त चेष्टा, यह अनुरोध न करूँगा। मैं भाग्यके साथ लड़ाई नहीं लड़ सकता। चाहे लड़की कुँआरी ही क्यों न रह जाय। कहाँ हो बेटी कात्यायनी, मेरी धोती और अँगोछा ले आओ।

कात्यायनीने पास आकर मीठे स्वरसे कहा—तुमने तो अभी तक मुँह हाथ भी नहीं धोया।

'यही तो,' इतना कहकर ज्योतिरत्न आँगनके एक कोनेमें चले गए जहाँ एक छोटासा कूआँ था। कूएँपर एक छोटीसी चौकी थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ज्योतिरत्न जाकर उसीपर बैठ गए। कात्यायनीने पहलेसे ही बहुत यत्न-पूर्वक एक बरतनमें जल भर रखा था। उसीमेंसे थोड़ासा जल एक लोटेमें निकालकर वह पिताके हाथों और पैरोंपर देने लगी। हाथ मुँह धोकर और धोती बदलकर ज्योतिरत्न कोठरीकी ओर चले। अब तक उनकी स्त्री चुपचाप तुलसीके चौंतरेके पास बैठी हुई थी। क्षीणज्योति दीपक धीरे धीरे बुझना चाहता था। उसे देखते हुए ब्राह्मणीने कहा—'परमात्मा जो तुम्हारी इच्छा।' और एक ठंढी साँस लेकर उठ खड़ी हुई और आसन तथा पूजाकी सामग्री लेकर अन्दर कोठरीमें चली गई।

कात्यायनी उस अँधेरे आँगनमें खड़ी हुई आकाशकी ओर देख रही थी। उसने देखा कि यद्यपि आकाशरूपी विस्तृत आँगनमें भी अँधेरा ही छाया हुआ है, तथापि वहाँ सैकड़ों हजारों तारे रेखाओं तथा स्तूपोंके आकारों तथा बेसिलसिले इधर उधर छिटके हुए हैं और उस आकाशको एक कोमल स्निग्ध प्रकाशसे प्रकाशित कर रहे हैं। वह मानो पहेलियोंसे भरा हुआ एक सुन्दर जगत् है। उस जगत्के अज्ञात रहस्यका कुछ कुछ स्पष्ट आभास देनेका मानो वह प्रकाश प्रयत्न कर रहा है। ये चमकते हुए तारे ही मानो उस रहस्यकी चमकती हुई आँखें हैं। कात्यायनी सोचने लगी, क्या यही वे तारे हैं जो मनुष्यके जीवनको भिन्न भिन्न मार्गोंमें विलक्षण रूपसे सदा घुमाया फिराया करते हैं? क्या यही तारे मनुष्यके भाग्यके नियामक हैं? वह कौनसा ग्रह या नक्षत्र है जिसके कारण उसका जीवन ऐसे रहस्यमय मार्गमें दिनपर दिन आगेकी ओर बढ़ता जाता है? कात्यायनी इसी आशासे आकाशमें इधर उधर देखने लगी कि यदि हो सके तो मैं यह जान लूँ कि इन तारोंके प्रकाशसे और भी किसी अज्ञात रहस्यका संकेत मिलता है या नहीं। पितासे बारबार प्रश्न करनेपर भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कात्यायनी उन तारोंमेंसे कुछके नाम धाम आदिके अतिरिक्त अब तक और कोई विशेष बात नहीं जान सकी थी। जिस ज्योतिषशास्त्रकी आलोचना करनेके कारण ज्योतिरत्न आजकल अपने जीवनको अभिशापग्रस्त समझने लगे थे, वह शास्त्र वे अपनी कन्याको नहीं सिखलाना चाहते थे। यही कारण था कि कात्यायनी अब तक कुछ ग्रहों और नक्षत्रोंके नाम तथा साधारण परिचयके अतिरिक्त और कुछ नहीं जान सकी थी। वह विस्मयसे विमूढ़ होकर केवल यही सोच रही थी कि ये तारे देखनेमें सुन्दर प्रकाशके फूल हैं। इन्हें देखनेसे यही जान पड़ता है कि परमात्माने जिस उद्देश्यसे फूल बनाये हैं उसी उद्देश्यसे आकाशमें ये तारे भी उगाए हैं। परन्तु ज्योतिष शास्त्रके नामपर लोगोंने उन सुन्दर फूलोंपर कितना अधिक बोझ लाद दिया है। यदि इन तारोंमें एक एक जगत् छिपा हुआ है, तो छिपा रहे, यदि ये पृथ्वीसे हजारों गुने बड़े हैं तो हुआ करें। परन्तु ये सब बातें मनुष्यको विस्मययुक्त आनन्द देनेके अतिरिक्त और कुछ तो नहीं करतीं। यह मनुष्यकी एक अद्भुत अभिज्ञता है कि वह इन ग्रहों तथा नक्षत्रोंको जीवनके शुभाशुभका कारण मानकर उनमें भयंकरताका आरोप करता है। परन्तु क्या उसका ऐसा करना ठीक है? नहीं नहीं, बिलकुल ठीक है। यदि ये सब बातें ठीक न होतीं तो पिताजी यों ही अपना सारा जीवन इनकी आलोचनामें न बिता देते। इसी लिए आकाशके इन फूलोंकी शक्तिका ध्यान करके आश्चर्य होता है और मनुष्यको अवाक् रह जाना पड़ता है।

इतनेमें ज्योतिरत्न आँगनमें अपनी कन्याके पास आये। उन्होंने देखा कि कात्यायनी आकाशके तारोंकी ओर देख रही है। उसके सिर पर हाथ रखते हुए उन्होंने कहा—बेटी कात्यायनी।

कात्यायनीने आकाशकी ओरसे आश्चर्यभरी दृष्टि हटा ली और कुछ लज्जित होकर उत्तर दिया—हाँ पिताजी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ज्यो०—बेटी, यहाँ आँगनमें इस तरह क्यों खड़ी हो ? चलो घाट-पर चलें। लेकिन नहीं बेटी, बहुत रात हो गई है।

कात्यायनीने कुछ सोचकर उत्तर दिया—रमा तो आरती देखकर अब घर चली गई है और तुम मुझे घाटपर ठंढकमें बैठने नहीं दोगे, इस लिए अब मैं वहाँ इतनी रातके समय न जाऊँगी।

ज्यो०—अच्छी बात है। तो फिर बेटी, तुम यहाँ खुलेमें मत रहो, अन्दर कोठरीमें चली जाओ। सन्ध्याका समय तो बीत ही चुका है। तो भी जाऊँ, जरा गंगाजीको स्पर्श कर आऊँ।

का०—तो क्या तुम जप घर ही आकर करोगे ? वहाँसे जल्दी लौट आओगे ? अच्छा तो फिर मैं फिर तुम्हारे आसरे यहीं खड़ी हूँ।

ज्यो०—नहीं बेटी, वहाँ मुझे कुछ देर लगेगी। तुम यहाँ खड़ी मत रहो। इससे अच्छा तो यही है कि तुम भीतर अपनी पोथी लेकर बैठ जाओ। अब मैं जप करके ही आऊँगा।

का०—अच्छा तुम जप कर आओ। आज जब तुम आओगे, तब मैं तुमसे श्रीमद्भागवत पढ़ूँगी।

ज्यो०—श्रीमद्भागवत ! अरे पागल, आज यह नई बात कैसी ? तुम्हें तो महाभारतके सिवा और कुछ पसन्द ही नहीं आता था। तुम तो कहा करती थीं कि भीष्म और कर्णकी कथाके आगे रामायण भी अच्छी नहीं लगती। आज—

कात्यायनी कुछ लज्जितसी होकर हँस पड़ी और बोली—बाबूजी, मैं अपने लिए नहीं कहती। रमा भागवत सुनना चाहती है। उसे रामायण भी अच्छी लगती है, लेकिन इन दोनोंका एक भी श्लोक मुझे याद नहीं है। इसी लिए मैं आज आपसे भागवत पढ़ूँगी। इसके बाद फिर जहाँसे मुझे अच्छा लगेगा वहाँसे—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ज्यो०—बस सुन सुनकर ही आधा याद कर लोगी, मेरे पढ़ानेका कष्ट आधा कम कर दोगी और तब फिर दिन रात उसीका जिक्र किया करोगी। एक एक श्लोकका अर्थ पूछोगी और एक एक शब्दका गूढ अर्थ निकालकर मेरा सिर खपाओगी। क्यों यही मतलब है न ?

कात्यायनी हँसती हुई सिर झुकाकर बोली—नहीं पिताजी, मैं खाली रमाको सुनाऊँगी। और कुछ नहीं।

ज्यो०—देखो याद रखना। ऐसा न हो कि दोपहरको और रातको मुझे सोतेसे जगाकर श्लोकका अर्थ पूछने लगो।

स्नेहपूर्वक कन्याका मस्तक चूमते हुए ज्योतिरत्न वहाँसे गंगा तटकी ओर चल पड़े।

कात्यायनीने कुछ दुःखी होकर सोचा—आज रमासे भेंट नहीं हुई। और कल सन्ध्यासे पहले अब भेंट हो भी नहीं सकेगी।

यद्यपि जमींदार कामाख्यानाथका मकान पास ही था; परन्तु फिर भी कात्यायनीका वहाँ ज्यादा आना जाना नहीं था और रमा भी एक मन्दिरको छोड़कर और कहीं आती जाती नहीं थी। हाँ, सन्ध्याके समय आरती देखनेके लिए वह अपने पिता भाई या और किसी आत्मीयके साथ गंगातटवाले मन्दिरमें नित्य आया करती थी। कात्यायनी भी नित्य सन्ध्याके समय अपने पिताके साथ गंगा-किनारे जाया करती थी। जमींदारका मन्दिर और उससे सटा हुआ घाट भी कात्यायनीके मकानके बहुत पास था। वहीं मन्दिरमें रमाके साथ कात्यायनीका परिचय हुआ था। ज्योतिरत्न बहुत देर तक घाटपर बैठकर सन्ध्या और जप आदि किया करते थे और रमाके बुलाने पर कात्यायनी उसके पास जा बैठती थी। स्वयं मन्दिरमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ही या मन्दिरसे सटी हुई कोठरीमें दोनों बैठकर बात चीत किया करती थीं। केवल गंगातटपर निवास करनेके अभिप्रायसे ज्योतिरत्न महाशय थोड़े दिनोंसे इस गाँवमें आ रहे थे। इसी लिए इस गाँवमें कात्यायनीकी कोई बाल्यावस्थाकी सखी सहेली नहीं थी। जिन लड़कियोंके साथ उसका परिचय हुआ था, वे भी कात्यायनीकी, अवस्थासे कहीं अधिक बढ़ी हुई गम्भीरता देखकर उसके पास नहीं आती थीं और कात्यायनीको भी किसीसे बहुत ज्यादा मिलने जुलनेका आग्रह नहीं था। केवल अपने पिताके साथ रहकर ही उसने अपने जीवनके सत्रह वर्ष बिताए थे। जब वह बहुत छोटी थी, तब भी अपने पिताके पास ही बैठकर खेला करती थी और उनकी पुस्तकें उठाकर इधरसे उधर किया करती थी। अब वह धीरे धीरे पिताकी सहायतासे उन पुस्तकोंसे थोड़ी बहुत परिचित हो चली थी और उन्हीं पुस्तकोंको उसने अपने जीवनका सर्वश्रेष्ठ साथी बना लिया था। गाँवकी युवती सधवाओं कुमारियों अथवा बालिकाओंमेंसे कोई कात्यायनीके सप्तदश-वर्षीय कुमारीत्वके वर्मके पास फटकनेका भी साहस नहीं कर सकती थी। उसे देखते ही वे सब मानों आश्चर्यसे स्तब्ध हो जाती थीं। उनके लिए मानो वह किसी और ही लोककी कन्या थी। केवल बालिकाओं और युवती सधवाओंकी दृष्टिमें ही कात्यायनी अदृष्टपूर्व नहीं थी, बल्कि गाँवकी सभी स्त्रियाँ उसे असाधारण और अलौकिक समझतीं थीं। कोई सोचती थी कि दुष्ट ग्रहों और नक्षत्रोंकी कोपदृष्टिके कारण इस अपूर्वदर्शना कन्याका अखंड वैधव्य योग समझकर इसके पंडित पिता इसे पुराणोंमें कही हुई ऋषिकन्याओंके समान कुमारी संन्यासिनी बनानेके लिए इसे अनेक प्रकारके शास्त्रोंकी शिक्षा देते हैं। कोई सोचती थी कि कन्याका जन्म देव-अंशसे हुआ है, मनुष्यके साथ ब्याह उस सहेगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


नहीं, इसी लिए पिताने उसके विवाहका विचार ही छोड़ दिया है। और नहीं तो क्या ऐसी देवीके समान कन्याके विवाहके लिए कोई वर ही न मिलता ? यद्यपि ज्योतिरत्न महाशय उस गाँवमें अभी हालमें ही आकर बसे थे, लेकिन फिर भी उनके परिवारके लोगोंके उत्तम स्वभावके कारण सभी लोग उनके प्रति बहुत अधिक श्रद्धा भक्ति रखने लगे थे। धीरे धीरे उनके गुणोंकी प्रशंसा जमींदार बाबू कामाख्यानाथके कानों तक भी पहुँची थी। यद्यपि कात्यायनीको अभी तक कुमारी ही देखकर गाँवकी स्त्रियोंको बहुत आश्चर्य हुआ था, तो भी उस कुमारीकी ओर किसीको अवज्ञाकी दृष्टिसे देखनेका साहस नहीं होता था।

परन्तु गाँवके लोगोंकी विस्मय और श्रद्धासे युक्त दृष्टिकी ओर कात्यायनीका कुछ भी ध्यान नहीं था। जो बालिका जन्मसे ही अपने विद्वान् पिताके साहचर्यमें इतनी बड़ी हुई थी, उसने आज तक अपने जीवनमें किसी प्रकारके अभावका अनुभव ही नहीं किया था। इधर कुछ दिनोंसे उसकी गृहस्थीमें एक प्रकारकी अशान्ति अवश्य उपस्थित हो गई थी। परन्तु उसके लिए उसका परिणाम केवल यही होता था कि कभी कभी रह रहकर वह कुछ चंचल हो उठती थी। बस और कुछ नहीं। उसके शान्तिस्निग्ध परिजनोंमें यह मनोवाद, शान्तिभंगकी यह सूचना क्यों हुई है, पिता माता और भाईके तुल्य-आत्मीयोंमें रहनेपर भी इस मनोमालिन्यका सूत्रपात क्यों हुआ है और फिर पिताजी भी क्यों उसके लिए दिन रात इस प्रकार चिन्तित रहते हैं, यही सब बातें सोच सोचकर कात्यायनी बीच बीचमें कुछ विचलित हो जाती थी। वह अपना मन किसी और तरफ लगानेके लिए कोई साथी ढूँढ़ रही थी कि इसी बीचमें रमाके साथ पहले पहल उसकी बातचीत हुई। रमामें कात्यायनीको कोई ऐसी बात मिल गई थी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


जिसके कारण उसका संगीविमुख स्वभाव दिनपर दिन चुपचाप अपने आवरणका परित्याग कर रहा था। परन्तु कौन कह सकता है कि वह विधवा किशोरी, अवस्थामें अपनेसे कुछ अधिक बड़ी इस कुमारीके असाधारण जीवनकी क्यों संगिनी हो गई थी !

जब ज्योतिरत्न महाशय गंगातटकी ओर चले गए, तब कात्यायनी कुछ देर तक रमाके साथ उस दिन भेंट न हो सकनेकी बात सोचती रही और तब वह कुछ आगे बढ़कर बाहरी दरवाजेके पास जा पहुँची। वहीं उस खुले हुए दरवाजेमेंसे उसने हाथ जोड़कर गंगाजीको प्रणाम किया। उस समय हेमन्तकी नदीका शरीर बहुत संकुचित हो रहा था। बिना घाटपर उसके पास पहुँचे उसके शीर्ण शरीरके दर्शन नहीं होते थे। जब वह प्रणाम करके लौटने लगी, तब घंटेका गम्भीर नाद सुनकर वह सिहर उठी और दाहिनी ओर देखने लगी। गोविन्ददेव और शिव-जी दोनोंके मन्दिरोंके शिखर मानों चुपचाप उंगलीकी भाँति उठे हुए किसीको कोई संकेत कर रहे थे। स्तब्ध और भयभीत भावसे कात्यायनी चुपचाप उसी ओर देखती रह गई।

थोड़ी देरमें बाजे बन्द हो गए। कात्यायनीने समझ लिया कि मूर्तियोंकी शयन-आरती हो रही है। उन देवताओंके उद्देश्यसे कात्यायनीने कुछ देरके लिए सिर झुका लिया और तब फिर आकाशकी ओर देखा। उन्हीं शिखररूपी दोनों उंगलियोंके ऊपर नीले आकाशमें बहुतसे चमकते हुए तारोंके अनेक पुंज थे जिनके आस पास और भी कितने ही उज्ज्वल तथा अनुज्ज्वल रहस्यपूर्ण ज्योतिपुंज थे। उन्हें देखकर कात्यायनीने फिर सिर झुका लिया।

---

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


## तीसरा परिच्छेद।

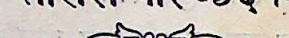

रात भरकी उमस भरी गरमीके बाद प्रभातकी शीतल वायुने मानो रुँधी हुई साँसवाले जगतके उष्ण वक्षस्थलको मानो शीतल और स्निग्ध कर दिया था। कामाख्यानाथ पलंग परसे उठकर और प्रातःकृत्योंसे निवृत्त होकर अपनी छतपर टहल रहे थे। पीले आकाशमें मलिन चन्द्रमाकी रेखा पड़ी हुई थी। एक एक करके सब नक्षत्र निष्प्रभ हो रहे थे; केवल शुक्र तारा दप् दप् करके चमक रहा था। अभी तक पूर्व आकाशमें सूर्यकी किरणोंका लाल आभास दिखाई नहीं पड़ रहा था। उषाकी पिंगल कान्ति केवल कोमल शुभ्रतासे भर रही थी। कामाख्यानाथने थोड़ी देर तक टहलनेके बाद पीछे फिरकर देखा कि उसी मलिन चन्द्रमाकी भाँति एक बालिका चुपचाप खड़ी हुई हमारी ओर देख रही है। कामाख्यानाथ कुछ व्यस्त होकर बोले—क्या है बेटी रमा, आज तुम इतने सबेरे कैसे उठीं?

बालिकाने स्थिर दृष्टिसे उनकी ओर देखकर कहा—बाबूजी, क्या आज तुम सन्ध्या पूजा करने नहीं बैठे थे, तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?

का०—नहीं बेटी, तबीयत तो ठीक है। पर रातको गरमी बहुत थी, इसलिए आज जरा सबेरे उठकर हवामें टहल रहा हूँ। क्यों बेटी, आज तुम्हारा चेहरा इतना उतरा हुआ क्यों है? क्या तुम्हारी तबीयत कुछ ठीक नहीं है?

रमाने चुपचाप सिर हिला दिया जिससे अस्वीकार प्रकट होता था।

कामाख्यानाथने फिर पूछा—तुम्हारे लड़के बच्चे तो सब अच्छी तरह हैं न? किसीके लिए किसी चीजकी जरूरत तो नहीं है? तुम्हारे गोविन्द-देवकी सेवाके लिए किसी नई व्यवस्थाकी आवश्यकता तो नहीं है न?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


रमाने म्लान मुख और काँपते हुए स्वरसे कहा—नहीं, कुछ नहीं। बाबूजी, क्या तुमने नहीं सुना कि कात्यायनीके पिता बहुत बीमार हैं?

का०—कात्यायनीके पिता? कौन ज्योतिरत्न महाशय? नहीं, मैं तो कुछ भी नहीं जानता। तुमसे किसने कहा?

रमा—इधर कई दिनसे कात्यायनी सन्ध्या समय मन्दिरमें नहीं आती थी, इसी लिए कल सन्ध्याको आरतीके समय मैंने उसे बुला भेजा था। इसपर उसने कहला भेजा कि बाबूजीकी तबीयत बहुत खराब है, इसलिए मैं नहीं आ सकती।

का०—क्या वे बीमार हैं? कबसे? आजकल वह यहाँ आते भी बहुत कम थे। इसीलिए उनकी कोई खबर भी नहीं मिलती थी।

इतना कहते कहते कामाख्यानाथ रुक गये और मन ही मन सोचने लगे—इधर जब भेंट होती थी तब भी वे पहलेकी तरह बात चीत नहीं करते थे। वे बहुत चिन्तित और दुखी दिखाई देते थे। इसीलिए मैं उन्हें छेड़ना भी नहीं चाहता था। पर क्या वे बीमार हैं? उन्होंने फिर अपनी कन्यासे पूछा—क्या वे सचमुच बीमार हैं? मैंने तो किसीसे उनकी बीमारीका हाल नहीं सुना।

रमा—बाबूजी, आज तुम उनके यहाँ जाओ और जाकर देखो कि उनकी क्या हालत है।

रमाकी आँखोंमें आँसू भरे हुए देखकर कामाख्यानाथ चंचल हो उठे और उन्होंने आगे बढ़कर आदरपूर्वक उसके मस्तकपर हाथ फेरते हुए कहा, तुम भी निरी पागल हो। जरासी बीमारीका हाल सुनकर इतनी डर गईं। मैं अभी जाकर उन्हें देखता हूँ। भला इसमें घबरानेकी कौनसी बात है?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रमा—बाबूजी, मैं भी एक दिन कात्यायनीके पास जाऊँगी।

का०—आज ही चली जाना। पर उससे पहले ही मैं अभी जाता हूँ और उन्हें देख आता हूँ। फिर जैसा हाल होगा तुमसे कहूँगा।

इस समय तक पूर्व आकाश लाल रंगके प्रकाशसे भर गया था और कुछ ही क्षणोंमें उदय होनेवाला ज्योतिगोलक अपनी सिन्दूर-रक्त-कान्तिसे जगत्के तृषित नेत्रोंको तृप्त करनेको था। रमाने पीछे मुड़कर उसी ओर देखते हुए अपने आँसू पोंछे और उसके मर्मज्ञ पिता घबड़ाकर छतपरसे नीचे उतरे और एक कमरेमेंसे दूसरे कमरेमें पहुँचे। उन्होंने जोरसे आवाज दी—निरंजन, निरंजन। इतने सबेरे पिताको इस प्रकार अकस्मात् पुकारते हुए सुनकर निरंजन घबराकर पलँगपरसे उठ बैठा। उसने आँखें मलते हुए विस्मय और व्यग्रतासे भरे स्वरमें कहा—हाँ बाबूजी, अभी आया, कहिए क्या है? परन्तु निरंजनको पिताके पास जानेका अवकाश ही नहीं मिला। इससे पहले ही उसने देखा कि पिताजी कमरेमें सामने मौजूद हैं। वह चटपट पलँगपरसे उतरकर जमीनपर खड़ा हो गया।

का०—निरंजन, तुम्हें महेन्द्रका कुछ पता है? उसके घरका भी कुछ हाल मालूम है?

बहुत ही विस्मित होकर पिताकी ओर देखते हुए निरंजनने उत्तर दिया? महेन्द्रका हाल—आप तो जानते ही हैं कि आज तीन महीने हुए वह लिखना पढ़ना छोड़कर स्वाधीन रूपसे जीविका उपार्जन करनेके लिए—

कामाख्यानाथने बीचमें ही रोककर कहा—मैंने ही उसकी यह इच्छा देखकर उसे जमींदारीका काम सिखलानेके लिए दीवानके सपुर्द कर दिया था। पर क्या वह बीच बीचमें कभी तुमसे मिलता भी नहीं?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


निरंजनने कुछ सोचकर कहा—वह कहाँ मुझसे ज्यादा मिलता है। मैं तो प्रायः दो महीनेसे यहाँ आया हुआ हूँ। इस बीचमें एक दिन दो दिन, बहुत हुआ होगा तो तीन दिन, मेरी उसकी भेंट हुई होगी। वह भी या तो संयोगसे कहीं रास्तेमें, या दीवानके सरिश्तेमें। मैंने सुना है कि वह प्रायः देहातोंमें रहकर ही काम सीखता है। कुछ देर ठहरकर निरंजनने दुःखित भावसे कहा—बल्कि मैं तो कह सकता हूँ कि वह अब आगेकी तरह मुझसे उतना हेल मेल भी नहीं रखता। भेंट होने पर भी दूर ही रहता है। वह बड़े आदर और मान्य भावसे मुझसे बातें करता है, इसी लिए मैं भी उतना—

कामाख्यानाथने कोई उत्तर नहीं दिया। वे केवल गम्भीर स्वरमें 'हूँ,' करके बाहरकी ओर चल पड़े। उनके पीछे पीछे जो नौकर चला आ रहा था, उसे उन्होंने दीवानको बुलानेकी आज्ञा दी और आप आगे बढ़े। जब वे सदर दरवाजेसे बाहर निकलकर सड़कपर पहुँचे, तब पीछेसे दीवानजी दौड़े हुए आए और अभिवादन करके खड़े हो गए। उनके अभिवादनका उत्तर देकर कामाख्यानाथने उनसे पूछा—महेन्द्र कहाँ है?

दीवान—जी, वह तो आज तीन चार दिन हुए देहातसे घूमकर घर आए हैं। वह भी बड़े विलक्षण काम करनेवाले हैं। मैंने तो ऐसी तेज अकलका आदमी ही आज तक नहीं देखा। इन दो ही तीन महीनोंमें—

कामाख्यानाथने मधुर स्वरसे बीचमें ही रोककर कहा—हाँ यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। मैं तो सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि उनका इधर तीन चार दिनका कुछ हाल आपको मालूम है या नहीं। जबसे वह बाहरसे आए हैं तबसे इधर सरिश्तेमें आए हैं या नहीं और इस समय वह कहाँ होंगे?


CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दीवान—जी, इधर तो वह मेरे पास नहीं आए। मैं तो समझता हूँ कि इस समय वह अपने ही मकानपर होंगे।

कामाख्यानाथने मानो आप ही आप कहा—मेरा भी कुछ यही अन्दाज था। तब तो वह अवश्य ही—। अच्छा अब आप जाकर अपना काम कीजिए।

मालिककी आज्ञा पाकर दीवानजी पीछेकी ओर लौटे और कामाख्यानाथ जल्दी जल्दी आगेकी ओर बढ़े।

ज्योतिरत्न महाशयके मकानके सामने पहुँचकर कामाख्यानाथने देखा कि दरवाजा अभी तक बन्द है। उन्होंने जोरसे पुकारा—महेन्द्र! महेन्द्र!

तुरन्त ही दरवाजा खुल गया और महेन्द्रने बाहर निकलकर चकित होकर कहा—आप इस समय कहाँ?

का०—ज्योतिरत्न महाशयकी तबीयत कैसी है?

महे०—ठीक नहीं है। इधर कई दिनोंसे वे बीमार हैं।

का०—चलो, मैं उन्हें जरा देखूँगा।

'आइए,' कहकर महेन्द्र आगे बढ़ा। उसके पीछे पीछे चलकर कामाख्यानाथ आँगनमें पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि आँगन बहुत गन्दा हो रहा है। ऐसा जान पड़ता था कि कई दिनोंसे वह झाड़ा बुहारा नहीं गया है। उन्हें ध्यान आया कि कुछ ही दिनों पहले जब ज्योतिरत्न महाशयसे परिचय हुआ था और मैं यहाँ उन्हें प्रणाम करनेके लिए आया था तब यह आँगन कैसा साफ सुथरा था। बस इसी साधारण लक्षणसे उन्होंने समझ लिया कि अवश्य ही ज्योतिरत्न महाशयके रोगने भीषण रूप धारण कर लिया है। और नहीं तो गृहस्थ लोग सहजमें घरकी सफाई आदिकी ओरसे इस तरह उदासीन नहीं होते। कामाख्यानाथके मुखपर धीरे धीरे गम्भीर चिन्ता छा गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


महेन्द्रने घरके सब लोगोंको बाबू कामाख्यानाथके आनेकी सूचना दे दी और कोठरीका दरवाजा और जंगला खोल दिया और कोठरीके बाहर खड़े हुए कामाख्यानाथसे अन्दर आनेके लिए कहा । कोठरीमें एक चारपाई बिछी हुई थी। उसीपर रुग्ण ज्योतिरत्न महाशय सोए हुए थे। उनके पैरोंके पास पत्नी और सिरके पास कन्या कात्यायनी बैठी हुई थी। जब कामाख्यानाथ उनके सामने पहुँचे तब कात्यायनी वहाँसे उठकर दूसरी ओर जा बैठी।

ज्योतिरत्नने कामाख्यानाथकी ओर देखकर कुछ म्लान हँसी हँसते हुए कहा—आओ, बैठो भाई। इतना कहते हुए उन्होंने महेन्द्रके लाए हुए आसनकी ओर देखा। कामाख्यानाथ उस आसनपर बैठ ही रहे थे कि ज्योतिरत्नने पूछा—कामाख्यानाथ, आज इस समय इस रूपमें यहाँ कैसे चले आए?

ज्योतिरत्न महाशय कुछ विस्मित भावसे देख रहे थे, इस लिए कामाख्यानाथने जब अपने वेशकी ओर दृष्टि डाली तब उन्हें माळूम हुआ कि मैं जल्दीमें पूजनके वस्त्र पहने हुए ही यहाँ चला आया हूँ। मैं वही कौषेय वस्त्र, वही उत्तरीय और वही टाटकी जूती पहने हुए हूँ। जल्दीमें इन्हें उतारकर दूसरे कपड़े पहनना भी भूल गया हूँ। उन्होंने कुछ कुंठित भावसे उत्तर दिया,—मैंने अभी रमासे आपकी बीमारीका हाल सुना था, इसी लिए चला आया। मुझे तो कुछ खबर ही नहीं थी कि आप इतने बीमार हो गए हैं।

ज्यो०—कुछ बहुत ज्यादा दिन तो हुए नहीं थे। दो चार दिनोंमें ही मैं तुम्हें क्या खबर देता?

का०—क्यों जी महेन्द्र, तुमने भी मुझे कोई खबर नहीं दी। यह तो बड़े दुःखकी बात है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ज्यो०—नहीं कामाख्यानाथ, इसमें महेन्द्रका कोई दोष नहीं है। मैंने देखा कि कहीं व्यर्थ तुम्हें चिन्ता और कष्ट न हो, इसी लिए मैंने ही मना कर दिया था।

परन्तु कामाख्यानाथने उनकी इस बातकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया और वे खिसककर ज्योतिरत्नके और पास जा पहुँचे। उन्होंने एक बार उनका ललाट छूआ और दाहिना हाथ ऊपर उठाया। थोड़ी देर तक नाड़ीकी गति देखनेके बाद उन्होंने कहा,—ज्वर तो अब भी पूरे जोरों पर दिखाई देता है। और क्या क्या शिकायतें हैं, अब इलाज किसका हो रहा है?

ज्योतिरत्नने कुछ म्लान हँसी हँसते हुए उंगलीसे अपने ललाटकी ओर संकेत किया।

महेन्द्रने कोमल स्वरसे कहा—अभी तक तो कोई दवा नहीं दी जा सकी है। डाक्टरी दवा तो आप छूते ही नहीं।

का०—डाक्टरी दवा न खायँ तो खैर कविराजी तो है। महेन्द्र, तुम्हारा इस तरह चुपचाप रहना ठीक नहीं हुआ।

महे०—मैं क्या करता? आप बराबर मना करते थे, इस लिए मैं क्या कर सकता था? आपकी आज्ञा कैसे टाल सकता था?

ज्यो०—कामाख्यानाथ, तुम व्यर्थ मेरे लिए अधिक चिन्ता मत करो। अपनी ही कही हुई बात आज क्यों भूले जा रहे हो। नियतिः केन बाध्यते।

का०—आप अभीसे ऐसे निराश क्यों हो रहे हैं, यह तो बहुत साधारण रोग है।

ज्यो०—जब आशाके साथ मेरा कोई मतलब ही नहीं है, तब फिर मैं निराश क्यों होने लगा?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


इतनेमें बाहरसे किसीने पुकारकर कहा—महेन्द्र, बाबूजी यहाँ आए हैं?

कामाख्यानाथने महेन्द्रसे कहा—देखो महेन्द्र, निरंजन आया है। तुम बाहर जाकर उससे कह दो कि जल्दी किसी आदमीको कविराज चन्द्रनाथजीको बुलानेके लिए भेजे। तुम मत जाना। यहाँ शायद तुम्हारा काम पड़ेगा। निरंजनसे आदमी भेजनेके लिए कह आओ।

महेन्द्रके वहाँसे चले जानेपर थोड़ी देर तक सब लोग चुपचाप बैठे रहे। सहसा ज्योतिरत्नने अपनी मुँदी हुई आँखें खोलीं और हँसते हुए मानो किसी अदृश्य व्यक्तिको सम्बोधन करते हुए कहा—इतने दिनों तक मैंने उसे ग्रहण नहीं किया, सदासे पौरुषको ही श्रेष्ठ मानता आया हूँ। पर अब वह भ्रम नहीं रह गया। अब प्रत्येक बातमें उसीका खेल दिखाई देता है। यह क्या? तुम कौन हो? यह कौषेय वस्त्र पहने हुई ज्योतिर्मय मूर्त्ति कौन है? तुम्हारी कैसी तेजपूर्ण मूर्त्ति है कि आँख ही नहीं ठहरती। क्या तुम कात्यायनीके भाग्यविधाता हो?

कामाख्यानाथ बहुत ही चकित हुए। ज्योतिरत्न महाशय टकटकी लगाए उन्हींकी ओर देख रहे थे। उनके आँखोंके भाव और असम्बद्ध बातोंसे उन्होंने समझ लिया कि रोगीके मस्तिष्कमें विकार आ गया है। उन्होंने भग्न स्वरसे कहा—आप क्या कह रहे हैं? मैं आपके लड़केके समान कामाख्यानाथ हूँ। आप क्या मुझे नहीं पहचानते?

ज्यो०—क्या मैं नहीं पहचानता? किसे नहीं पहचानता? कात्यायनी, क्या मेरी बुद्धि भ्रष्ट गई हो है, क्या मैं यों ही बक रहा हूँ?

कात्यायनी खिसककर पिताके मुँहके पास आ गई और उनके मुँहके पास अपना मुँह ले जाकर कोमल स्वरसे बोली—नहीं बाबूजी।

ज्यो०—देखो, मैं तुम्हें तो पहचान रहा हूँ। देखो यह तुम्हारी माता है। तब कौन कहता है कि मेरा ज्ञान नष्ट हो गया है?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.



का०—नहीं बाबूजी, यह तो किसीने नहीं कहा। मैं तुम्हारे सिर-पर हाथ फेरती हूँ। तुम सोओ।

यह कहकर कात्यायनीने ज्योतिरत्नके सिरपर हाथ फेरना आरम्भ किया और वे विवश बालककी भाँति आँखें बन्द करके पड़ रहे।

कामाख्यानाथ चुपचाप सिर झुकाए हुए बैठे थे। इतनेमें उनके कानमें कोमल स्वर सुनाई पड़ा—कविराजके आनेमें कितनी देर है? उन्होंने चकित होकर सिर उठाया और देखा कि सामने आँखोंमें जल भरे हुए कात्यायनी खड़ी यह प्रश्न कर रही है।

कामाख्यानाथने उसी प्रकार कोमल स्वरमें उत्तर दिया—कुछ देर तो होगी ही। उनका मकान यहाँसे कुछ दूर है। इनकी यह अवस्था कबसे है?

का०—यह अवस्था तो अभी पहले पहल दिखाई दे रही है। ज्वर आज पाँच दिनोंसे अवश्य है, परन्तु अभी तक इस प्रकारका प्रलाप देखनेमें नहीं आया।

का०—कविराजको जो नहीं दिखलाया गया, यह बहुत ही अनुचित हुआ। यदि इस बीचमें आपने कमसे कम मुझको ही खबर भेज दी होती, तो भी एक बात थी।

कात्यायनी कोमल स्वरमें मानो आप ही आप कहने लगी—इनके साहसके कारण हम लोगोंमें भी साहस आ गया था। पहले ज्वर होनेपर वे कभी दवा नहीं खाते थे, इसलिए हम लोगोंने इस बार भी दवा आदिकी आवश्यकता नहीं समझी। आजसे दो दिन पहले तक हम लोगोंकी समझमें यह बात नहीं आई थी कि यह बीमारी इतने जोरोंकी है। इसी लिए अन्तमें आपको भी इतना कष्ट करना पड़ा।

केवल—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.



इससे और आगे कात्यायनीसे कुछ कहा नहीं गया। आशंकाके कारण वह कुछ काँपने लगी और कष्टपूर्ण दृष्टिसे एक बार कामाख्यानाथकी ओर देखकर उसने सिर झुका लिया।

कामाख्यानाथ भी बहुत दुखी हुए और कुछ देर तक चुपचाप बैठे रहे। अन्तमें उन्होंने सोचा कि यदि रमाको भी यहाँ बुला लिया जाय तो अच्छा हो।

इतनेमें महेन्द्रने धीरे धीरे कोठरीमें आकर मृदु स्वरसे कात्यायनीसे कहा—जरासा तुम बाहर जाओ। देखो माँ वहाँ बहुत अधीर हो रही हैं।

कात्यायनीने आँख उठाकर देखा तो उसे मालूम हुआ कि अपने स्वामीका ज्ञान इस प्रकार नष्ट होता हुआ देखकर अधीर साध्वी कभीकी कोठरीके बाहर चली गई है। उसने ज्यों ही वहाँसे उठना चाहा, त्यों ही ज्योतिरत्नने कुछ कुछ आँखें खोलकर पुकारा—बेटी कात्यायनी।

कात्यायनी 'बाबूजी' कहकर तुरन्त ही फिर वहीं बैठ गई और पिताके मस्तकपर हाथ फेरने लगी। साथ ही उसने इशारेसे महेन्द्रको समझा दिया कि मेरा यहाँसे उठना नहीं हो सकता। तुम माँके पास जाओ और वहीं रहो। इसपर महेन्द्र उठकर बाहर चला गया। कामाख्यानाथ रोगीके मुँहकी ओर देखते हुए चुपचाप बैठे रहे।

इतनेमें कविराजजी भी आ पहुँचे। एक साथ कई आदमियोंके पैरोंकी आहट सुनकर ज्योतिरत्न फिर जाग पड़े। सब लोगोंकी ओर आश्चर्यभरी दृष्टिसे देखते हुए उन्होंने कहा—तुम लोग कौन हो? कामाख्यानाथ नहीं हैं? महेन्द्र ये सब लोग कौन हैं?

कामाख्यानाथने उत्तर दिया—यह मेरा लड़का निरंजन है और ये कविराजजी हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ज्यो०—कविराजकी क्या आवश्यकता है ? अब तो मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मेरे शरीरमें कोई रोग ही नहीं है। मैं तो बड़े आरामसे सोया हुआ था। मैंने कैसा विलक्षण स्वप्न देखा था। ओह! ब्राह्मणी कहाँ है ? मुझे एक दिव्य कान्तिवाले और कौषेय वस्त्र पहने हुए देवता दिखाई दिए थे। उन्हींके हाथमें मैं कात्यायनीको समर्पित करता हूँ।

कविराजने बहुत देर तक रोगीको बहुत अच्छी तरह देखा, बहुतसे प्रश्न किए और अन्तमें कई प्रकारकी गोलियाँ आदि देकर और सब व्यवस्था बतलाकर वे उठ खड़े हुए। खड़े होकर उन्होंने कहा—ज्यों ही अवस्थामें किसी प्रकारका परिवर्तन हो त्यों ही मुझे खबर दी जाय। और नहीं तो फिर सन्ध्या समय मैं स्वयं ही आऊँगा।

कविराजजीके साथ कामाख्यानाथ और महेन्द्र आदि भी बाहर निकल आए। आँगनसे बाहर निकलकर कामाख्यानाथने कविराजसे पूछा—क्या हाल है ?

कवि०—हाल तो अच्छा नहीं माळूम होता। पूर्ण रूपसे विकार है। नाड़ी बहुत ही खराब है। बहुत होशियार रहनेकी आवश्यकता है।

कुछ देर तक चुप रहनेके उपरान्त कामाख्यानाथने फिर पूछा, अच्छे हो जानेकी आशा तो है न ?

कवि०—यह तो भगवानके हाथ है। आदमियोंकी कही हुई कोई बात यहाँ काम नहीं आती। हाँ जो कुछ हो सकता है, उसमें किसी प्रकारकी त्रुटि न होनी चाहिए। बस इतना ही।

कविराज चले गए। कामाख्यानाथने निरंजनसे कहा—जाकर रमासे सब हाल कह दो। इनकी बीमारी भारी जान पड़ती है। पर इससे ज्यादा और कुछ मत कहना और यदि वह यहाँ आना चाहे तो उसे अपने साथ ही लेते आना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


निरंजन चुपचाप वहाँसे चला गया । दिन बहुत चढ़ आया था । पिताजीने अभी तक स्नान और पूजन आदि भी नहीं किया था । पर फिर भी इस विषयमें उनसे कोई बात कहनेका निरंजनको साहस नहीं हुआ । बल्कि उसने यही सोचा कि अभी इस बातकी चर्चा करना ठीक नहीं है । तिसपर पिताजी गाँवके सभी लोगोंके कठिन अवसरपर इसी प्रकार उपस्थित रहा करते थे । वह लड़कपनसे ही पिताजीको इसी प्रकार सबके यहाँ मौजूद रहते देखता था और स्वयं भी उसने ऐसा ही करनेकी शिक्षा पाई थी । परन्तु रमाका हृदय बहुत ही कोमल था और ऐसे अवसरोंपर वह बहुत ही विह्वल हो जाया करती थी । यह सब कुछ जानते हुए भी पिताजीने रमाको जो समाचार सुनानेके लिए कहा था उससे यही सूचित होता था कि ज्योतिरत्नके परिवारपर भारी विपत्ति आनेवाली है । यदि यह बात न होती तो वे रमासे कभी यह समाचार कहनेके लिए आदेश न देते । क्योंकि निरंजन यह बात अच्छी तरह जानता था कि जहाँ तक हो सकता है पिताजी रमाको सब प्रकारके सांसारिक दुःखों और कष्टोंसे सदा दूर ही रखना चाहते हैं । घरपर रमाके पास उसके इतने अधिक अनाथ और आर्त्त आश्रित आया करते थे कि जिनकी कोई गिनती नहीं थी । उसके उन पुत्रों और कन्याओंके सब प्रकारके अभाव तथा दुःख आदि दूर करनेके लिए कामाख्यानाथ सदा मुक्तहस्तसे धन व्यय किया करते थे । परन्तु फिर भी रमा सदा उनके स्नेहरूपी गोदकी सीमाके अन्दर ही निवास किया करती थी । केवल मन्दिरको छोड़कर वह और कहीं नहीं जाती थी । ज्योतिरत्न महाशयके बीमार होनेपर पिता केवल कर्तव्यज्ञानसे ही यह सब कुछ नहीं कर रहे हैं । और दिनों दूसरे लोगोंके यहाँ जो इस प्रकारकी घटनाएँ हुआ करती थीं उनमें और आजकी घटनामें बहुत अन्तर है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ज्योतिरत्नपर उनकी देवताकी भाँति श्रद्धा और भक्ति थी। निरंजनको भी यह बात मालूम हो गई थी कि पिताजी इस समय मन ही मन बहुत व्याकुल हो रहे हैं। और रमा? कात्यायनीके इस सर्वनाशकी सम्भावनासे वह भी मन ही मन न जाने कितनी दुखी हो रही होगी। यही सब बातें सोचकर निरंजनने जल्दी जल्दी घरकी ओर पैर बढ़ाए।

कामाख्यानाथके पीछे पीछे चलकर महेन्द्रने भी कोठरीमें प्रवेश किया। वहाँ पहुँचकर महेन्द्र पास ही पड़ी हुई एक छोटी चौकीपर बहुत उदास होकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद कामाख्यानाथने उसके मस्तकपर हाथ रखकर कहा—देखो औरतोंकी तरह अधीर मत हो। परन्तु इतना कहते कहते उन्हें कात्यायनीकी आशंकासे काँपती हुई दुखी और दृढ़ मूर्त्तिका ध्यान आगया और उन्होंने अपने मुँहसे निकलती हुई बात वहीं रोक ली, आगे कुछ नहीं कहा। कविराजने जिस प्रकार बतलाया था उसी प्रकार रोगीको औषध आदि दी गई। ब्राह्मणीको कुछ कुछ आशा होने लगी और वह फिर अपने स्वामीके पास आ बैठी। महेन्द्र रोगीके मस्तकपर हवा करने लगा।

कात्यायनी जब कविराजके आदेशके अनुसार पथ्य आदि तैयार करनेके लिए उठी तब उसने दो एक बार कामाख्यानाथकी ओर देखकर अन्तमें सिर झुकाकर बहुत ही धीरेसे कहा,—बहुत देर हो रही है। आप भी स्नान भोजन आदि करें।

का०—हाँ मैं भी अब जाता हूँ। महेन्द्र, चलो तुम भी हमारे साथ चलकर कुछ खा पी आओ।

महेन्द्र वहाँसे उठना नहीं चाहता था। इसपर कात्यायनीने कहा,—कलसे तुमने कुछ खाया पीया नहीं है। (कामाख्यानाथसे) आप चलें, ये थोड़ी देरमें आते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कामाख्यानाथने महेन्द्रकी ओर देखकर कहा—जान पड़ता है कि इन लोगोंने भी कुछ खाया पीया नहीं है। रमा अभी आती होगी। मन्दिरसे प्रसाद—

महे०—आप चिन्ता न करें। मन्दिर तो पास ही है। यदि आवश्यकता होगी तो वहींसे प्रसाद मँगवा लिया जायगा।

कामाख्यानाथने एक बार कात्यायनीकी ओर देखा। उसकी मूर्ति ठीक उसी दीपककी भाँति जान पड़ती थी जो बिना हवाके स्थानमें शान्त और अचंचल रहता है। पर साथ ही उसकी ज्वालामय दाहिका शक्ति उसके समस्त धैर्य और संयमको जलाकर राख कर देनेके लिए वैसी ही उज्ज्वल और उन्मुख हो रही थी। यद्यपि ऊपरसे देखनेमें उसका धैर्य पर्वतके समान अटलता प्रकट कर रहा था, पर ऐसा जान पड़ता था कि अन्दर ही अन्दर समुद्र-गर्जनकी भाँति ऊँची और वेगवती तरंगें उठ रही थीं और उनके आघातसे पत्थरका जो अधीर क्रन्दन हो रहा था उसका शब्द बाहर तक सुनाई पड़ता था। उस बालिकाके मुखकी ओर देखकर प्रवीण कामाख्यानाथकी आँखोंमें भी जल भर आया। उन्होंने बहुत ही कोमल स्वरमें कात्यायनीसे कहा—विपत्तिके समय अधीर नहीं होना चाहिए।

का०—नहीं।

कामा०—अपनी माँको भी धीरज दो। अभी बहुत कुछ आशा है।

कात्यायनीने सिर उठकर कामाख्यानाथकी ओर देखा। उसकी दृष्टिसे ही कामाख्यानाथने समझ लिया कि इसे धैर्य दिलाना अनावश्यक है। उन्होंने भग्न स्वरसे कहा—ईश्वरकी इच्छा।

कात्यायनी चुपचाप खड़ी रही। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। कामाख्यानाथने महेन्द्रसे कहा, अच्छा अब मैं जाता हूँ। स्नान पूजन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


और भोजन आदि करके जल्दी ही आता हूँ। तुम भी देर मत करना। यहाँका जो काम हो वह समाप्त करके जल्दी चले आना। इसके उपरान्त उन्होंने कात्यायनीकी ओर देखकर कहा—मैं रमाको अभी भेज देता हूँ।

कात्यायनीने अस्फुट स्वरमें कहा,—रमा? उसे यहाँ भेजनेकी तो कोई ऐसी आवश्यकता नहीं है। व्यर्थ ही कष्ट देना है। आप तो हैं ही—

कामा०—उसीने मुझे इनकी बीमारीका हाल सुनाया था। उसके कहनेसे पहले मुझे कुछ मालूम ही नहीं था। वह तो आप ही यहाँ आनेके लिए छटपटा रही थी। जान पड़ता है कि मैं अभी तक वहाँ नहीं गया, इसी लिए वह अभी तक यहाँ नहीं आई। देखो जब गोविन्ददेवका प्रसाद आवे तब माँको जरूर उसमेंसे जबरदस्ती कुछ खिला देना। तुम समझदार हो। यदि तुम्हीं अधीर होगी तो माँ तो और भी अधिक अधीर होंगी। तुम यह तो जानती ही हो कि यदि तुम लोग भोजन न करोगी तो रोगीकी सेवा शुश्रूषामें भी त्रुटि होने लगेगी।

कात्यायनीने चुपचाप सिर झुकाकर स्वीकृति प्रकट की।

कामा०—यदि इस बीचमें ही कोई आवश्यकता आ पड़े तो मुझे खबर देनेमें संकोच मत करना।

कात्या०—जी नहीं।

कामा०—महेन्द्र, देखो तुम भी ज्यादा देर मत करना।

इतना कहकर कामाख्यानाथ वहाँसे चले गए। कात्यायनीने रोगीको पथ्य देकर महेन्द्रसे कहा,—इस समय तो तबीयत जरा ठहरी हुई मालूम होती है। तब तक तुम जाकर भोजन कर आओ।

महे०—तुम लोगोंने भी तो कलसे कुछ खाया नहीं है। मैं नहीं जाऊँगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कात्या०—तुमने सुन तो लिया ही कि प्रसाद आवेगा। इसलिए अब जाओ, तुम भी खा आओ।

माताने कहा—नहीं रहने दो। महेन्द्र भी उसी प्रसादमेंसे कुछ ले लेगा। यह चला जायगा तो मुझे डर लगने लगेगा।

कात्या०—अच्छी बात है। रहने दो।

थोड़ी देरमें कात्यायनीने देखा कि निरंजन दरवाजेके पास एक ओर खड़ा हुआ है। उसने समझ लिया कि रमा आई है। इसलिए वह पिताके पाससे उठकर दरवाजेके पास गई। निरंजन जल्दीसे कुछ पीछे हट गया। कात्यायनीने देखा कि रमा मुँह ढके हुए दीवारके साथ बिलकुल सटी हुई खड़ी है। उसके समस्त शरीरसे मानो एक सहानुभूतिपूर्ण कुंठा प्रकट हो रही है। कात्यायनीने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा—रमा, तुम आज इस समय यहाँ कैसे आई?

ज्यों ही कात्यायनीने रमाका हाथ पकड़ा त्यों ही रमा अस्फुट स्वरमें रोने लगी। वह कात्यायनीके गलेसे लिपट गई और उसकी गोदमें मुँह छिपाकर आती हुई रुलाईको उसने जबरदस्ती रोका। रमाके इस व्यवहारसे कात्यायनीका कुंठा और दूरत्ववाला भाव जाता रहा और उसकी आँखोंमें भी आँसू भर आए। रमाके स्पर्शसे ही कात्यायनी बहुत विह्वल हो गई और वह भी रोती हुई इसी प्रकार किसीके गलेसे लिपटनेके लिए उत्सुक होने लगी। परन्तु फिर भी कात्यायनीने बड़े कष्टसे अपने मनका वह आवेग रोका और अपने आँसू पोंछकर भग्न स्वरसे कहा—रमा, तुम इस जलती हुई आगमें क्यों आई? तुमसे तो यह सब देखा नहीं जायगा। मुझसे तुमसे भेंट तो हो ही गई। अब तुम लौट जाओ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


परन्तु रमाने कात्यायनीकी इस बातका कोई उत्तर नहीं दिया, उसने कात्यायनीको और भी जोरसे पकड़कर दबा लिया। कात्यायनी उसका मतलब समझ गई, इसलिए उसने लाचार होकर कहा—अच्छा, तो फिर अन्दर चलो।

कात्यायनीका आँचल पकड़े हुए रमाने उसके साथ घरमें प्रवेश किया और वह ज्योतिरत्नकी शय्याके पास कात्यायनीसे सटकर बैठ गई। यद्यपि अवस्थामें वह कात्यायनीसे कुछ छोटी थी; परन्तु फिर भी उसे कात्यायनीका स्वभाव बिलकुल छोटी बालिकाके समान ही जान पड़ता था। ज्योतिरत्नकी ओर उसने केवल एक बार देखा था। फिर दोबारा उनकी ओर देखनेका उसे साहस ही नहीं होता था। वह चुपचाप कात्यायनीकी पीठके पीछे मुँह छिपाए हुए काठ होकर बैठी हुई थी। कात्यायनीने फिर एक बार मनमें सोचा कि ऐसे समयमें उन लोगोंने रमाको यहाँ भेजकर अच्छा नहीं किया। अपनी किसी असुविधाकी बातको उसने मनमें नहीं आने दिया। उसने केवल यही सोचा कि क्यों व्यर्थ इन लोगोंको इतना कष्ट होने दिया जाय। विधिका विधान तो किसी प्रकार टलेगा ही नहीं, तो फिर हम लोगोंके कारण इन लोगोंको क्यों व्यर्थ इतना कष्ट हो। जो रमा इतिहासों और पुराणों आदिमें कही हुई करुण कहानियाँ सुनकर भी धैर्य नहीं धारण कर सकती, उसे जब इस प्रकार अपने किसी स्नेहभाजन व्यक्तिकी विपत्तिके क्षेत्रमें उपस्थित रहना पड़ेगा तब वह अधिक समयतक धीरतापूर्वक यह दृश्य न देख सकेगी। जिसका अन्तःकरण इतना कोमल हो उसे ऐसे अवसरोंपर सदा दूर ही रहना चाहिए।

अब निरंजनने फिर आगे बढ़कर आवाज दी—महेन्द्र बाबू, आइए। बाबूजी आपका आसरा देख रहे हैं। और देखिए ये लोग मन्दिरसे प्रसाद लाए हैं। यह ले लीजिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


कात्यायनीने महेन्द्रकी ओर देखा, पर उसने चुपचाप सिर झुकाकर मानो अस्वीकार कर दिया । लाचार होकर कात्यायनीने स्वयं दरवाजेपर जाकर धीरेसे कहा—महेन्द्रको यहीं रहने दीजिए । वह इसी प्रसादमेंसे यहीं कुछ ले लेंगे । वह चले जायँगे तो हम लोगोंसे यहाँ रहा नहीं जायगा ।

निरंजनने सरल आग्रह जतलाते हुए कहा—आप लोग अकेली क्यों रहेंगी ? जब तक वे लौटकर नहीं आवेंगे तबतक मैं यहाँ रहूँगा ।

का०—आप लोग इतना घबरायँ नहीं । घबरानेसे तो कोई लाभ नहीं । आप जायँ और रमाको भी लेते जायँ । शायद वह आपका ही रास्ता देख रही हैं ।

निरंजन चुपचाप खड़ा रहा । कात्यायनीका धीर परन्तु विषादयुक्त स्वर सुनकर वह कुछ भी निश्चय न कर सका कि अब क्या करना चाहिए । मानो निरुपाय होकर उसने फिर आवाज दी—महेन्द्र बाबू ।

पर महेन्द्रने कोई उत्तर नहीं दिया । उसने ऐसा भाव दिखलाया कि मानो निरंजनके साथ उसकी कभीकी जान पहचान ही नहीं है । कात्यायनीने देखा कि महेन्द्र तो निरंजनकी बातका कोई उत्तर ही नहीं दे रहा है, इसलिए वह भी चुपचाप खड़ी रही । इतनेमें रमाने बाहर निकलकर अपने भाईसे कहा—भइया, अब तुम जाओ । इन लोगोंका इस समय यहाँसे हटना ठीक नहीं है । तुम व्यर्थ देर मत करो ।

लाचार होकर निरंजन वहाँसे चला गया । कात्यायनीने रमाकी ओर देखकर कहा—रमा तुम नहीं गईं, तुम भी चली जाओ न ?

परन्तु रमाने कात्यायनीकी बात मानो सुनी ही नहीं । जो दो ब्राह्मण मन्दिरसे प्रसाद लेकर आए थे उनके हाथसे उसने एक एक करके दोनों थाल ले लिए और उन्हें बिदा कर दिया ।

---

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


# चौथा परिच्छेद ।

बुझते हुए दीपकमें और तेल देनेकी आवश्यकता नहीं हुई । बहुत शीघ्र ज्योतिरत्नका अन्तिम काल आ उपस्थित हुआ ।

न तो उस दिन और न उसके बाद रातको ज्योतिरत्नके ज्ञानमें किसी प्रकारका विभ्रम दिखलाई दिया । वे सबके साथ सहज भावसे बातें करते रहे । अपनी पत्नीको उन्होंने बहुत कुछ ढारस दिया और महेन्द्रको बार बार आशीर्वाद दिया । कात्यायनीके विवाहके सम्बन्धमें उन्होंने कामाख्यानाथसे कहा—मेरी कन्याके विवाहके लिए तुम अधिक चिन्ता मत करना । हम लोग मुख्य कुलीन हैं । हमारे कुलोंमें बहुतसी कन्याएँ जन्म भर कुँआरी ही बैठी रहती हैं । मैंने जो कुछ किया है, उसके कारण कात्यायनीके भाग्यके सम्बन्धमें कदाचित् कुछ सन्देह उत्पन्न हो गया है । उसके लिए उपयुक्त पात्र ढूँढ़नेके लिए तुम किसीके कृपाप्रार्थी मत होना । इतनी चिन्ता भी मुझसे सही नहीं जाती । तुम लोग कभी कोई ऐसा काम मत करना जिससे लोग मेरी गौरीके समान कन्याको कुलक्षणी समझकर उसका निरादर करें ।

कामाख्यानाथने बहुत ही धीरेसे उत्तर दिया—आपकी कन्याके सम्बन्धमें लोगोंके मुँहसे इस प्रकारकी उच्च भावनाएँ भी सुनी जाती हैं, इस लिए आप इस बातकी जरा भी चिन्ता न करें कि लोग आपकी कन्याको कुलक्षणी समझकर उसका निरादर करेंगे । इसी लिए मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूँ कि जहाँ तक हो सकेगा, कोई उपयुक्त पात्र ढूँढ़कर मैं उसे आपकी कन्या देनेका विचार करता हूँ । आप कृपा कर इसके लिये मुझे आज्ञा प्रदान करें ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


परन्तु ज्योतिरत्नने कामाख्यानाथको यह बात पूरी तरहसे कहने ही नहीं दी। उन्होंने मानो उनकी यह बात सुनी ही नहीं और आप ही आप कहना आरम्भ किया—जब मैं ही किसी उपयुक्त पात्रको उसका हाथ न पकड़ा सका, तब मैं समझता हूँ कि उसके भाग्यमें आजन्म कुमारी रहना ही लिखा है। और भाग्यका लिखा भला कौन मिटा सकता है? इसी लिए लाख चेष्टा करनेपर भी मैं सफल नहीं हो सका था।

ब्राह्मणीने रुँधे हुए गलेसे कहा—तुम मुझे यह अनुमति दे दो कि मैं महेन्द्रको कात्यायनीका हाथ पकड़ा दूँ।

यह सुनते ही ज्योतिरत्न मानो बहुत ही डर गए और विचलित होकर चिल्ला उठे—नहीं नहीं, कदापि नहीं। अब भी भाग्यके साथ युद्ध कर रहा हूँ और यही युद्ध करते करते मरूँगा। मेरा यह युद्ध अब बन्द नहीं होगा। मेरे प्राणोंसे भी प्यारे बेटे महेन्द्र, आओ मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँ। बस, तुम इस आशीर्वादसे ही सन्तुष्ट रहो।

ज्योतिरत्नका उठा हुआ हाथ धीरे धीर फिर नीचे गिर गया। महेन्द्र चुपचाप बिना हिले डुले जहाँका तहाँ बैठा रहा। थोड़ी देर बाद ज्योतिरत्न फिर मानो आप ही आप कहने लगे—स्वकर्मफलभुक् पुमान्। मैं भूल रहा हूँ। सब बातें भूल रहा हूँ। नमस्तत्कर्मेभ्यः। इसी लिए जब महेन्द्र पढ़ने लिखनेकी ओरसे मन हटाकर काम-काजकी शिक्षाकी ओर ध्यान देता था तो मैं सदा दुखी होता था, कभी सन्तुष्ट नहीं होता था। मैं अभी तक यह न जान सका कि यह किसकी कुटिल गति है। अरे वह कौन है? कौन है? ओह!

ज्योतिरत्नने सहसा पास ही बैठी हुई कन्याको स्पर्श करके कहा—बेटी कात्यायनी।

कात्यायनीने उत्तर दिया—हाँ बाबूजी।


CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कन्या अपने पिताके मस्तकपर झुककर इस बातकी प्रतीक्षा करने लगी कि पिताजी कुछ कहें। परन्तु ज्योतिरत्नने फिर उसकी ओर नहीं देखा और वे आप ही आप बड़बड़ाने लगे—कामाख्यानाथ—ओह! ईश्वर मुझसे अन्तिम मुहूर्त्त तक बोल रहे हैं, जिससे मैं यह प्रलोभन संवरण कर सकूँ। कामाख्यानाथ, देखो विधाताका विधान कैसा विलक्षण है! कात्यायनी अब पूरे सत्रह वर्षोंकी हो गई है। बस अब इसी समय एक बार उसके विवाहका अनुकूल योग उपस्थित होगा। केवल शुक्रके क्रूर दृष्टिपातकी ही आशंका थी। महापुरुष स्वामी प्राप्त करके भी वह सुख नहीं भोग सकती। हाँ, ऐसा ही जान पड़ता है। पर नियतिकी यह कैसी विचित्र लीला है! कहाँ तो आज इसका विवाह—नहीं, आज वह आत्मीयों और स्वजनोंसे बिलकुल रहित हो गई है, वह निस्सहाय और आश्रयहीन हो रही है। ओह! देखो फिर भूला जा रहा हूँ। शनि तो उसके पिता माताके सम्बन्धमें भी शत्रु हो रहा है। लेकिन उसका फल इतनी जल्दी—

कामाख्यानाथने कुछ दृढ़ होकर कहा—यदि आप इस समय भी मुझपर कोई भार नहीं रक्खेंगे तो मुझे जन्मभर इसका दुःख रहेगा। क्या आप मुझे अपनी स्त्री, कन्या और पुत्रकी रक्षा करने या यथासाध्य कन्याका विवाह करनेकी आज्ञा नहीं देंगे? आप मुझपर इतना स्नेह रखते आये हैं, लेकिन ऐसे समय भी आप मुझपर कोई भार नहीं छोड़ेंगे?

मृत्युशय्यापर पड़े हुए ब्राह्मणने स्निग्ध नेत्रोंसे कामाख्यानाथकी ओर देखकर कहा—कामाख्यानाथ, तुम कौनसा भार उठाना चाहते हो? कन्याके विवाहका? यदि उसका विवाह होनेको ही होता तो—। परन्तु वह बात जाने दो। मुझे तो उसका केवल एक ही उपाय दिखलाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


पड़ता है। परन्तु वह उपाय हो ही नहीं सकता। इसी लिए मैं कहता हूँ कि मेरी कन्या जन्मभर कुमारी ही रहेगी। मेरा यह आदेश स्मरण रखना।

कामा०—जरा मैं भी सुनूँ कि वह उपाय क्या है। मैं वही उपाय करनेकी पूरी पूरी चेष्टा करूँगा। आप केवल यह बतला दीजिए कि वह उपाय क्या है?

ज्योतिरत्नने जोरसे मुँह बन्द कर लिया। कुछ देरतक चुप रहनेके उपरान्त उन्होंने फिर कोमल स्वरसे कहा—इन लोगोंकी देखरेख रखनेकी बात कहते हो? वह यदि तुम न करोगे तो फिर और कौन करेगा? इन लोगोंके भरण पोषणकी कोई चिन्ता नहीं है। महेन्द्र सब प्रबन्ध कर लेगा। वह इस ब्राह्मणीके लड़केकी जगह है। लेकिन फिर भी वह लड़का ही है। कामाख्यानाथ, इन लोगोंके रक्षणावेक्षणका सारा भार मैं तुम्हींपर छोड़े जाता हूँ। तुम्हीं इन लोगोंका शुभाशुभ देखना और और इन्हें उत्तम परामर्श देना। कामाख्यानाथ, एक बात और कहता हूँ। जरा भाग्यका रहस्य देखो! फिर प्रकारान्तरसे तुम्हींपर मुझे कात्यायनीका सब भार रखना पड़ा। उस दिन जब तुम बिना बुलाए आप ही आप व्यग्र होकर दौड़े आए थे, तभी मैंने समझ लिया था कि अन्तमें यही होगा।

कामा०—भला आप यह कौनसा बहुत बड़ा भार मुझे दे रहे हैं। और इतनासा देनेमें भी क्या आपको कष्ट होता है?

ज्यो०—नहीं, कष्ट क्यों होने लगा। उस दिन तुम्हारी जन्मपत्री देखते ही मुझे यह सन्देह हुआ था। बस यही विधिलिपि है। खैर, उस बातको जाने दो। महेन्द्र, महेन्द्र, जरा एक बार तुम मेरे पास आओ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


जब महेन्द्र पास आ गया तब ज्योतिरत्नने बड़े कष्टसे उसका एक हाथ पकड़ा और धीरे धीरे वह हाथ कामाख्यानाथके ऊपर रख दिया। फिर बहुत ही धीरे धीरे कहना आरम्भ किया—देखो कामाख्यानाथ, मैं अपने इस महेन्द्रको तुम्हारे हाथ सौंपता हूँ। तुम सदा इसका ध्यान रखना और इसपर स्नेहकी दृष्टि रखना। इसके मंगल अमंगलपर ध्यान रखना। बस, यही मेरा अनुरोध है। कात्यायनीके सम्बन्धमें अब मुझे कोई चिन्ता नहीं है। जितनी चिन्ता—

ज्योतिरत्न क्रमशः निस्तेज होते जा रहे थे और उनकी बोली धीरे धीरे बन्द होती जा रही थी। वे बीच बीचमें न जाने क्या अस्पष्ट रूपसे कहने लगे। यद्यपि कामाख्यानाथ बहुत ही ध्यानसे उनकी बातें सुनना चाहते थे, पर फिर भी उन्हें कुछ सुनाई या समझाई नहीं देता था। बस बार बार कभी तो स्पष्ट रूपसे और कभी अस्पष्ट रूपसे चार आँच शब्द सुनाई पड़ते थे। वही महेन्द्र, कात्यायनी, कामाख्यानाथ, अदृष्ट, नियति, विधिलिपि आदि। बीचमें केवल एक बार वे कुछ जोरसे बोल उठे थे कि ओह! क्या वह इतना बलवान् है? क्या किसी प्रकार उसका उल्लंघन हो ही नहीं सकता? होगा, अवश्य होगा।

कामाख्यानाथने समझ लिया कि ज्योतिरत्न जन्मभर जिस विषयकी चिन्ता और आलोचना करते रहे हैं वह विषय मृत्युके समय भी उनका पीछा नहीं छोड़ रहा है। जन्म भरका किया हुआ काम उनके निष्प्रभ मस्तिष्कमें अब भी चक्कर लगा रहा है और मृत्युके समय भी उन्हें चैन नहीं लेने देता। इससे कामाख्यानाथको बहुत मनस्ताप हुआ और वे चुपचाप ज्योतिरत्नके मुँहकी ओर देखते हुए बैठे रहे।

रात्रि गम्भीर हो चली और पृथ्वी निस्पन्द हो गई। उस अँधेरे मकानके छोटे आँगनमें एक दीपक छोटे तारेके समान टिमटिमा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ज्योतिरत्न बहुत देरसे श्रान्त होकर सोए हुए हैं और घरके बाकी सब लोग बैठे जाग रहे हैं। कविराज महाशय बराबर रोगीकी नाड़ी देख रहे हैं। ब्राह्मणी चुपचाप अपने स्वामीके पैरोंके पास पड़ी हुई है। पास ही भीतिविह्वल पत्थरकी मूरतकी तरह निश्चेष्ट और निर्वाक् रमा बैठी हुई है। मुमूर्षुके मुखके पास एक ओर कात्यायनी और दूसरी ओर कुछ दूरीपर बैठे हुए कामाख्यानाथ टक लगाए हुए ज्योतिरत्नके मुखके भावोंके परिवर्तन ध्यानपूर्वक देख रहे हैं।

सहसा रोगीकी अवस्था चरम सीमापर जा पहुँची। कविराजने कहा—अब देर नहीं है। अन्त कालके जो कुछ विधान हैं वे सब किए जायँ।

जब सभी लोग चुपचाप बठे रहे तब अन्तमें विवश होकर कामाख्यानाथ उठकर खड़े हो गए और निरंजनके द्वारा उन्होंने सब व्यवस्था कराई। बहुत धीरेसे मुमूर्षुको लोग उठाकर बाहर आँगनमें लाए और वहीं तुलसीके थालेके पास लेटा दिया। किसीने गंगातटपर ले चलकर अर्घ्योदक देनेके लिए कहा। परन्तु कामाख्यानाथने कहा कि यदि ज्ञानकी अवस्थामें उन्होंने ऐसा करनेके लिए कहा होता, तब तो ऐसा करना ठीक था। और नहीं तो यह सिवा इन्हें और अधिक कष्ट देनेके और कुछ नहीं है। आखिर यह भी तो गंगाका तट ही है।

थोड़ी देर बाद ऐसा जान पड़ा कि ज्योतिरत्नके शरीरमें बिजली दौड़ गई। उन्होंने बहुत ही स्पष्ट स्वरमें पुकारा—कहाँ हो बेटी कात्यायनी, हमारे पास आओ।

आवाज सुनते ही सब लोग चौंक पड़े। कात्यायनी पास ही बैठी हुई थी। पिताका पुकारना सुनते ही वह अधीर हो गई और उनके मुँहके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पास पहुँचकर दोनों हाथ उनके गलेमें डालकर जोरसे चिल्ला उठी—बाबूजी बाबूजी

कामाख्यानाथने किसी तरह उसे पकड़कर सँभालते हुए कहा—हें कात्यायनी! यह क्या कर रही हो? ठहरो ठहरो, जरा ठहरो। धीरज धरो। इस समय उन्हें और अधिक कष्ट मत दो।

ज्यो०—कौन, कामाख्यानाथ?

कामा०—जी हाँ, मैं हूँ। आप ईश्वरका नाम लें, भगवानको याद करें। कहिए—नारायण परावेदा नारायण—।

ज्यो०—कहता हूँ। ओह! कैसी तीव्र ज्योति दिखलाई देती है! यही मेरी कात्यायनीका भाग्यनियामक नक्षत्र है। प्रसन्न होओ। मैं अन्धा और मूढ़ हूँ। अब मैं तुम्हारे विरुद्ध युद्ध नहीं करूँगा। कामाख्यानाथ, यह लो, कात्यायनीको मैं तुम्हारे हाथमें सौंपता हूँ। अब कहो क्या कहूँ—चलो, मुझे गंगातटपर ले चलो और अर्घ्योदक दो। कहो—नारायण परावेदा नारायण पराक्षरा, नारायण परामुक्ति नारायण परागति। ओम् नारायण—ओम्।

इतना कहते कहते आत्मा शरीरसे मुक्त हो गई।

* * * *

यथासमय कात्यायनीने ज्योतिरत्नका श्राद्ध आदि किया। महेन्द्र केवल पालित पुत्र था, इसलिए शास्त्रके अनुसार वह इन सब कर्मोंका अधिकारी नहीं था। धीरे धीरे दिन बीतने लगे। अब महेन्द्र प्रायः दिन रात घरपर ही रहा करता था। वह ब्राह्मणीके पास रहकर सब कार्योंमें कात्यायनीकी सहायता किया करता था। कामाख्यानाथ नित्य आकर इन लोगोंका हाल चाल पूछ जाया करते थे। सन्ध्याको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


जब मन्दिरमें आरती हो जाती थी तब वे अपनी कन्या रमाके साथ आया करते थे और ब्राह्मणीको प्रणाम कर जाया करते थे। यद्यपि कात्यायनीसे मिलनेकी रमाकी बहुत अधिक इच्छा रहती थी, पर महेन्द्र दिन भर घरमें रहा करता था इसलिए वह नहीं आ सकती थी। केवल सन्ध्या समय अपने पिताके साथ आया करती थी और कात्यायनीके पास थोड़ी देर तक बैठा करती थी। इसी तरह कुछ दिन बीतनेके बाद कामाख्यानाथने महेन्द्रसे कहा—जो स्वयं ही बहुत दुःखी हो उसे दिन-रात ऐसे लोगोंके साथ नहीं रहना चाहिए जो शोकार्त्त हों। इससे शरीर और मन दोनों ही बहुत निस्तेज हो जाते हैं। ये लोग स्त्रियाँ ठहरीं। यदि ये शोक न करें तो इन्हें शान्ति नहीं मिल सकती। पर तुम पुरुष हो। तुम्हें जन्म भर काम धन्धा करना है और काम धन्धेमें लगनेसे ही आदमीका सब सन्ताप दूर हो जाता है। तुम्हारा अब अधिक समय तक इस प्रकार इन लोगोंके साथ रहना ठीक नहीं है। तुम बीच बीचमें बाहर निकला करो। मैं देखता हूँ कि तुम्हारा शरीर भी दिन-पर दिन खराब होता जाता है।

महेन्द्रने कोई उत्तर नहीं दिया।

इसके बाद निरंजनने दो तीन दिन आकर महेन्द्रसे बाहर चलनेके लिए कहा, पर उस शोकाच्छन्न घरसे बाहर निकालनेमें उसे सफलता नहीं हुई। अन्तमें एक दिन ब्राह्मणीने महेन्द्रसे कहा—बेटा, अब तुम इस तरह घरमें मत रहा करो। इस तरह रहनेसे तुम्हारा शरीर कहाँ तक चलेगा।

महे०—जब तक चले। अब ज्यादा दिन रहकर क्या होगा?

ब्रा०—छीः बेटा, तुम्हारे मुँहसे इस तरहकी बातें अच्छी नहीं लगतीं। क्या तुम नहीं जानते कि हम माँ बेटीको केवल तुम्हारा ही भरोसा है?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


महे०—नहीं माँ, भगवानने कात्यायनीको—तुम लोगोंको बहुत अच्छा सहायक दिया है। मैं तो तुम लोगोंके किसी काम न आ सकूँगा। मेरे किए और कुछ तो होगा ही नहीं। बस यही है कि ऐसे समयमें जरा तुम लोगोंके पास रह लूँ। देखो माँ, अब तुम इससे भी वंचित करके मुझे दूर मत हटाओ।

ब्रा०—अरे बेटा, तुम ऐसी बात कहते हो! भला मैं तुमको दूर भगाऊँगी? क्या तुम नहीं जानते—

इतना कहते कहते ब्राह्मणीका गला भर आया और रुलाई आने लगी। महेन्द्र बालकोंकी तरह उसके पैरोंसे लपट गया।

महे०—माँ, तुम मुझे क्षमा करो। हाय! मैं ऐसा अभागा हूँ कि तुमपर भी अविश्वास करता हूँ।

पहले तो ब्राह्मणी कुछ देर तक रोती रही, पर महेन्द्रको बहुत अधिक कातर देखकर अन्तमें वह स्वयं ही शान्त हुई। उसने कहा—देखो बेटा महेन्द्र, अब आगेसे तुम कभी ऐसी बात मत कहना। मेरे मनमें अब और कोई बात नहीं है। अब उस आशाको मैं मनसे बिलकुल निकाल ही देना चाहती हूँ। तुम अब सत्रह बरस पहलेके वही महेन्द्र हो जिसे मैं अपने पेटका जनमा हुआ लड़का बतलाया करती थी। अब तुमसे भी मैं उसी तरहकी प्रत्याशा करती हूँ। जो बात हुई नहीं और अब हो भी नहीं सकती, उसकी चिन्ता मैं छोड़ देती हूँ। पर अब मैं चाहती हूँ कि तुम्हारा ब्याह करके बहूका मुँह देखूँ और तुम्हारे बच्चोंको गोदमें खेलाकर अपना यह दुःख भूलूँ। कात्यायनीके भाग्यमें जो कुछ बदा होगा वह होगा। पर उसके साथ साथ मैं तुम्हारा जीवन इस प्रकार नष्ट नहीं करना चाहती। अब तुम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


उठो और कामाख्यानाथके पास जाओ। तुमने जो काम हाथमें लिया है उसीमें मन लगाओ और अपनी उन्नति करो। लड़कोंको इस तरह नहीं रहना चाहिए। अब मैं तुम्हारा ब्याह करके और तुम्हारी गृहस्थी देखकर ही स्थिर होऊँगी। मैं तुम्हारी माँ हूँ और केवल तुम्हारा मँगल चाहती हूँ। अच्छा, अब उठो, चलो।

महेन्द्रने कोई प्रतिवाद नहीं किया। वह सिर झुकाकर चुपचाप कामाख्यानाथके मकानकी ओर चल पड़ा। जब कामाख्यानाथने देखा कि महेन्द्र किसी काममें मन लगाना चाहता है तब उन्होंने बहुत सन्तोष प्रकट किया। उस दिन दोपहरके समय रमा कात्यायनीके पास गई। कात्यायनीकी माँ दुःखित भावसे लेटी हुई थी। उसके पैरोंके पास बैठकर कात्यायनी कह रही थी—खाली महेन्द्रके सँभालनेसे तो काम चलेगा नहीं, साथ साथ तुम्हें भी सँभलना चाहिए। जब तक तुम साहस नहीं करोगी तबतक उसमें भी साहस नहीं आवेगा।

ब्राह्मणीने कोमल स्वरसे कहा—तुम जो कुछ कहती और समझाती हो वह तो मैं भी समझती हूँ। अब बतलाओ बेटी, मैं और क्या करूँ?

कात्या०—यदि महेन्द्र आकर देखेगा कि तुम इसी तरह चुपचाप पड़ी हो तो वह समझेगा कि उसे तुम जो कुछ समझाती बुझाती हो, वह सब जबानी है। यदि तुम्हारा शेष जीवन सचमुच उसीपर निर्भर करता है, तब तुम्हें अपने कार्यों और व्यवहारोंसे उसे अच्छी तरह जतला देना चाहिए। जबानी कहनेसे काम नहीं चलेगा।

माताने कुछ चिन्तित होकर कहा—आज तो मैंने जबरदस्ती उसे काम करनेके लिए भेजा है। बेटी, अभी तक उसका मन अच्छी तरह ठिकाने नहीं आया है। उसे सिर्फ एक ही दुःख नहीं है। उसे—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


इतना कहते कहते माताने देखा कि कात्यायनीके मुखपर कुछ अप्रसन्नता प्रकट हो रही है, इसलिए उसने ठंढी साँस लेकर चुप होनेसे पहले अस्पष्ट स्वरमें फिर कहा—मैंने जो उसे जबरदस्ती यहाँसे भेजा है सो वह समझता होगा कि मेरे मनमें उसके लिए स्नेह नहीं है। वह सोचता होगा कि यदि मेरी अपनी माँ होती, तो वह क्यों मुझे इस तरह घरसे निकालती। शरीर ठीक नहीं है—

कात्यायनीने कुछ अप्रसन्न होकर कहा—माँ, तुम्हारा यह सब सोचना बिलकुल व्यर्थ है। इन्हीं सब बातोंसे तो उसका शरीर और भी खराब होता जाता है। तुमने जो कुछ किया है वह ठीक ही किया है। बाबूजी कहा करते थे कि संसारमें अपना दुःख बढ़ानेसे बढ़कर अन्याय और कुछ नहीं है। हम लोगोंने अपने दुःखसे उन लोगोंको आजतक कितना अधिक कष्ट दिया है? ये लोग जिनका उपकार करने जायँगे वे सभी यदि उन्हें इतना अधिक कष्ट देंगे तो फिर संसारमें कोई किसीके साथ उपकार करनेकी इच्छा न करेगा। इसलिए सबसे अच्छा यही है कि तुम स्वयं ही बलिष्ठ हो। शोक और दुःख क्या बाहर प्रकट करनेकी चीज़ है? और क्या किसी दूसरेके सान्त्वना देनेसे उसमें उससे कोई कमी बेशी हो सकती है? तब क्यों व्यर्थ दूसरोंको इतना कष्ट दिया जाय?

माताने कात्यायनीको इस बातका कोई उत्तर नहीं दिया। रमा अब तक चुपचाप बैठी सब बातें सुन रही थी। कात्यायनीकी किसी बातमें उसने बाधा नहीं दी थी। जब कात्यायनीकी बात समाप्त हो गई तब उसने बहुत ही धीर और शान्त स्वरमें कहा—शोक और दुःखमें सान्त्वना देनेकी शक्ति तो संसार भरमें एक ईश्वरको ही है। उसे छोड़कर और कोई मनुष्यको सान्त्वना नहीं दे सकता। पर कात्यायनी, मनुष्यको उन्होंने बस यही तो एक काम दिया है। यदि मनुष्य कुछ कर सकता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


है तो केवल यही कि वह औरोंके लिए थोड़ा बहुत दुखी हो सकता है। केवल मनुष्य ही क्यों कदाचित् प्राणीमात्र दूसरोंके दुःखसे कुछ दुखी होते हैं। यह गुण पशु पक्षियों तकमें देखा जाता है। एकको विपत्तिमें देखकर और सब पक्षी भी अस्थिर हो जाते हैं। यदि तुम्हारे लिए कोई कुछ दुखी हो, तो इसके लिए तुम क्यों दूनी दुःखित तथा चिन्तित होती हो? और कात्यायनी दूसरोंके उपकारकी जो बात तुमने कही, वह भी ठीक नहीं है। हम ऐसे लोगोंकी विपत्तिकी बात भी तो नित्य ही सुना करते हैं जिनके साथ हमारा कभीका कोई परिचय नहीं होता। उस समय कौन किसके लिए चिन्ता करता और दुखी होता है? वे लोग अपने नहीं जान पड़ते, इसी लिए कोई उनके वास्ते उँगली भी नहीं हिलाता।

कात्यायनीकी माँने सजल नेत्रोंसे रमाकी ओर देखते हुए स्नेहपूर्ण स्वरमें कहा—बेटी, गाँव भरमें सभी लोग तुम्हारी दयाका हाल जानते हैं। हम लोग तो यहाँ नई आई हैं। हम अधिक नहीं जानतीं। पर छोटे बड़े सबके मुँहसे तुम्हारे बाबूजीके जो गुण मैं सुना करती हूँ—

रमा—क्या इस गाँवके लोग बाबूजीके लिए पराए हैं? वे सब लोग तो हमारे अपने ही हैं। लेकिन इन लोगोंके सिवा संसारमें और भी तो बहुतसे लोग हैं जिन्हें अनेक प्रकारकी आवश्यकताएँ होतीं हैं और जिन-पर अनेक प्रकारके कष्ट पड़ते हैं। आप ही बतलाइए कि कौन उन्हें देखने जाता है और कौन उनके दुःखमें सान्त्वना प्रकट करता है? बाबूजी कहा करते हैं कि इसी प्रकार और भी बहुतसे अच्छे आदमी हैं जो सदा लोगोंके कष्टके समय काम आते हैं। परन्तु मेरे मनमें यह बात बैठती ही नहीं। मैं सोचती हूँ कि आदमीमें इतनी शक्ति ही नहीं है कि वह किसीको कुछ शान्ति दे सके। भला आदमामें इतना सामर्थ्य कहाँ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्राह्मणीने शोकपूर्ण स्वरमें उत्तर दिया,—रमा इस संसारमें शान्ति कहीं है भी? मैंने तो इतनी उमरमें कभी कहीं किसीको शान्तिपूर्वक रहते नहीं देखा। जो चीज संसारमें कहीं है ही नहीं—वह भला कोई किसीको क्या देगा और कहाँसे देगा?

रमाने सिर झुकाकर उत्तर दिया—आप ऐसी बात न कहें। यदि यह बात होती तो फिर संसारमें शान्ति शब्द ही न रहता। परन्तु वह आदमीके हाथकी चीज नहीं है, इसी लिए कोई किसीको शान्ति नहीं दे सकता। संसारमें जिसे कोई देखने सुननेवाला नहीं है, जिसका कहीं कोई आत्मीय स्वजन या बन्धु बान्धव नहीं है, उनकी ओर भी जो परमात्मा समदृष्टिसे देखते हैं और उनको भी उस शान्तिसे जो वंचित नहीं रखते, जब तक उसी परमात्माके हाथसे शान्ति न मिले तब तक और कहीं या किसी प्रकारसे शान्ति नहीं मिल सकती।

ब्राह्मणीने स्नेह और श्रद्धासे मिश्रित स्वरमें कहा—हाँ बेटी, मैं भी यह बात अच्छी तरह जानती हूँ। और यह भी जानती हूँ कि तुम्हारे घरके सब लोग भी ऐसा ही करते हैं। जिसका कहीं कोई नहीं होता, उसे भी तुम्हारे घरके लोग देखते सुनते हैं और उस शान्तिमयके हाथसे मिलनेवाली शान्तिमें बहुत कुछ दखल देते हैं।

रमाकी आँखोंमें जल भर आया। उन्हीं सजल आँखोंसे उसने ब्राह्मणीके पैरोंकी ओर देखते हुए कहा—कहाँकी बात? पृथ्वीपर असंख्य दुःख सुने जाते हैं। पर आप ही बतलाइए कि उनमेंसे कितने दुःख हमारे कानों तक पहुँचते हैं? बाबूजी जो इतना ढूँढ़ते हैं वे क्या उनमेंके एक अंशका भी पता लगा पाते हैं? सारी पृथ्वीमें हमारे इस छोटेसे गाँवका स्थान ही क्या है, इसमें आदमी ही कितने बसते हैं, इन लोगोंके अभाव और दुःख ही कितने हैं, और जो हैं भी उनका क्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


सबको पता लगता है? जब मैं पहले बाबूजीके मुँहसे लोगोंके कष्टोंकी बातें सुना करती थी तब सोचती थी कि कौन इन लोगोंकी खोज खबर लेता है, इन लोगोंकी क्या दशा होती है? बहुत सोचते सोचते अब मुझे माळूम हुआ है कि इन लोगोंको देखनेवाला एक ऐसा भी है जिसके रहते हुए संसारमें फिर और किसी देखने सुननेवालेके रहनेकी आवश्यकता नहीं होती। किसीका दुःख ऐसा नहीं है जो उसे न दिखाई देता हो।

ब्रा०—लेकिन फिर भी बेटी, तुम्हारे जैसे लोगोंकी इस संसारमें नित्य ही आवश्यकता हुआ करती है। यदि यह बात न होती, तो तुम्हारे जैसी लड़कीको कोई क्यों किसीके दुःखों और कष्टोंका भागी बनानेके लिए भेजता?

रमाने कुछ लज्जित होकर उत्तर दिया—आप ऐसी बात क्यों कहती हैं। बाबूजी तो आप ही मुझे किसीके दुःख या कष्टके स्थानमें नहीं भेजते। लेकिन आप लोगोंको तो हम लोग स्वयं अपना ही समझते हैं। बाबूजी दूसरोंके लिए व्याकुल हो सकते हैं, पर मैं तो दूसरोंके लिए व्याकुल नहीं हो सकती। जो लोग हमारे घरपर जाते हैं उनको छोड़कर और जो लोग गाँवमें रहते हैं उनको तो मैं जानती भी नहीं। परन्तु आप हम लोगोंको पराया समझकर क्यों कष्ट देती हैं?

ब्राह्मणीने इस बातका कोई उत्तर नहीं दिया। वह कुछ तो लज्जित होकर और कुछ स्नेहपूर्वक बालिकाके मस्तकपर हाथ फेरने लगी।

कात्यायनी अब तक बिलकुल चुप बैठी थी। अब उसने कोमल स्वरसे कहा—माँ, आज सन्ध्याको तुम रमाके साथ मन्दिरमें जाओगी?

माँने कुछ इधर उधर करके कहा—मन्दिरमें? नहीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कात्या०—क्यों, चली क्यों नहीं जातीं? वहाँ रमाके साथ बात चीत करोगी, आरती देखोगी, तो जरा मन बहल जायगा।

रमाने कात्यायनीकी ओर देखकर पूछा—और तुम?

कात्यायनीने केवल सिर हिलाकर अस्वीकृति प्रकट की। रमाने फिर पूछा—क्यों?

का०—मुझे यहीं कुछ काम है।

रमाने ब्राह्मणीके मुखकी ओर देखा। उसने कहा—इसे अभी अपने बाबूजीके सब कागज पत्र और पोथी पत्रे आदि ठीक करके रखने हैं। घरकी सफाई करना है, धूप धूनी देना है।

इतना कहते कहते ब्राह्मणीका गला भर आया। रमाने भी सिर झुका लिया।

थोड़ी देर बाद कात्यायनीने कहा—माँ, जब तक तुम प्रसाद नहीं ले लोगी, तब तक महेन्द्र भी कुछ नहीं खायगा। इसलिए अब रसोईका इन्तजाम करना होगा। मैंने सोचा था कि तुम चुपचाप यहाँ अकेली पड़ी रहोगी, इसी लिए मैंने तुमसे रमाके साथ मन्दिर जानेके लिए कहा था।

ब्रा०—मैं यहीं अच्छी तरह रहूँगी। तुम अपने काममें लगो।

जब कात्यायनी वहाँसे उठकर चलने लगी, तब ब्राह्मणीने उसकी ओर स्थिर दृष्टिसे देखकर ठंढी साँस लेते हुए अस्फुट स्वरमें कहा—अब वह तो हैं ही नहीं कि महेन्द्र उनकी सेवा करे, इसलिए वह सदा हम ही लोगोंकी चिन्तासे व्याकुल रहता है। तुम्हें तो हम लोगोंकी चिन्ता रहती है, पर तुम्हारी चिन्ता कौन करता है? हाय, मैं भी तेरी कैसी पत्थरकी माँ हूँ। मुझे तो अब बहुत दिन तक जीना नहीं है। और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


महेन्द्र मरद मानुस ठहरा। पर तेरा क्या होगा? तू किस तरह अपने दिन बितावेगी? मेरी समझमें नहीं आता कि भगवान् तेरी क्या दशा करेंगे।

इतना कहते कहते ब्राह्मणीका गला और आँखें भर आईं और वह अपने आपको सँभालने लगी। रमा भी उसी प्रकार चुपचाप सिर झुकाए बैठी रही; परन्तु वृद्धा ब्राह्मणीकी आँखोंमें जो आँसूकी बूँदें आ गई थीं, उन्होंने रमाको कुछ देखने सुनने नहीं दिया और आप ही आप उसके नेत्रोंमें बहुत सा जल लाकर उपस्थित कर दिया।

---

## पाँचवाँ परिच्छेद।

विचित्र प्रकृतिकी सृष्टिमें जो कुछ है वह यही मनुष्य है। जिस नियमकी धारामें अणुओं और परमाणुओंसे लेकर ग्रहों और नक्षत्रों तक सभी एक स्रोतमें बहे चले जाते हैं, वह प्रचंड शक्तिका स्रोत मानो इसी मनुष्यके पास आकर रुक जाता है। विश्वके नियंत्रित किए हुए सभी नियम उसके सामने आकर अनियमित हो जाते हैं। वह जब चलेगा तब स्वयं अपने ही बनाए हुए नियमके अनुसार चलेगा, नहीं तो उसका सन्तोष नहीं होगा। चाहे वह नियम स्वयं उसके पैरोंकी बेड़ीके रूपमें हो अथवा सब प्रकारकी बाधाओं और बन्धनोंको दूर करनेवाली शक्तिके रूपमें हो; पर मनुष्य सदा यही चाहता है कि अपने जीवन मरण और गति अगतिका मार्ग मैं स्वयं ही बनाऊँ और मनुष्य जब तक अच्छी तरह न समझने लगेगा तब तक उसका यह क्रम कभी रुकेगा ही नहीं। चाहे शिवजीकी मूर्ति बनातें बनाते बन्दरकी शक्ल ही क्यों न बन जाय और चाहे प्राण लानेके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रयत्नमें मृत्युका आवाहन ही क्यों न हो जाय; परन्तु मनुष्यमें जो अहंभाव भरा हुआ है वह अपनी केलेकी डोंगीसे इस विश्व-शक्तिके उत्ताल सागरको पार कर जाना चाहता है। पद पद पर प्रतिकूल तरंगें उठती हैं, विपरीतमुख प्रचंड वायु बहती है, परन्तु फिर भी वह अपने चित्तरूपी पाल, इच्छारूपी डाँड़ों और बुद्धिरूपी पतवारके बलपर विश्वकी प्रचंड प्रतिकूलताको सदा अपने अनुकूल बनानेकी चेष्टा करता रहता है। मानो यह सागर उसे किसी प्रकार डुबा ही नहीं सकता और उसकी विद्रोहिणी क्षुद्र शक्तिका किसी प्रकार पराजय हो ही नहीं सकता। यद्यपि महा शक्तिमयी विश्व प्रकृतिमें अघटित बातें भी सहजमें घटित हो जाती हैं तथापि ऐसा जान पड़ता है कि मनुष्यके सामने आकर वह भी समय समय पर अपनी शक्ति खर्व कर देती है। ऐसा जान पड़ता है कि उसकी समझमें भी नहीं आता कि इस अबोध शिशुके साथ कैसा व्यवहार किया जाय। इसी लिए वह उसे शान्त रखनेके विचारसे अनेक प्रकारसे अपने आपको असमर्थ बनाकर इस क्षुद्र शिशुको भुलाए रखना चाहती हैं। पौरुष ही पुरुषकी शक्ति है। उसी पौरुषने उसकी आँखोंके सामने एक ऐसा अहंकार खड़ा कर रक्खा है कि वह इस युद्धमें किसी प्रकार पीछे हटना ही नहीं चाहता। जिस प्रकार कोई शिशु बलपूर्वक अपनी माताको हराकर अपने आपको विजयी समझता हुआ अहंकार करता है, मनुष्यका यह युद्ध और यह विजय मानो उसीका एक अभिनय है। यह बात नहीं है कि मनुष्य यह न जानता हो कि मुझे यह युद्ध किसके साथ करना पड़ रहा है। वह जानता, मानता और समझता हुआ भी अपनी शक्तिके मोहमें पड़ा रहता है और समय समय पर इस प्रकार अन्धा बन जाता है। बस यही मनुष्यकी विचित्रता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कामाख्यानाथने बहुत कुछ सोच विचारकर अन्तमें यही स्थिर किया कि कात्यायनीका विवाह कर देना चाहिए। संसारमें कात्यायनीका कोई ऐसा आत्मीय नहीं था जिसपर निर्भर रहकर वह अपने थोड़ेसे बीते हुए जीवनके बाकी बहुतसे दिन सुखपूर्वक बिता सकती। महेन्द्र उसके भाईकी जगह अवश्य था; परन्तु संसारमें प्रायः होनेवाली बहुतसी बातोंसे भी कामाख्यानाथ भली भाँति परिचित थे। कौन कह सकता है कि आगे चलकर किसी समय महेन्द्र स्वयं अपने ही बाल बच्चोंकी चिन्तामें पड़कर कात्यायनीको जीका जंजाल न समझने लगेगा? एक वृद्धा माताको छोड़कर कात्यायनीका और कोई आत्मीय नहीं था। कामाख्यानाथ सोचते थे कि पहलेसे ही समझ बूझकर यह स्थिर करना चाहिए कि जब वह वृद्धा भी इस संसारसे चली जायगी तब इस अनूढा ब्राह्मण-कन्याकी क्या दशा होगी और इसे कौन सँभालेगा। जिस महेन्द्रके साथ पहले विवाहकी बात चीत हो रही थी, उसी नवयुवक महेन्द्रपर ऐसी अविवाहिता सुन्दरी कन्याका भार छोड़ना भी उन्हें उचित नहीं जान पड़ता था। अब बिना महेन्द्रके साथ उसका विवाह किए और किसी प्रकार वह उसके पास रखी ही नहीं जा सकती थी। उधर मरते समय तक उसके पिता बार बार इस विवाहके लिए इतना अधिक निषेध करते थे कि किसीको उसके विपरीत आचरण करने अथवा कहने सुननेका साहस ही नहीं हो सकता था। कौन कह सकता था कि भविष्यमें इसका कैसा फल होगा। वे सोचते थे कि महेन्द्र, ब्राह्मणी या कात्यायनीमेंसे एक भी इस विवाहके लिए सहमत न होगा। पर साथ ही वे यह भी सोचते थे कि यदि किसी प्रकार सब कठिनाइयाँ दूर हो सकती हैं, तो वह केवल महेन्द्र और कात्यायनीका विवाह होनेसे ही हो सकती हैं। लेकिन यह तो किसी प्रकार हो नहीं सकता, इस लिए अब यही


CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर्त्तव्य बच रहा है कि किसी अच्छे ज्योतिषीको कात्यायनीकी जन्मपत्री दिखलाकर उसके अनुरूप किसी सुपात्रके साथ उसका विवाह कर देना चाहिए। ज्योतिरत्नने भी मरते समय एक बार कहा था कि कात्यायनीके विवाहका एक मात्र उपाय है! शायद उनके कहनेका अभिप्राय यही था कि किसी योग्य वरके साथ इसका विवाह कर दिया जाय। ज्योतिष शास्त्रके अनुसार जो सुपात्र ठहरता हो, उसे अपनी कन्या तो वह देना ही चाहते थे। परन्तु उन्हें कोई ऐसा सुपात्र मिला नहीं था, इसी लिए उन्होंने उसका विवाह नहीं किया था। मरते समय कदाचित् वे यह नहीं चाहते थे कि किसी दूसरेपर बहुत अधिक भार डाला जाय। सम्भवतः इसी लिए वे कह गए थे कि मेरी लड़की कुँआरी ही रहने दी जाय, उसका विवाह न किया जाय। और नहीं तो कन्याका विवाह तो वे अवश्य करना चाहते थे। यह ठीक है कि स्वर्गीय ज्योतिरत्नके मनका पात्र सहजमें नहीं मिलेगा; लेकिन यह भी तो नहीं माना जा सकता कि वैसा पात्र संसारमें मिलेगा ही नहीं। वैसा पात्र ढूँढ़ निकालनेके लिए कामाख्यानाथ पूरी पूरी चेष्टा, यथेष्ट व्यय और आवश्यक परिश्रम करनेके लिए तयार हुए। उन्होंने सोचा कि चाहे जैसे हो, कात्यायनीके लिए एक उपयुक्त पात्र ढूँढ़ ही निकालना चाहिए। उसे इस प्रकार निस्सहाय अवस्थामें छोड़ देना किसी प्रकार शास्त्रसम्मत या युक्तिसंगत नहीं है।

कामाख्यानाथने एक एक करके ये सब बातें महेन्द्रको अच्छी तरह समझा दीं और अन्तमें कहा कि इस प्रकार तुम्हारे सिरसे भी एक बहुत बड़ा भार उतर जायगा। और नहीं तो फिर तुम्हें भी जन्म भर एक बहुत बड़ी चिन्ताकी अशान्ति सहनी पड़ेगी। क्या उसकी अपेक्षा यह मार्ग ठीक नहीं है? तुम अच्छी तरह सोच समझ देखो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


महेन्द्रने दृढ़ स्वरमें उत्तर दिया—आप मेरी अशान्ति या चिन्ताकी बात छोड़ दें। आप जिसके विषयमें यह समझ रहे हैं कि वह मेरे लिए भारस्वरूप होंगी, उनमेंसे एक तो मेरे लिए गर्भधारिणी मातासे भी बढ़कर हैं और कात्यायनी उन्हींकी लड़की है। अतः आपको इस बातकी जरा भी आशंका नहीं होनी चाहिए कि वे लोग मेरे लिए भार-स्वरूप होंगी। मैं जो कुछ कहता हूँ उसे आप बिलकुल ठीक और निश्चित समझें।

कामा०—खैर, मैंने मान लिया कि तुम जो कुछ कहते हो वह बिलकुल ठीक है। पर साथ ही मैंने जो और बातें कही हैं, उनपर भी तो तुम्हें विचार करना चाहिए।

महे०—यही न कि यदि माँका जल्दी शरीरान्त हो गया तो क्या होगा? उस दशामें यदि मैं उनकी कन्याके रक्षणावेक्षणके लिए उप-युक्त न समझा जाऊँ तो आप तो हैं ही। पिताजी आपपर विशेष रूपसे सब भार छोड़ ही गए हैं। आप ही उसकी देख रेख कीजिएगा।

कामा०—परन्तु महेन्द्र, तुम यह बात भूले जा रहे हो कि आखिर मैं पराया हूँ। उन लोगोंका अपना नहीं हूँ। क्या यह बात समझते हुए वे लोग सदा मुझपर ही निर्भर रहेंगी और यदि वे किसी प्रकार मुझपर निर्भर रहें भी, तो मेरा यह कर्त्तव्य नहीं है। क्योंकि कोई यह नहीं कह सकता कि यह जीवन कब तक रहेगा और कब इसका अन्त हो जायगा। तुम्हें यह भी समझना चाहिए कि इस समय मेरी अवस्था अधिक हो चली है और उस बालिकाका अभी बहुतसा जीवन बाकी है। मैं कब तक उसकी देख-रेख करता रहूँगा। और फिर विशेषतः ऐसी अवस्थामें जब कि ज्योतिरत्नजी उसका सारा भार मुझ-पर ही छोड़ गए हैं, जब उसके भले बुरेके लिए धर्मके सामने मुझको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही उत्तरदायी बना गए हैं तो इस बातके लिए भी चेष्टा करना भी मेरा कर्तव्य है कि जिसमें उसका जीवन व्यर्थ नष्ट न हो। तुम्हीं उसके आत्मीय अभिभावक और सब कुछ हो। मेरी सब बातोंपर तुम अच्छी तरह विचार कर लो और तब अपना कर्तव्य स्थिर करो।

महे०—यह तो आप अच्छी तरह जानते ही हैं कि पिताजी ज्योतिषशास्त्रके असाधारण पंडित थे। वे जब अपनी कन्याके विवाहके लिए इतना मना कर गए हैं तो फिर क्या और किसीका इसके लिए चेष्टा करना उचित है? शायद उन्होंने कोई ऐसी अभ्रान्त दृष्टि पाई थी जिससे वे यह समझते थे कि कन्याका विवाह नहीं करना चाहिए।

कामा०—लेकिन यह बात समझमें नहीं आती कि ऐसी अभ्रान्त दृष्टि विधाताको छोड़कर मनुष्यको भी हो सकती है। कौन कह सकता है कि वे यहीं आकर विशेष रूपसे भ्रान्त न हो गए हों और उन्होंने अपनी कन्याके सामान्य दुष्ट ग्रहोंको ही बहुत बड़ा न बना लिया हो या केवल उसी भ्रमसे ही अपना सारा जीवन न ढँक रक्खा हो? मनुष्य ऐसी ही जगह आकर सबसे अधिक भ्रान्त होता है। कोई कितना ही बड़ा विद्वान्, ज्ञानी या अभ्रान्तदर्शी क्यों न हो परन्तु सन्तानके लिए होनेवाली प्राकृतिक स्नेहशंका उसे सहजमें विचलित कर देती है। इसी लिए चिकित्साशास्त्रमें आत्मीयजनोंकी चिकित्सा करनेका निषेध है। आज यदि कात्यायनी किसी प्रकार तुम्हारे हाथ सौंपी जा सकती, तो कहीं कोई झगड़ा ही न रह जाता; किन्तु अब तो मैं इसका साहस ही नहीं कर सकता। वे एक ऐसे कठिन बन्धनसे हम सब लोगोंको बाँध गए हैं कि उसका उल्लंघन ही नहीं हो सकता। सम्भव है कि यह भी उनका एक भ्रम ही हो; पर अब तो इसके विपरीत कुछ हो ही नहीं सकता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


पहले कुछ देर तक महेन्द्र चुपचाप सिर झुकाए खड़ा रहा । फिर उसने इस प्रकार सिर उठाया मानो वह कामाख्यानाथसे कुछ कहना चाहता हो । पर न जाने क्या सोचकर उसने चुपचाप फिर पहलेकी तरह ही सिर झुका लिया ।

कामाख्यानाथने कहा—तुम जो कुछ कहना चाहते हो वह कहो न । तुम्हीं तो उसके एक मात्र आत्मीय हो ।

महे०—नहीं, कुछ नहीं । क्या आप उन लोगोंसे भी ये सब बातें कहेंगे ?

कामा०—यदि तुम चाहो तो मैं कह क्यों नहीं सकता हूँ । क्योंकि बिना माँकी आज्ञाके तो कुछ होगा ही नहीं ।

दूसरे दिन प्रातःकाल कामाख्यानाथने जाकर कात्यायनीकी माँके सामने यही प्रसंग उपस्थित किया ।

ब्राह्मणीने कहा—हाँ, कल महेन्द्रने इस विषयमें मुझसे दो एक बातें कही थीं । मैं एक साधारण स्त्री ठहरी, न मुझे बुद्धि है और न ज्ञान । मैं तो इस समय अच्छी तरह यह भी सोच समझ नहीं सकती कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए । वे कात्यायनीका सारा भार तुम्हींपर छोड़ गए हैं । तुम धार्मिक और ज्ञानी हो । जो तुम्हारी समझमें ठीक जान पड़े, वही करो । वे तुमपर देवताओंके समान विश्वास रखते थे । तुम जो कुछ करोगे उससे वे स्वर्गमें भी असन्तुष्ट न होंगे । तुम महेन्द्र और कात्यायनी दोनोंकी जन्मपत्रियाँ एक बार फिर किसी अच्छे ज्योतिषीको दिखलाओ । यदि किसी प्रकार इनका मेल मिल जाय तो मैं समझूँगी कि मेरे जीवनमें अब भी शान्तिकी कुछ आशा है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कामाख्यानाथने कुछ सोचकर कहा—यदि आपकी यही इच्छा हो तो पहले इसी बातका प्रयत्न किया जाय । यदि यह बात हो जाय तो सब कुछ ठीक ही ठीक है। इसमें सिर्फ यही एक बात है कि वे इसके लिए विशेष रूपसे निषेध कर गए हैं।

ब्रा०—इस बातका तो मुझे भी ध्यान है। पर यदि ज्योतिषके अनुसार दोनोंकी जन्मपत्रियाँ बिलकुल ही न मिलें तब तो यह बात यों ही रहने दी जाय । मैं और कहीं अपने महेन्द्रका ब्याह कर लूँगी और बहू अपने घर ले आऊँगी। यदि कात्यायनीके कारण उसका कुछ भी अनिष्ट हो तो मुझे यह ब्याह नहीं चाहिए। मैंने उनसे सुना था कि लड़कीके राशि-गण बहुत उच्च हैं।

कामा०—अच्छा जैसा होगा देखा जायगा। आप महेन्द्र और अपनी लड़की दोनोंकी कुंडलियाँ मुझे अभी दें। इसमें अधिक देर नहीं होनी चाहिए।

ब्राह्मणीने कात्यायनीको पुकारा। वह दूसरी कोठरीमें थी। माताकी आवाज सुनकर वह आँगनमें आ खड़ी हुई। ब्राह्मणीने कहा—बेटी, जरा तुम अपनी और महेन्द्र दोनोंकी कुंडलियाँ तो लेती आओ।

कात्यायनी वहीं खड़ी रही, वहाँसे हटी नहीं। उसने सिर झुकाए हुए कहा—कुंडलियाँ दिखलानेकी कोई जरूरत नहीं है।

ब्रा०—जरूरत क्यों नहीं है? तुम लाओ, दो तो सही।

कात्या०—महेन्द्रकी जन्मपत्री यहीं इसी कोठरीमें कहीं बाबूजीके कागज-पत्रोंमें पड़ी होगी।

ब्रा०—केवल उसीसे तो काम नहीं चलेगा। तुम्हारी कुंडली भी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


सब लोगोंकी ओर अचंचल दृष्टिसे देखते हुए कात्यायनीने उत्तर दिया—उसमें जो देखनेकी बात थी वह सब बाबूजी देख गए हैं। अब उसमें और कुछ देखने दिखलानेकी जरूरत नहीं है।

कन्याका स्वर सुनकर और उसकी आकृति देखकर माता चुप हो गई। महेन्द्र टक लगाए हुए उसकी ओर देखता रह गया। कामाख्यानाथने भी कुछ चकित होकर एक बार कात्यायनीकी ओर देखा। थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा—तुम अभी अनजान हो। तुम्हारे शुभाशुभका सारा भार तुम्हारे बाबूजी हम लोगोंपर छोड़ गए हैं। हम लोग जो कुछ करना उचित समझते हैं उसके लिए प्रयत्न करते हैं। तुम लड़की हो, इस बीचमें बाधा मत दो।

कात्या०—आप लोग उनकी सब बातें सुनकर भी भूले जा रहे हैं, इसलिए मैं आप लोगोंको उनकी बातें याद दिलाती हूँ। मैं अवश्य अनजान हूँ, पर फिर भी उनकी लड़की हूँ।

कामा०—उन्हें कोई योग्य वर नहीं मिला था, इसी लिए उन्होंने अब तक तुम्हारा ब्याह नहीं किया था। हम लोग उनकी इच्छाके अनुसार ज्योतिष शास्त्रसे सब बातें मिलान करके किसी काममें हाथ लगावेंगे।

ब्राह्मणीने कोमल स्वरसे कहा—यदि महेन्द्रके नामसे तुम सहमत नहीं हो, तो रहने दो। कोई जरूरत नहीं है। मैं यह जानती हूँ कि वे महेन्द्रके साथ ब्याह नहीं करना चाहते थे, इसी लिए महेन्द्रका नाम आते ही तुम बिगड़ खड़ी होती हो। तुम्हें अपने बाबूजीकी इच्छाके विरुद्ध कोई काम न करना पड़ेगा। उस बातको जाने दो। हाँ, ये कोई और प्रयत्न करना चाहते हों तो करने दो। तुम अपनी कुंडली ले आओ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कात्या०—नहीं, मेरी कुंडली नहीं मिलेगी। इस विषयमें चाहे जो चेष्टा की जाय वह पाप है और उनकी इच्छा तथा आज्ञाके विरुद्ध काम करना है। मुझमें उनकी आज्ञा टालनेकी शक्ति नहीं है। वे मेरे पिता थे।

छः अपलक नेत्रोंके सामने कात्यायनी उसी प्रकार दृढ़ भावसे खड़ी रही। न तो उसका कंठस्वर विचलित हुआ और न उसने किसीकी ओर एक बार भी दृष्टि उठाकर देखा ही। वह उसी प्रकार चुपचाप नेत्र झुकाए खड़ी रही। उसने कोमल तथा स्पष्ट भाषामें उत्तर देकर सब लोगोंको निर्वाक् कर दिया।

माताने ठंढी साँस लेकर कहा—मैं जानती हूँ कि इस विषयमें कोई प्रयत्न करना बिलकुल व्यर्थ है। वह तो पहले ही कह गए हैं कि कात्यायनीका ब्याह होगा ही नहीं। उनका कहना क्या कभी झूठ हो सकता है? अच्छी बात है, इसे विधवा लड़कीकी भाँति ही रहने दो। वह बाप होकर अपनी लड़कीकी यही व्यवस्था कर गए हैं! लेकिन महेन्द्र मैं इसके लिए तुम्हारा जीवन नष्ट नहीं होने दूँगी। (कामाख्यानाथसे) बाबूजी, आपने इस अभागीके लिए बहुतसे कष्ट उठाए हैं। एक और यह भी कष्ट कीजिए कि महेन्द्रके लिए कोई अच्छी लड़की ढूँढ़ दीजिए। बस, आपसे यही मेरा अन्तिम अनुरोध है।

कात्यायनीका व्यवहार देखकर कामाख्यानाथ इतने चकित हुए थे कि अब भी उनसे कुछ बोला नहीं जाता था। कुछ देर तक चुप रहनेके उपरान्त अन्तमें वे उठकर खड़े हो गए और बोले—इस विषयमें मुझे कुछ और अधिक बोलनेका अधिकार नहीं है। आप अपनी लड़कीको उसके भविष्यके सम्बन्धमें सब बातें अच्छी तरह समझा दीजिए।

ब्रा०—उसे तो उसके जन्मदाता ही सारा भूत भविष्य और वर्तमान समझा बुझा गए हैं। अब और किसीमें इतनी शक्ति नहीं है कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


उससे अधिक उसे और कुछ समझावे बुझावे। बाबूजी, आप इसके लिए व्यर्थ कष्ट मत उठाइए। जो कुछ उसके भाग्यमें बदा है वही होगा।

कामाख्यानाथ अन्यमनस्क भावसे वहाँसे चले गए।

* * * *

कात्यायनीने देखा कि महेन्द्र कई दिनसे मुझसे कुछ बात कहना चाहता है, पर उसे कहनेका साहस नहीं होता है और वह कहता कहता रुक जाता है। और कहीं दूसरी जगह भी वह ज्यादा देर तक नहीं ठहर सकता। वह देखती थी कि महेन्द्रका कहीं और किसी काममें मन नहीं लगता है और उसकी दृष्टि केवल मेरा ही अनुसरण करती है। कात्यायनीने समझ लिया कि महेन्द्रने कुछ दिनोंसे अपने मनमें जो इच्छा संचित कर रखी थी, अभी तक उस इच्छासे वह अपना छुटकारा नहीं कर सका है। पर उसे इस इच्छासे छुटकारा पाना तो अवश्य होगा, उसे अपनी वह इच्छा नष्ट तो अवश्य ही करनी पड़ेगी। उसने सोचा कि यदि यही इच्छा लेकर महेन्द्र मेरे साथ साथ घूमा करेगा, तो फिर मैं उसे भाईके समान निस्संकोच भावसे अपने पास नहीं रख सकूँगी। जब तक माताके मुखसे यह इच्छा प्रकट नहीं हुई थी, तब तक महेन्द्र अपना अधिकांश समय घरसे बाहर ही बिताया करता था। बहुत ही छोटी अवस्थासे दोनों साथ ही रहते आए थे, पर इधर कुछ दिनोंसे वह बात नहीं रह गई थी। दोनोंका एक साथ रहना बहुत कुछ कम हो गया था। पर अब पिताजीके देहान्तके बादसे वह दूरवाला व्यवधान हट गया था। इस शोकाकुल परिवारके अन्तर्भुक्त व्यक्तिकी भाँति महेन्द्र अपने बहुत दिनोंके अधिकारके कारण फिर लौट आया था। बीचमें दोनोंमें जो संकोच उत्पन्न हो गया था, वह अब मानो किसीको याद भी नहीं रह गया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


परन्तु अब इस बातचीतके कारण वह संकोच फिरसे जागरित हो उठा था। कात्यायनीने अच्छी तरह समझ लिया था कि महेन्द्रको कुछ कहनेका भी साहस नहीं होता है और उसके मनमें दिन रात वही बात भी घूमा करती है। यही समझकर कात्यायनीके माथेपर बल पड़ गए थे। उसने सोचा कि अब मेरा इस प्रकार चुप रहना ठीक नहीं है। अब स्पष्ट रूपसे महेन्द्रसे सब बातें कह देनी होंगी, नहीं तो वह नहीं समझेगा। इसलिए कात्यायनीने बिना पहलेसे किसी प्रकारकी भूमिका बाँधे एक दिन सहसा उससे पूछा—महेन्द्र, क्या तुम मुझसे कुछ कहना चाहते हो? अगर तुम्हें कुछ कहना हो तो कहो।

कात्यायनीका यह प्रश्न सुनकर महेन्द्र कुछ लज्जित हुआ। वह कुछ कहना तो अवश्य चाहता था, पर इस प्रकार प्रश्न होनेकी दशामें यदि वह कुछ कहता तो उसका अभिप्राय सिद्ध नहीं हो सकता था। वह जो कुछ कहना चाहता था वह ऐसे स्पष्ट आदेशसूचक स्वरके सामने नहीं कहा जा सकता था—ऐसी स्पष्ट दृष्टिके सामने मुँहसे नहीं निकल सकता था। उसने बद्ध स्वरसे केवल यही कहा—मैं? नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है।

कात्या०—खैर, जो कुछ भी हो, सुनूँ तो सही। मैं देखती हूँ कि कई दिनोंसे तुम मुझसे कुछ कहना चाहते हो। क्या तुम मुझसे कुछ कहना नहीं चाहते? क्या मेरे समझनेमें कुछ भूल हुई है? बतलाओ।

महेन्द्रने चुपचाप सिर झुका लिया। उसके मुँहसे 'हाँ' या 'नहीं' कुछ भी नहीं निकला।

कात्या०—तुम्हारा यह संकोच देखकर तो मैं अवाक् हो रही हूँ। क्या तुम यह बात भूले जा रहे हो कि तुम्हीं मेरे एकमात्र आश्रय और एकमात्र आत्मीय हो? तुम तो मेरे भाई हो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


महेन्द्र सिर उठाकर थोड़ी देर तक कात्यायनीके मुँहकी ओर देखता रहा। उस रूप-ज्योतिसे उद्भासित अचंचल और विद्युत्-वरणीकी ओर देखते देखते उसकी आँखोंमें आँसू भर आए। ऐसा जान पड़ता था कि उसकी अन्तरात्मा कहना चाहती है कि यह केवल वज्रगर्भ विद्युत्की रेखा है। उसे छोड़कर यहाँ जरा भी मेघ या नामको भी जलका आभास नहीं है। सूखे हुए गलेसे महेन्द्रने धीरे धीरे कहा—मैंने आज तक कभी तुमसे कोई बात नहीं कही। और मैं समझता हूँ कि शायद जन्मभर तुमसे कोई बात कहनेका साहस न होगा। लेकिन फिर भी मैं तुमसे एक बहुत ही साधारण बात कहना चाहता हूँ, एक बहुत ही सामान्य अनुरोध करना चाहता हूँ।

कात्या०—तुम्हें जो कुछ कहना हो, वह कहो। यदि मेरी शक्तिमें होगा, तो मैं तुम्हारे इस अनुरोधका पालन अवश्य करूँगी।

महे०—तुम्हारी यही स्वीकृति मेरे लिए बहुत है। माँ, मुझसे जो कुछ अनुरोध कर रही हैं वह तो तुमने सुना ही है। तुमसे मैं केवल यही भिक्षा माँगता हूँ कि तुम माँको यह परामर्श दो कि वह अपनी यह इच्छा छोड़ दें। मुझमें न तो तुम्हींसे कुछ कहनेकी शक्ति है और न उन्हींसे कुछ कहनेका साहस है। मैं तुमसे केवल यही प्रार्थना करता हूँ कि तुम उन्हें समझा दो कि जिस तरह वे तुम्हें विधवा कन्या समझकर तुम्हारे विवाहकी चिन्ता छोड़ बैठी हैं, उसी प्रकार वे मुझे भी रोगग्रस्त सन्तान समझ लें और निश्चय कर लें कि मैं भी विवाह करनेके योग्य नहीं हूँ।

कुछ देर तक चुप रहनेके उपरान्त कात्यायनीने कोमल स्वरसे कहा—अच्छा मान लो कि मैंने यह बात माँसे कह दी, पर यदि उनकी समझमें यह बात नहीं आई और उन्होंने नहीं माना तो ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


महे०—यदि तुम खूब अच्छी तरहसे आन्तरिक चेष्टा करके उन्हें यह बात समझाओगी तो मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि वे यह बात अवश्य मान लेंगी।

कात्या०—लेकिन महेन्द्र, जरा यह तो सोचो कि क्या ऐसा करना उचित होगा? क्या उनके मनपर और भी आघात पहुँचाना ठीक होगा?

महे०—लेकिन मेरे पास और कोई उपाय नहीं है। मैं उनकी अकृतज्ञ सन्तान हूँ।

कात्या०—अच्छी बात है, तुम्हारी यह इच्छा पूरी होगी। लेकिन मैं भी तुमसे एक बात कहना चाहती हूँ।

महे०—तुम मुझसे कुछ कहना चाहती हो? कहो कहो, यदि मैं अपने प्राण देकर भी तुम्हारी बात—। लेकिन कात्यायनी, क्या कोई ऐसी बात भी हो सकती है जो तुम मुझसे कहना चाहती हो? जो हो, तुम कहो। मैं मंजूर कर चुका हूँ, तुम्हारी बात अवश्य मानूँगा।

कात्या०—मैं तुमसे और कुछ नहीं कहना चाहती। केवल यही कहना चाहती हूँ कि पहले जिस प्रकार तुमने काम धन्धेमें मन लगाया था, उसी प्रकार अब भी मन लगाया करो। अब तुम भी अपनी उन्नति करनेकी चेष्टा करो। इस तरह घर बैठे रहना ठीक नहीं है।

महेन्द्रने कुछ रुकते हुए धीरेसे कहा—कात्यायनी, क्या यही तुम्हारे कहनेकी बात थी? खैर, जिस तरह तुमने मेरी बात मान ली है उसी तरह मैं भी तुम्हारी बात मान लेता हूँ। अब मैं इस प्रकार तुम्हारे पास न रहा करूँगा। बल्कि अब मैं यहाँ रहूँगा ही नहीं। मैं बहुत जल्दी फिर बाहर चला जाऊँगा। लेकिन कात्यायनी एक बात है। क्या माँ इससे दुखी न होंगी?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कात्या०—वे दुखी तो अवश्य होंगी; पर साथ ही वे यह भी तो समझेंगी कि इस तरह बिलकुल खाली बैठे रहना तुम्हारे लिए ठीक न होगा। वे यह भी तो देखती हैं कि तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। उन्हें लाचार होकर यह समझना पड़ेगा कि जब तक तुम किसी और काममें मन न लगाओगे, अपना दिल न बहलाओगे, तब तक तुम्हारा शरीर ठिकाने न आवेगा।

महे०—घरमें तुम दो ही स्त्रियाँ ठहरीं। आखिर तुम लोगोंको कोई देखने सुननेवाला भी तो चाहिए।

कात्या०—हाँ देखने सुननेवाला तो अवश्य चाहिए। पर जब तुम बाहरसे आया करोगे तब देख सुन लिया करोगे। और जब तुम यहाँ नहीं रहोगे, तब तकके लिए कुछ और बन्दोबस्त करना पड़ेगा। उन लोगोंका मकान भी तो पास ही है। यह तो तुम देखते ही हो कि रमा हम लोगोंका कितना ध्यान रखती है। वे लोग खोज खबर लेते रहेंगे, इसलिए हम लोगोंको किसी प्रकारकी कठिनता न होगी। नित्य जिन बातोंकी जरूरत पड़ा करती है, उनका यदि तुम बन्दोबस्त कर दिया करोगे तो वही हम लोगोंके लिए यथेष्ट होगा। और फिर जब रमाके पिता स्वयं ही हम लोगोंके अभिभावकस्वरूप हैं, तो फिर सभी बातोंमें तुम उनपर निर्भर रह सकते हो।

महे०—यह तो सब ठीक है। और कात्यायनी, मैंने यह भी समझ लिया है कि अब तुम मेरा यहाँ अधिक रहना सहन नहीं कर सकती हो। कई दिनोंसे यह बात मेरे ध्यानमें आ रही है। यदि मेरे यहाँसे न जानेके कारण तुम्हें किसी प्रकारकी अशान्ति हो, तो मैं यहाँसे अवश्य चला जाऊँगा। तुम मुझे क्षमा करना, मैं तुमसे एक और बात कहना चाहता हूँ। जिस बातके कारण तुम्हारे मनमें मेरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


प्रति इस प्रकार विराग उत्पन्न हुआ है, उसकी आशाको या उस प्रस्तावके साहसको मैंने अपनी ओरसे एक दिन भी मनमें स्थान नहीं दिया है। तुम्हारी माँने ही वह प्रस्ताव इस प्रकार मेरे सामने रक्खा था, मानो वह सम्भव था।

कात्या०—यह तो मैं बहुत अच्छी तरह जानती हूँ। इसके लिए मैं तुम्हें कोई दोष नहीं देती।

महे०—पिताजी जो हमारा और तुम्हारा विवाह असम्भव बतला गए हैं, उसका कुछ कुछ कारण अब धीरे धीरे मेरी समझमें आ रहा है। कात्यायनी, जो ग्रह हमारे तुम्हारे जरा पास रहने तकका सौभाग्य सहन नहीं कर सकता और इतना नाराज होता है वह ग्रह कितना बलवान् है, यह मैं आज समझ पाया।

कात्यायनी बिलकुल चुप रही। महेन्द्रने फिर कहना आरम्भ किया—तो फिर कात्यायनी, अब तो यही निश्चय हुआ न कि अब हमारा और तुम्हारा कोई सम्पर्क न रहेगा?

कात्या०—यदि तुम यही बात समझकर अब हम लोगोंके पास नहीं आना चाहते हो, तो तुम्हें अधिकार है—तुम यह समझकर निश्चिन्त रहो। तुम यही समझ लो कि हम सब लोग इस संसारमें हैं ही नहीं, मर गई हैं। इससे फिर तुम्हें—

महेन्द्रने हाथ जोड़कर कहा—कात्यायनी, क्षमा करो, मेरे इस निर्बोध अभिमानको क्षमा करो। संसारमें ऐसा कौनसा आघात है जिससे मेरे शरीरकी इस रक्त धाराका स्रोत बन्द हो सकता है! जब तक मेरे शरीरमें रक्त है तब तक उसका प्रत्येक बिन्दु तुम लोगोंका है।

कात्या०—तो फिर इन बातोंको जाने दो। याद रक्खो कि हम लोग केवल तुम्हारे ही भरोसेपर इस संसारमें हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


कुछ देर बाद महेन्द्रने सहसा अपने अश्रुपूर्ण नेत्र उठाकर कात्यायनीकी ओर देखा और कहा—यह बात नहीं है कि मैं तुम्हारे मनकी इच्छा नहीं समझता। तुम अपने मनमें यह सोचती हो कि तुम्हारे पास रहनेके कारण मैं और भी यह बात भूलनेमें असमर्थ हो रहा हूँ। तुम यह समझती हो कि जब मैं यहाँसे दूर चला जाऊँगा और काम धन्धेमें लग जाऊँगा, तो मेरा मन दूसरी ओर हो जायगा और धीरे धीरे मैं यह बात भूल जाऊँगा। इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारी यह युक्ति तुम्हारी बुद्धि और तुम्हारे चरित्रके अनुकूल ही हुई है। तुम वही कात्यायनी हो जिसकी प्रतिभा देखकर मैं बचपनहीमें अवाक् हो जाया करता था और जिसे मैं शापभ्रष्टा समझा करता था। तुम्हें इससे अच्छा और कौनसा उपाय दिखाई देगा? लेकिन मैं तुम्हें यह बात क्योंकर समझाऊँ कि कोई ऐसी बात भी है, जो मेरे सब कुछ समझनेपर भी मुझे कुछ समझने नहीं देती और मेरे हृदयमें तीव्र वेदनासे भरे हुए उपहासका अट्टहास भर देती है? कात्यायनी, वह समझानेकी बात नहीं है। आज तुम नए सिरेसे मुझे भूलनेका क्या उपाय बतलाओगी, क्या मैं स्वयं अपनी ओरसे वह बात भूलनेका प्रयत्न करनेमें कोई कसर करता हूँ? जबसे मैंने यह देखा है कि मेरे हृदयका यह संघात असंयत हो गया है तबसे जहाँ तक हो सकता है, मैं प्रायः बाहर ही बाहर अपना समय बिताया करता हूँ। आजन्मके सुख और साधनाकी वस्तु उच्च शिक्षाका क्षेत्र, उसमें भी वह मेरा मन नहीं बहलने देता है। इतना ही नहीं, यह जानकर मैंने अपने मनको भी कीचड़में फँसा दिया है कि वह उसी आशा और उसी स्मृतिका मोह बढ़ा देता है। उस उच्च शिक्षाके क्षेत्रको छोड़कर मैंने अपने आपको हीन काम-काजके कीचड़में फँसा लिया और मैंने सोचा कि इस नीच काम-काजके साथ साथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन भी क्रमशः गिरता गिरता निरुद्देश हो जायगा । लेकिन यहाँ तो कुछ और ही बात हो गई। यदि यह बात न होती तो आज मुझे तुम्हारे मुँहसे यह क्यों सुनना पड़ता कि तुम यहाँसे हटकर दूर चले जाओ, और काममें मन लगाओ ? अच्छा अब इन सब बातोंको जाने दो। लेकिन कात्यायनी, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि इस बार मैं तुमसे कुछ अधिक समयके लिए विदा होता हूँ। लेकिन फिर भी बहुत दिनों तक मैं बाहर नहीं रह सकूँगा। जब तक माँ जीती हैं तब तक तो बीच बीचमें उन्हें देखनेके लिए मुझे यहाँ आना ही पड़ेगा। फिर भी कात्यायनी, यदि तुम बहुत दिनोंके बाद भी देखो कि मैं अपने मनमें यही बात रखे हुए हूँ तो क्या होगा ? पर शायद तुम समझती हो कि यह सम्भव नहीं है। क्यों यही बात है न ?

म्लान हास्यमें विदा लेकर महेन्द्र कामाख्यानाथके मकानकी ओर चला गया।

---

## छठा परिच्छेद।

दोपहरकी प्रचंड धूपमें सारा गाँव निस्तब्ध है। वर्षा ऋतु है, परन्तु इधर कई दिनोंसे पानी बिलकुल नहीं बरसा है। आकाश मेघरहित है और आँखोंको जलानेवाली तेज धूप निकली हुई है। पृथ्वी निस्पन्द है और वायुके संचारका आभास भी उसके अंगके वस्त्रोंको चंचल नहीं कर सकता। जीवमात्र निस्तब्ध हैं। जिन पतंगों और जंगली मक्खियोंका काम केवल वनका स्पन्दन प्रकट करना है, उनके दल भी पेड़ों और पौधों आदिपर चुपचाप बैठे हुए हैं, केवल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


बीच बीचमें बहुत दूरसे तीव्र सित्कारकी तरह कोई तीक्ष्ण स्वर आ आकर प्रकृतिके इस सम्पूर्ण मूक भावको दूर करता है। वही स्वर मानो प्रकृतिके मर्मस्थलको बेधकर प्रतिध्वनि उत्पन्न करता है।

ज्योतिरत्नके मकानकी एक कोठरीमेंसे रह रहकर कुछ शब्द निकलता है जो उस घरके आँगनकी धूप द्वारा स्तम्भित निस्तब्धता भंग करता है। कोठरीमें रमा और कात्यायनी दोनों बैठी हैं। रमासे कात्यायनी पूछ रही है कि तुम्हारे अवश्य प्रतिपाल्य पशु पक्षी कौन कौन हैं तथा कौन कौनसे दीन आश्रित हैं और रमा भी बहुत उत्साहपूर्वक उन सबका विस्तृत वर्णन कर रही है। जो रमा बहुतसे लोगोंके सुख दुःख और अभाव आदिका बहुतसा अंश अपने ऊपर लिए रहती थी, उस रमाको स्वयं अपने दुःख और शोकमें डुबा रखना कात्यायनीको अच्छा नहीं लगता था। इसी लिए उसने आज अपना कोई जिक्र न छेड़कर रमासे ही उसके सम्बन्धकी सब बातें पूछना आरम्भ किया था। यह देखकर कि कात्यायनी अपना मन और बातोंकी ओर लगाना चाहती है, रमा भी प्रसन्नतापूर्वक अपनी सब बातें कहती चली जाती थी। जिक्र यह था कि रमाने अपने पोष्य जीवोंमें एक और वृद्धि की है। वह एक छला बालक है। उस मातापिताहीन बालकका मुँह देखकर मनमें कैसी ममता उत्पन्न होती है, यही बात कात्यायनीको समझानेके लिए रमा कह रही थी कि मैं उसे एक दिन तुम्हारे पास भेज दूँगी, तब तुम उसे देखना।

कात्यायनीने कुछ उदासीन भावसे कहा—रमा, तुम उसे देखोगी तो उसका कुछ भला भी होगा। मैं उसे देखकर क्या करूँगी?

रमाको कुछ आघातसा लगा और उसने दुखी होकर कहा—मेरे देखनेसे उसका क्या भला होगा? यही न कि उसे थोड़ा भोजन मिल


CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जायगा और पहननेको कुछ कपड़े मिल जायँगे ? क्या इतने दिनों तक मैं ही उसे खाना कपड़ा दिया करती थी ? जिस भगवानके देखनेसे मनुष्यका सचमुच भला होता है, वे क्या मनुष्यको कभी नहीं देखते ? लेकिन फिर भी वे क्यों मनुष्यको मनुष्यके पास भेजते हैं ? उसके दुःखका कुछ भार देनेके लिए ही न ? बस मनुष्यके अधिकारमें केवल यही है कि वह किसीका दुःख देखकर स्वयं भी दुखी हो और जान पड़ता है कि भगवान भी यही चाहते हैं कि मनुष्यका दुःख देखकर दूसरे मनुष्य कुछ दुखी हों, उसके दुःखका स्वयं भी कुछ अनुभव करें। तो फिर इस जरासी बातके लिए मनुष्य इतनी कृपणता क्यों दिखलावे ?

कात्यायनीने बात बदलकर कहा—तुम्हारी वह बुढ़िया रामाकी माँ अभी तक जीती है न ?

रमा—हाँ, जीती तो है, पर उसे आनेमें बहुत कष्ट होता था, इस लिए मैंने उससे कह दिया है कि तुम मत आया करो। हारानकी बुआको मैं बीच बीचमें उसे देखनेके लिए भेज दिया करती हूँ। हाय, उस बेचारीको भी कितना कष्ट है ! किसी दिन सुननेमें आवेगा कि वह चुपचाप मर गई। अबकी जब भइया घर आवेंगे तब—लेकिन उनके आनेसे ही क्या होगा ? कोई उसका वह कष्ट कैसे दूर कर देगा ? हाँ, जो ठाकुरजी उसका कष्ट दूर कर सकते हैं उन्हींसे मैं प्रार्थना किया करती हूँ कि हे महाराज, तुम उसका कष्ट कम कर दो और मेरे मनमें इस बातका विश्वास भी दृढ़ कर दो कि तुम उसे सदा देखा करते हो, जिसमें मेरी यह अस्थिरता कुछ कम हो जाय। मेरा तो बहुत जी चाहता है कि कभी कभी उसके पास जाया करूँ। पर मैं किसी तरह जा ही नहीं सकती। गोविन्ददेवने मेरा मन क्यों इतना अस्थिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कर दिया है कि मैं बराबर यही सोचा करती हूँ कि हाय मैं आप जाकर उसे न देख सकी ? क्यों यह बात मेरी समझमें नहीं आती कि वे उसे देख रहे हैं ?

कात्या०—रमा, तुम्हारे गोविन्ददेवकी एक तो पत्थरकी आँखें ठहरीं, दूसरे वे भी बन्द रहती हैं। उन आँखोंसे तो वे संसारको देखते ही नहीं हैं। वे तुम्हारी इन्हीं रक्त मांसकी आँखोंसे काम लेते हैं और इन छोटे छोटे हाथोंमें ही उनके हाथोंके चिह्न दिखाई देते हैं। जिस दिन इस संसारमें तुम्हारी दृष्टि न रह जायगी उस दिन वे भी दृष्टि-हीन हो जायँगे।

रमाके अन्तःकरणको मानो इस बातसे चोट पहुँची। वह जल्दीसे बोल उठी—नहीं बहन, मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ, ऐसी बात मत कहो। गोविन्ददेवको पत्थर मत कहो। वे उन्हीं आँखोंसे सब कुछ देखते हैं और जिसकी समझमें उनका वह दृष्टिपात आ जाता है, वह अपने मनमें ही उस दृष्टिका अनुभव करने लगता है। जिस प्रकार मनुष्यके अन्तःकरणमें वह दृष्टि आती है उसी प्रकार जगत्के हृदयमें भी आती है। इसी लिए जगत् ठहरा हुआ है। इसी लिए तुम भी हो और मैं भी हूँ। यदि वह दृष्टि न रह जाय तो फिर क्या कोई इस संसारमें रह सकता है ? मैं अपनी आँखें बन्द करके मन ही मन सुना करती हूँ, बल्कि देखती भी हूँ कि बुढ़िया रामाकी माँ अपनी अंधेरी कोठरीमें अकेली पड़ी हुई रोगकी पीड़ाके कारण रोती है और उसी भगवानको पुकारती है जिसकी दृष्टि उस छोटे घरके अँधेरेमें और साथ ही मृत्युके गम्भीर अन्धकारमें प्रकाशमान रहती है। इसी लिए वह दिन रात निर्भय होकर मृत्युको बुलाया करती है। यदि उसे भगवानकी वह दृष्टि न दिखाई देती तो क्या मनुष्य कभी इस तरह मृत्युको बुला सकता था,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


वह इस प्रकार निर्भय होकर मृत्युकी कामना करनेका साहस कर सकता था ?

कात्यायनीने चुपचाप सिर झुका लिया। रमाकी बातका प्रतिवाद करनेका उसे साहस नहीं हुआ। थोड़ी देर तक चुप रहनेके उपरान्त रमाने उसके मुखकी ओर देखते हुए पूछा—क्यों जी, आज कल तुम कभी मन्दिरमें नहीं आतीं, आरतीके समय माँको साथ लेकर चली आया करो न ?

कात्यायनीने उसी प्रकार सिर झुकाए हुए उत्तर दिया—इच्छा नहीं होती।

रमा—क्यों ? इच्छा क्यों नहीं होती ? तुम्हें जबरदस्ती ऐसी इच्छा करनी पड़ेगी। तुम आकर आरतीके प्रकाशमें गोविन्ददेवकी उन पत्थरकी आँखोंकी ओर देखा करो, तब तुम्हारी समझमें आ जायगा कि उन बन्द आखोंकी ही दृष्टि किस प्रकार मनुष्यके हृदयके अन्दर पहुँच जाया करती है और तब वहाँसे वह दृष्टि चलकर किस प्रकार समस्त भुवनका चक्कर लगाती है। तथा उसी दृष्टिके कारण मनुष्यको किस प्रकार शोकके समय सान्त्वना मिलती है, दुःखमें शान्ति मिलती है और अनन्त यन्त्रणामें भी वह किस प्रकार परमात्माको प्राप्त करता है।

कात्यायनी फिर भी पहलेकी ही भाँति चुप रही। उसने केवल एक ठंढी साँस ली, जिससे रमाने समझ लिया कि कात्यायनीका शोकग्रस्त मन अभी तक स्वाभाविक अवस्थामें नहीं आया है। अपनी आकस्मिक उत्तेजनासे कुछ लज्जित होकर रमाने फिर कहा—अगर तुम मन्दिरमें आया करोगी तो तुम्हारा मन भी कुछ कुछ बहलने लगेगा।

कात्या०—भला मन भी कहीं इधर उधर जानेसे बहलता है ? तुम तो जानती ही हो कि सन्ध्या समय पिताजी इसी मन्दिरके नीचेवाले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


घाटपर जाकर सन्ध्या पूजा और जप आदि किया करते थे। तुम मुझे प्रायः अपने पास बुलाया करती थीं। किसी दिन मैं तुम्हारे पास आती थी, किसी दिन नहीं आती थी। मैं घाटपर बैठी बैठी देखा करती थी कि उस पारके आकाशमें लाल आभा मिलती जा रही है, मन्दिरके शिखरपर सन्ध्याका तारा चमकता है और उसी समय मन्दिरमें घंटा और घड़ियाल बजने लगते हैं। उसी समय पिताजी उठकर खड़े हो जाते थे और आकाशकी ओर देखते हुए हाथ जोड़कर जोर जोरसे स्तोत्र पढ़ने लगते थे। तुम्हारे मन्दिरकी आरतीकी अपेक्षा उस आरतीकी शोभा मेरे मनमें अधिक समाई हुई है। अब मुझे वह आरती तो दिखाई ही नहीं देगी और न वह स्तोत्र ही सुनाई देगा। तो फिर मैं वहाँ क्या करने जाऊँ?

पहले तो कुछ देर तक रमा चुप रही, फिर वेदनाके कारण आँसुओंसे भरे हुए नेत्रोंसे कात्यायनीकी ओर देखती हुई बोली—तुम और किसीको मत देखा करना, केवल गोविन्ददेवकी ओर देखना।

कात्या०—बहन, मैं तो तुम्हारे गोविन्ददेवको पहचानती ही नहीं। मेरे गोविन्ददेवका स्थान तो घाटकी उन्हीं सीढ़ियोंपर था। जब मैं वहाँ जाऊँगी, तब क्या मुझे उस शून्य स्थानके अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई पड़ेगा?

रमाने कात्यायनीके गलेमें हाथ डाल दिया, उसकी गोदमें अपना मुँह छिपा लिया और रुँधे हुए स्वरसे कहा—अच्छा तो रहने दो। तुम वहाँ मत जाना।

कात्यायनीने कुछ सोचकर कहा—नहीं, अब मैं वहाँ जाया करूँगी। माँकी तो वहाँ जानेकी इच्छा होती है, पर वे मेरे ही कारण नहीं जातीं। वहाँ जानेपर तुमसे भी रोज भेंट हो जाया करेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.



रमा—मैं भी तो यही कहना चाहती थी । तुम लोग दिन भर अकेली ही घरमें बैठी रहा करती हो ।

कात्या०—नहीं, इससे हम लोगोंको किसी प्रकारका कष्ट नहीं होता।

रमा—कष्ट नहीं होता ? मुझे तो होता है। दिन भर तो मेरे पास बहुतसे लोग रहा करते हैं । आदमीको जितना ही काम होता है उसे उतने ही ज्यादा आदमियोंसे मेल जोल रखना पड़ता है और उतने ही आदमियोंसे बात चीत करनी पड़ती है । लेकिन फिर भी कभी कभी मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मैं अकेली हूँ और मेरी तबीयत घबराने लगती है। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मेरे पास कोई अच्छा साथी नहीं है। हाँ, यदि उस समय मैं मन्दिरमें चली जाऊँ और गोविन्ददेवका कुछ काम करने लग जाऊँ, तो तबीयत ठीक हो जाती है। और नहीं तो फिर यह जी चाहता है कि तुम्हारे पास चली आऊँ और तुम्हींसे बात चीत किया करूँ । क्या तुम्हारा जी इन सब बातोंके लिए नहीं चाहता ?

कात्यायनीने कुछ सोचकर कहा—नहीं, यह बात तो नहीं है कि बिलकुल ही जी न घबराता हो। पर वह घबराहट केवल पिताजीके लिए ही होती है। जब तक वे थे तब तक मुझे कभी किसी बातका अभाव नहीं जान पड़ता था। तुम तो जानती ही हो कि वे सदा मुझे अपने ही पास रखा करते थे। मैं जो कुछ पढ़ती, सुनती और समझती थी वह सब उन्हींसे। आज वह नहीं हैं तो मेरे लिए फिर और कोई नहीं है। मुझे चारों ओर वही अभाव दिखाई देता है।

रमा—बहन, ईश्वरके कार्यमें मनुष्य तो कुछ कर ही नहीं सकता। अब वह दुःख दूर करनेका तो कोई उपाय ही नहीं है। वह दुःख तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


अब जैसे तैसे सहना ही पड़ेगा। लेकिन माता पिता अपनी लड़कीके लिए एक और ऐसा संगी ठीक कर देते हैं, जो माता पिताके न रहनेपर भी सदा उसके साथ रहता है। बहन, तुम ऐसा संगी लेनेमें क्यों इतनी आपत्ति करती हो, भला इस तरह कब तक काम चलेगा? आज तो मान लिया कि माँ हैं, कलको जब वे नहीं रहेंगी तब क्या होगा?

कात्या०—क्या तुम्हारी माँ हैं? यदि नहीं हैं तो फिर तुम्हारा काम कैसे चलता है? लेकिन नहीं, तुम्हारे तो गोविन्ददेव हैं न।

रमा०—तो क्या वे गोविन्ददेव तुम्हारे नहीं हैं?

कात्या०—यह तो मैं पहले ही कह चुकी हूँ। इसी लिए मैं कहती हूँ कि जिस तरह तुम रहती हो उसी तरह मैं भी रहूँगी।

रमा०—मनुष्यको और विशेषतः स्त्रीको इस प्रकार असंयत भावसे नहीं रहना चाहिए। उसे किसी बन्धनमें अवश्य पड़ना चाहिए। माता पिता और समाज मिलकर मनुष्यको सदाके लिए धर्मके उसी एक बन्धनमें बाँध देते हैं जिसके कारण वह विधाताकी शक्ति देखता है और शान्त तथा सन्तुष्ट होकर अपना जीवन बिताता है। और नहीं तो जब तक मनुष्य अपने सम्बन्धमें स्वाधीन रहता है तब तक वह यही सोचता रहता है कि क्या करूँ, यह करूँ या वह करूँ और इस असमंजसके कारण उसका जीवन बहुत ही अशान्तिपूर्वक बीतता है। जब तक तुम उस बन्धनमें न पड़ोगी, तब तक तुम्हें निश्चिन्तता और शान्ति नहीं मिलेगी।

कात्या०—तो तुम समझ लो कि मुझे वह शान्ति मिल गई। मैं भी तो सब तरहसे निश्चिन्त ही हूँ।

रमा०—तुम यह व्यर्थका तर्क छोड़ दो। यदि निश्चिन्त होती तो इस शोकके समय भी तुम्हें कुछ शान्ति मिलती। लेकिन वह बात तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


है नहीं। तुम संसारसे अलग और अनोखी तो हो ही नहीं। तुम मुझे यह बतलाओ कि ब्याह करनेमें तुम्हें क्यों इतनी आपत्ति है ?

कात्या०—क्या तुमने नहीं सुना कि मेरी जन्मपत्री जन्मकुंडली ठीक नहीं है ? मेरे राशि गण सब बहुत ही खराब हैं।

रमा०—मैं तो सुनती हूँ कि वे बहुत ही उच्च हैं। वे इतने उच्च हैं कि सहजमें उपयुक्त पात्र नहीं मिलने देते हैं। फिर भी जब बाबूजी प्रयत्न कर रहे हैं तब अवश्य ही कोई अच्छा पात्र मिल जायगा।

कात्या०—क्या वे अभी तक इसके लिए उद्योग किए ही जाते हैं, उन्होंने उद्योग छोड़ा नहीं ?

रमा—क्यों, उद्योग क्यों छोड़ने लगे ? वे क्या कोई तुम्हारी तरह पागल हो गए हैं ? तुम्हारे बाबूजी तुम्हारा सब भार उन्हींपर छोड़ गए हैं, क्या उन्हें इस बातका ध्यान नहीं है ?

कात्या०—मेरा भाई महेन्द्र है, तुम लोग हो, क्या तुम लोगोंमेंसे कोई मेरा भार न उठा सकेगा ?

कात्या०—हम लोग हैं तो सही, पर तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं ? तुम परायोंकी तरह इतनी दूर पड़ी रहा करती हो। कौन तुम्हें देखने आता है और कौन तुम्हारी फिक्र रखता है ? आज यदि ईश्वर न करे तुम्हारी माँ न रह जायँ, तो सब लोग तो तुम्हें अनाथ ही कहेंगे।

कात्या०—लोग अनाथ कहा करें। उनके कहनेसे मैं अनाथ नहीं हो जाऊँगी। तुम्हीं लोग सदा मेरी खोज खबर लिया करोगे।

रमा—क्या सदा तुम यही भरोसा किए बैठी रहोगी या हम लोग ही सदा तुम्हारी खोज खबर लिया करेंगे ?

कात्या०—क्यों नहीं ? और जो तुम ब्याहकी बात कहती हो, सो वह भी तो पराएके ही साथ होगा। ब्याहके बाद वही पराया अपना हो जायगा। फिर भी सदा उसीके ऊपर भरोसा रखना पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.



रमा—लेकिन उसे पराया नहीं कह सकते । बहन, वह तो धर्म और समाजके बन्धनसे बँध जाता है और ऊपरसे उसमें प्राणोंका बन्धन भी आ मिलता है ।

कात्या०—क्या दयाका बन्धन कोई बन्धन ही नहीं है ? क्या इसमें भी प्राणोंका बन्धन नहीं होता ? यदि इसमें भी प्राणोंका बन्धन न होता, तो रमा, आज तुम मेरे सामने मिथ्या हो जातीं । संसारमें और सब जगह यह बात चल सकती है, पर तुम लोगोंके निकट तुम्हारे मुँहसे यह बात बिलकुल शोभा नहीं देती ।

रमा०—बहन, मैं तो तुमसे हार गई । अब मैं तुम्हारे साथ तर्क नहीं करूँगी । लेकिन फिर भी इतना समझ रखो कि जहाँ तक हो सकता है, बाबूजी अब भी प्रयत्न कर रहे हैं ।

कात्यायनीका मुख क्रमशः गम्भीर हो गया । उसने कहा—रमा, तुम उन्हें मना कर दो । वे इसके लिए व्यर्थ कष्ट न करें । बाबूजी मुझे सदा कुमारी रहनेका आदेश दे गए हैं । वे व्यर्थ मुझसे पिताकी आज्ञाका उल्लंघन करनेके लिए आग्रह न करें ।

रमा—तुम्हारे मनमें यह भ्रमपूर्ण संस्कार कैसे स्थान कर बैठा है ? वह बहुत शोकका समय था, इसी लिए शायद उस समयकी सब बातें तुम्हें ठीक ठीक याद नहीं हैं । तुम्हारे बाबूजीने कहा था कि तुम्हारे ब्याहका एक मात्र उपाय है । यदि वह उपाय न हुआ तो फिर मेरी कन्या सदा कुमारी ही रहेगी । उस एक मात्र उपायका यही मतलब था न कि ज्योतिषके अनुसार कोई उपयुक्त पात्र ढूँढ़कर तुम्हारा ब्याह कर दिया जाय ? यही बात तो बाबूजी भी कह रहे हैं । क्या वह कभी भूल सकते हैं ? जान पड़ता है कि तुम्हें वह बात अच्छी तरह याद नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.



कात्या०—मुझे बहुत अच्छी तरह सब बातें याद हैं। और फिर मान लो कि मैं भूलती ही हूँ, तो भी रमा मैं तुमसे एक अनुरोध करती हूँ; केवल अनुरोध ही नहीं करती बल्कि तुमसे भिक्षा माँगती हूँ कि इस अनहोनी बातके लिए तुम व्यर्थ चेष्टा मत करो और मुझे अधिक लज्जित तथा दुःखित मत करो।

रमा—लेकिन तुम पहले यह बतलाओ कि यह बात अनहोनी कैसे है, यह हो क्यों नहीं सकती ? पहले तुम मुझे इसका कारण बतला दो, तब और कोई बात कहो।

कात्या०—यदि तुम मुझे कुछ भी चाहती हो, मुझपर कुछ भी स्नेह रखती हो, तो मैं हाथ जोड़कर तुमसे यही भिक्षा माँगती हूँ कि तुम आगेसे इस बातका कोई जिक्र ही मत किया करो।

कात्यायनीका कातर स्वर सुनकर रमा व्यथित होकर चुप हो रही। कुछ देर बाद वह बोली—अच्छा जाने दो, अब मैं इस बातका कभी कोई जिक्र न करूँगी। मैं तुमसे अभी जो कुछ कह रही थी वह केवल अपनी इच्छासे ही नहीं कह रही थी। बाबूजीने मुझसे कहा था कि तुम ये सब बातें अच्छी तरह एक दिन कात्यायनीको समझा दो और तुम्हारे मनमें जो भ्रमपूर्ण विश्वास हो गया है उसे दूर करनेके लिए भी कहा था। पर आज मैंने समझ लिया कि मुझसे यह काम नहीं हो सकेगा। मैं समझती हूँ कि जन्मभर कुमारी रहना ही तुम्हारे भाग्यमें लिखा है।

कात्या०—हाँ, उनसे कह दो कि वे अपने मनमें यही बात समझ लें।

रमा—लेकिन कात्यायनी, मैं तुमसे एक और बात कहती हूँ। तुम अपने मनमें और कोई ख्याल मत करना। मेरी समझमें यह आता है कि तुम मुझसे कोई बात छिपाती हो। तुमने मुझसे जो कुछ कहा है उसके सिवा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कोई और बात भी तुम्हारे मनमें है, पर तुम वह बात कह नहीं रही हो। लेकिन क्या तुम सचमुच मुझसे वह बात छिपाए रहोगी? यह बतलाओ कि तुम मुझसे साफ साफ सब बातें क्यों नहीं कहती हो?

कात्यायनीने चुपचाप सिर झुका लिया और वह मानो धीरे धीरे निस्पन्द होने लगी। जब रमाने देख लिया कि कात्यायनी मेरी इस बातका कोई उत्तर नहीं देगी, तब उसने ठंढी साँस लेकर कहा—यदि तुम वह बात न कहना ही ठीक समझती हो, तो रहने दो। अच्छा, अब मैं घर जाती हूँ। अब सन्ध्या होनेमें अधिक विलम्ब नहीं है।

कात्यायनीने सिर उठाकर रमाके उदास मुखकी ओर देखा। उसकी नीरव दृष्टिमें कोई ऐसी बात थी जिसे देखकर रमा उठती उठती फिर बैठ गई और कात्यायनीका हाथ पकड़कर उसने स्नेहपूर्ण कोमल स्वरमें कहा—बहन तुम नाराज मत हो। मुझे क्षमा करो। मुझसे भूल हो गई।

अब कात्यायनीने गम्भीर स्वरमें उत्तर दिया—रमा, सचमुच मैं तुमसे एक बात छिपाती हूँ। लेकिन तुम अच्छी तरह समझ लो कि वह बात छिपाना ही ठीक है। इसीमें तुम्हारा भी मंगल है और मेरा भी।

रमा—क्या वह बात सुननेसे मेरा भी अमंगल होगा? भला वह कौनसी ऐसी बात है? अब तो बहन तुम्हें वह बात कहनी ही होगी।

कात्यायनीने बातको सँभालते हुए कहा—नहीं, अमंगल नहीं होगा। मेरे कहनेका मतलब केवल यही है कि वह बात सुनकर न तो तुम्हीं सुखी होगी और न कहकर मैं ही सुखी होऊँगी।

रमा—यदि वह बात कहनेमें तुमको दुःख हो, तो जाने दो; किन्तु—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.



कात्यायनी—अब और 'किन्तु' नहीं। सचमुच बहुत देर हो गई है। ठाकुरजीकी आरती आदि कब करोगी? अब तुम घर जाओ। आज मैं माँको लेकर आरती देखने आऊँगी।

रमा कुछ प्रसन्न होकर उठी। दोनोंने बाहर आँगनमें आकर देखा कि सचमुच दिन बहुत ढल गया था। जो पृथ्वी दिनभर धूपके कारण उजली थी उसपर अब श्याम छाया आ चली थी। केवल नारियलोंके ऊँचे सिर सोनेकी पताकाओंके समान चमक रहे थे। गरम पृथ्वीमेंसे अब भी गरमी निकल रही थी। दग्ध दिगन्त अब भी ताम्र और कपिश वर्णका था। रमा बोली—बहुत देर हो गई। अब मैं किस समय क्या करूँगी? लेकिन हारानकी बूआ भी तो अभी तक नहीं आई। मैं किसके साथ जाऊँगी?

कुछ देर तक इधर उधर देखनेके उपरान्त रमाने फिर कहा—बेलेके पेड़ोंमें तो खूब कलियाँ लदी हुई हैं। जान पड़ता है कि खूब पानी देती हो।

कात्या०—कूएँके पास हैं न, इसीसे इन्हें बराबर बहुतसा जल मिला करता है। पहले तो इनमें और भी अधिक जल पड़ा करता था। बाबूजी यहीं हाथ पैर धोया करते थे।

रमा—तब तो नित्य बहुतसे फूल उतरा करते होंगे। तुम सब फूलोंका क्या करती हो?

कात्या०—कुछ भी नहीं। यहीं सब फूलते हैं और यहीं झड़ जाते हैं।

रमा—आज कुछ फूल गोविन्ददेवको चढ़ानेके लिए लेती आना। इन फूलोंकी माला बहुत बढ़िया होगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कात्या०—लो देखो, तुम्हारी मजदूरनी भी आ गई।

रमा—( मजदूरनीसे ) तुम इतनी देर करके क्यों आई? मैं तो यहाँ बातोंमें लगी रह गई। शायद तुम भी वहाँ बैठी बैठी बातें ही करती थी। चलो बहुत देर हो गई। अब मैं कब क्या करूँगी?

रमा मजदूरनीके साथ चली गई। कात्यायनीने माँको पुकारा, पुकारकर कहा—माँ, आज मन्दिरमें आरती देखने चलोगी?

माँ—इधर बहुत दिनोंसे तो हम लोग गई ही नहीं। यदि आज तुम्हारा जी चाहे तो चलो।

दोनों घरका काम धन्धा निपटाकर दर्शन करनेके लिए जानेको तैयार हुईं। उस समय पृथ्वीके नासारन्ध्रोंमेंसे धीरे धीरे मृदु निश्वास-वायु निकल रही थी। मेघरहित नीला आकाश धूसर आभासे रंग गया था। दिग्वधूके लाल अंचलसे गाँवमें शान्तिका स्निग्ध प्रकाश फैल रहा था। कात्यायनीको फूल चुनते हुए देखकर माँने पूछा—फूल क्या ठाकुरजीपर चढ़ानेके लिए चुन रही हो?

कात्या०—नहीं गंगाजीको चढ़ानेके लिए।

माँने अस्फुट स्वरसे कहा,—ठाकुरजीपर ही क्यों न चढ़ा दो?

कात्या०—नहीं, आज तो मैं गंगाजीको ही चढ़ाऊँगी। कलसे ठाकुरजीपर चढ़ाया करूँगी।

जब रमा घबराई हुई जल्दी जल्दी मकान पहुँची, तब उसने आँगनमें पैर रखते ही देखा कि एक कोनेमें कई दीन बालक और बालिकाएँ तथा मलिनमुख एक स्त्री बैठी हुई है। लम्बे दालानमें कई स्त्रियाँ हँसिया लिए हुए तरकारी चीर रही हैं और मुँहसे कहती जाती हैं—छोटे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


आदमियोंको इतना सिर चढ़ाना भी ठीक नहीं। अरे भाई, भीख माँगने आए हो तो बाहर खड़े रहो और भीख लेकर चले जाओ। घुसते घुसते यहाँ अन्दर तक क्यों आ पहुँचे? पहले तो कभी ऐसी बात नहीं होती थी। इसीको सिर चढ़ना कहते हैं।

एक ओर एक विधवा वृद्धा नहा धोकर एक आसनपर बैठी हुई थी और गौमुखीमें हाथ डाले जल्दी जल्दी माला फेर रही थी और उस विचित्र गौमुखीके छेदमेंसे तर्जनी उँगली निकालकर उन भिखमंगोंको तर्जन करके मनका गुस्सा निकाल रही थी। पास ही एक और स्त्री पैर पसारे हुए बैठी बत्ती बना रही थी और उस वृद्धाको इशारेसे बतला रही थी कि घरके मालिक जो सब लोगोंका असंगत आदर करते हैं, उसीका यह परिणाम है। वृद्धाने जल्दीसे जप खतम करके गौमुखी हाथसे रख दी और कहना शुरू किया—वाह वाह, बड़ी बापकी दुलारी बनी है। मैं भी तो इसी तरह लड़कपनमें विधवा हुई थी। अपने माँ बापपर बहुत हुकूमत करती थी। व्रत किए, नियम किए, तीर्थ किए, धर्म किए। लेकिन इस तरहकी बातें तो मैंने कभी कानसे भी नहीं सुनीं।

इसके बाद उस वृद्धाने हुंकार भरकर उन म्लानमुख व्यक्तियोंकी ओर देखते हुए और हाथ चमकाते हुए कहा—भीख माँगने आए हो, तो अतिथिशालामें जाओ। क्या बिना घरके अन्दर घुसे भीख नहीं माँगी जाती? आजकलके लड़के लड़कियोंका जो यह हाल हो रहा है, उसीसे छोटी जातके लोगोंका मिजाज इतना बढ़ गया है। और यह जो लंगड़ा लड़का है इसका तो मिजाज और भी बढ़ गया है। अपना तो ठिकाना ही नहीं लगता, साथमें औरोंको भी लगा लाया है। जाओ, बाहर जाओ। लो मेरी तो समझमें ही नहीं आता कि लोग क्यों इन्हें अन्दर आने देते हैं। जब देखो तब नई नई मूर्तियाँ सामने आ खड़ी होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


बैठी हुई दीन बालिकाएँ और बालक घबराकर उठ खड़े हुए। क्यों कि वे पहले कभी इस मकानमें आए नहीं थे और कभी कहीं उनकी ऐसी खातिर नहीं हुई थी। वृद्धाके डरसे वह लँगड़ा बालक भी घबराकर इधर उधर देखने लगा और अपने साथियोंको बुलाकर वहाँसे चलनेकी तैयारी करने लगा। इतनेमें ज्यों ही उसकी दृष्टि दरवाजेकी ओर गई, त्यों ही उसका मलिन मुख आनन्दसे उज्ज्वल हो गया। उसने अपने साथियोंकी ओर अभय और आश्वासनकी दृष्टिसे देखते हुए आनन्दपूर्ण स्वरमें कहा—लो, माँ आ गई।

रमा—क्यों रे कन्हई, तू इस समय कहाँसे चला आया?

कन्हईने कोई उत्तर नहीं दिया, केवल आनन्दपूर्वक सिर हिला दिया। उसके साथ जो वृद्धा स्त्री आई थी, अपने नेता कन्हईकी बालिका माँको देखकर भी उसे तसल्ली नहीं हुई। जप करनेवाली वृद्धा स्त्रीके बिगड़नेके कारण उसकी जान सूख गई थी। उसने एक बालिकाको खींचकर अपने पास कर लिया और कुछ दुखी होकर कहा—चल बेटी, चलें, यहाँ रात करनेसे कोई फायदा नहीं। यह वक्त इन लोगोंके काम करनेका है।

रमा—क्या तुम लोग बहुत देरसे आए हुए हो?

रमाकी आवाज सुनते ही वहाँकी सारी हवा ही बदल गई। अब तक जो स्त्रियाँ छोटे आदमियोंका सिर चढ़ना देखकर बड़ी बड़ी वक्तृताएँ दे रही थीं, उन्होंने ऐसा स्वर बदला कि मानो किसी और ही जगतसे उतरकर आई हों। वे बोलीं—हाँ बेटी, ये सब बेचारे बहुत देरसे आकर बैठे हुए हैं। बैठे बैठे बेचारे हैरान हो गए हैं। ये लोग यह नहीं बतलाते थे कि कौन हैं और किस लिए आए हैं। इसीसे हमने समझा था कि ये सब नए हैं। हम तो इन्हें पहचानती नहीं थीं। बाहरवाले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


अगर पहचानते हों तो पहचानते हों। इसी लिए हम इनसे कह रही थीं कि भइया, तुम लोग बाहर जाओ।

रमा—अगर ये लोग बाहर जा सकते होते तो फिर यहाँ क्यों आते? बेटा, तुम लोग बैठ जाओ। तुम्हें बहुत कष्ट हुआ होगा। इन लोगोंको तो मैंने भी कभी नहीं देखा था।

कन्हईने आगे बढ़कर बिना कुछ भूमिका बाँधे कहा—माँ इन लोगोंका घर जल गया है। इसलिए इन लोगोंको बड़ा कष्ट है।

रमा—हैं? घर जल गया है? कब? इनका घर कहाँ था, इसी गाँवमें?

कन्हई—नहीं, अगर इस गाँवमें होता तब तो बड़े बाबूजीसे कहते ही बन जाता। इन लोगोंका घर महुरा गाँवमें था। यहाँसे दो तीन कोस दूर है। आज तीन महीने हुए इनका घर जल गया है। तब से ये लोग बिना घरके यों ही पड़े रहते हैं। बड़े कष्टसे दिन बिताते हैं। इधर कुछ दिनोंसे एक आदमीके यहाँ रहते थे। पर जिसके घरमें रहते थे वह अब इन लोगोंको अपने घरमें रखना नहीं चाहता।

जप करनेवाली वृद्धा अब तक बराबर इन लोगोंकी ओर कोपपूर्ण दृष्टिसे ही देख रही थी। पर अब उसने भी सहानुभूति बतलाते हुए कहा—क्यों जी, तुम्हारे गाँवका जमींदार कौन है? आखिर सब जगह जमींदार ही तो अपनी प्रजाका दुःख दूर करते हैं।

कन्हई—नौगाँवके जमींदार ही इनके गाँवके जमींदार हैं। पर वे—

सर्वज्ञा वृद्धा बीचमें ही बोल उठी—अरे वह? भला उनके जैसा नीच कौन होगा! भला हमारे बाबूकी बराबरी कौन कर सकता है? रमा, देखो ठाकुरजीकी आरतीका समय हो रहा है। अब तुम तो मन्दिरमें जाओगी न? इस समय इन लोगोंको जाने दो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


रमा—हाँ अब मैं जाती हूँ। पर जरा इन लोगोंसे बात कर लूँ। ये लोग बहुत देरसे आकर बैठे हुए हैं। हाँ, अगर तुम इन लोगोंसे थोड़ी देर तक बातें करो तो—

वृद्धा—नहीं, यह मुझसे नहीं होगा। लो मैं अब जाती हूँ। बेचारे सब कबसे तुम्हारे आसरे बैठे हैं। तुम इनसे बातें करो। मैं ठाकुर-जीकी आरतीका बन्दोबस्त कर दूँगी।

इतना कहकर वह अपनी अप्रसन्नताको छिपानेका प्रयत्न करती हुई फिर गौमुखीमें हाथ डालकर माला जपने लगी।

रमाकी समझमें नहीं आ रहा था कि अब मुझे क्या करना चाहिए। यह देखकर कन्हई बोला—अच्छा तो माँ, आज हम लोग जाते हैं। मैं फिर किसी दिन इन लोगोंको लेकर आऊँगा।

रमा—अरे तू फिर किसी दिन इन लोगोंको दो तीन कोससे लेकर यहाँ आवेगा? एक तो तू ही लँगड़ा है, दूसरे इस औरतमें तो हड्डी और चमड़ेके सिवा और कुछ भी नहीं है। क्यों जी, इन छोटे छोटे बच्चोंको इतनी दूरसे लेकर तुम कैसे यहाँ तक आई और अब तो सन्ध्या हो चली है तुम वहाँ जाओगी किस तरह? और यह तो बतला कन्हई, कि ये लोग तुझे मिल कहाँ गए?

कन्हईने हँसते हुए उत्तर दिया—हमारे मामाका घर वहीं है, जहाँ ये लोग रहते हैं। माँ, अब तो मैं बहुत दूर तक चल लेता हूँ। घरके बिना इन लोगोंको बहुत कष्ट था, इसी लिए—

इतना कहते कहते कन्हई चुप हो गया।

रमाने उसे उत्साहित करते हुए कहा—कन्हई, तूने बहुत अच्छा किया जो इन लोगोंको यहाँ ले आया। (स्त्रीसे) क्यों जी, तुम फिर उसी गाँवमें अपना घर बनाना चाहती हो?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


वह दीन स्त्री अब तक कुछ आशा और कुछ निराशामें पड़ी हुई रमाके मुँहकी ओर देख रही थी । रमाके सुन्दर अमल तरुण मुखसे मानो करुणा फूटी पड़ती थी। पर वह सोचती थी कि यह अभी बालिका है, इससे कहाँ तक दयाकी आशा रखना उचित है ! संसार बड़ा ही कठिन है। क्या यह बालिका मेरा अभाव दूर कर सकेगी ? इसी लिए रमाके पूछनेपर उसने उत्तर दिया—मेरे चाहनेहीसे क्या होगा ? मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। मैं तो इन लड़कोंके खाने पीनेका भी कुछ बन्दोबस्त नहीं कर सकती, तो फिर मकान कहाँसे बनाऊँगी ?

हारानकी बूआने आगे बढ़कर कहा—आज क्या मन्दिरमें दर्शन करने नहीं चलोगी ?

रमा—आज कात्यायनीके यहाँ मुझे बड़ी देर हो गई। तुम मिसरानीजीसे आरती करनेके लिए कह दो। मैं जरा इन लोगोंसे बात कर लूँ।

हारानकी बूआने कहा—नहीं, आरतीका इन्तजाम तो हो गया है। उसकी फिक्र नहीं है। मैं कहती हूँ कि आज तुम मन्दिरमें नहीं चलोगी ?

रमा—मैं अभी चलती हूँ। तुम जरा जल्दीसे जाकर इन लड़कोंके वास्ते कुछ खानेको तो ले आओ।

उन बालक बालिकाओंकी माताने बीचमें बाधा देकर कहा—तुम्हारी सेवा पूजामें देर हो रही है। तुम जाओ बेटी। मैंने तो तुम्हारे जैसी लड़की कहीं देखी ही नहीं। तुम्हारी खाली बातोंसे ही मेरा जी ठंढा हो गया है। हो सका तो मैं फिर किसी दिन आऊँगी, यदि कोई इन अनाथोंपर कुछ दया करे । हमारा दुःख कुछ तुम्हीं समझ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


सकोगी। तुम्हारी बातोंसे ही हमारा बहुतसा दुःख दूर हो गया है। यह लड़का तुम्हारा सब हाल कहकर हम लोगोंको यहाँ तक ले आया है। अच्छा, आज तुम्हें बहुत काम है। जाओ, तुम जाकर ठाकुरजीकी सेवा पूजा करो। मैं फिर किसी दिन आऊँगी।

रमा—नहीं भला यह कैसे होगा? इस सन्ध्याके समय तुम गृहस्थके घरसे ऐसे ही कैसे चली जाओगी? इन लड़कोंके चेहरेसे ही मालूम होता है कि इन्हें बहुत भूख लगी है। इन्हें लेकर दो तीन कोसका रास्ता चलोगी और रातके समय चलकर जाओगी? और फिर तुम्हारी भी तो यही दशा है!

स्त्री—हम लोग सब कुछ इसी तरह सह लेते हैं। चाँदनी रात है, बीच बीचमें ठहरकर सुस्ताते हुए चले जायँगे।

इतनेमें हारानकी बूआ बहुतसा खानेका सामान वहाँ ले आई और उन लड़कोंको खिलाने लगी। वे लड़के भी बहुत प्रसन्न होकर खाने लगे। रमाने सिर हिलाते हुए कहा—नहीं, यह नहीं हो सकता। आज रातको तुम्हें यहीं रहना पड़ेगा।

स्त्री—नहीं, मैं यहाँ नहीं रह सकूँगी। वहाँ मेरी बुड्ढी माँ है। वह रातभर चिन्ता करती करती ही मर जायगी। तुम्हारी यह दया ही मैं जन्मभर नहीं भूलूँगी।

रमाने कुछ चिन्तित होकर हारानकी बूआकी ओर देखते हुए कहा—तुम्हें मालूम है, बाबूजी कहाँ हैं? मन्दिरमें ठाकुरजीका दर्शन करने गए हैं?

हारानकी बूआने उत्तर दिया—क्या तुम नहीं जानतीं कि बाबूजी कहाँ हैं? अब सन्ध्या हो गई है, इन सब बातोंको रहने दो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


रमा—बतलाओ न क्या बात है? क्या वह घरमें नहीं हैं?

हारानकी बूआ कुछ इधर उधर कर रही थी, पर जप करनेवाली वृद्धासे नहीं रहा गया। उसने जल्दीसे हाथकी माला सिरसे लगाकर और खड़ी होकर कहा—मानो तुम कुछ जानती ही नहीं हो! वन्द्योपाध्यायके लड़केका हाल तुमने नहीं सुना? वह बेचारा बीमार था, बिना दवा दारूके ही मर गया। बाबूजीने शहरसे डाक्टर लानेके लिए आदमी भेजा था। उधर डाक्टर आए इधर घरसे लाश निकालनेकी तैयारी होने लगी। यही सुनकर बाबूजी दौड़े हुए वहाँ गए हैं। हाय उस दिन उसकी माँ लड़केको साथ लेकर अन्नपूर्णाजीका प्रसाद लेने यहाँ आई थी। उस बेचारीका भी कैसा फूटा भाग्य है। ऐसा अच्छा लड़का बातकी बातमें मर गया।

रमा चुपचाप पत्थरकी मूरतकी तरह खड़ी सब कुछ सुनती रही। देखते देखते उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगी। जप करनेवाली वृद्धा अपना सब सामान उठाकर 'हे हरि, हे परमेश्वर, जो तुम्हारी इच्छा' कहती कहती अन्दर कोठरीमें चली गई। हारानकी बूआने उस वृद्धापर बिगड़ते हुए कहा—तुमसे थोड़ी देर ठहरा भी न गया। सन्ध्याके समय रुलाकर ही छोड़ा। (रमासे) नहीं, तुम घबराओ मत। यह सब कुछ बात नहीं है। मैं अभी जाती हूँ और बाबूजीसे सब हाल पूछ आती हूँ। बल्कि आज तुम मन्दिरमें मत जाना। कन्हई, तुम सन्ध्याके समय—

कन्हई—नहीं, अब मैं घर जाऊँगा। इन लोगोंको भी मैं आज ले जाकर अपने घर रखूँगा। फिर कल—

रमाने अपनी आँखोंसे आँसू पोंछते हुए कहा—सन्ध्या समय तू इन लोगोंको बिना खिलाए पिलाए ही ले जाएगा?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


वह स्त्री बीचमें ही धीर स्वरमें बोल उठी—अगर तुम्हें इसी बातका दुख हो बेटी तो आजकी रात हम सब यहीं रह जायँगे । तुम्हारे घरमें जगहकी कमी तो है ही नहीं । अब प्रसाद लेकर कल सबेरे ही सब जायँगे ।

रमा—कल बाबूजीसे मैं तुम्हारा घर बनवा देनेके लिए कहूँगी । आज तो—

स्त्री—हाँ सब हाल तो मैं सुन ही चुकी हूँ और तुम्हारी आँखोंमें आँसू भी देख रही हूँ । आज तुम हम लोगोंके लिए कोई चिन्ता मत करो । मैं नहीं जानती थी कि दुखियोंका दुख देखकर तुम्हें इतना दुख होता है । परमेश्वर तुम्हारे मनका सन्ताप दूर करें । तुम्हारा मंगल हो, तुम देवता हो ।

रमा—कन्हई, तुम तो पहले भी कई बार यहाँ रह चुके हो । ये लोग नए आए हैं । तुम इन लोगोंके पास ही रहो ।

कन्हई—अच्छी बात है । मैं भी यहीं इन लोगोंके पास पड़ा रहूँगा ।

हारानकी बूआने कुछ अप्रसन्न होकर कहा—चलो, अब अन्दर चलकर हाथ मुँह धोओ ।

रमा—नहीं, मैं पहले मन्दिरमें जाऊँगी ।

हारानकी बूआ—पुजारीजी आरती और भोगका सब सामान ले ही गए हैं । मिसरानीजी भी जप करके चली ही गई हैं । अब तुम्हारे जानेका क्या काम है ?

रमा—नहीं, मैं जाऊँगी । बिना वहाँ गए मुझे शान्ति न मिलेगी । कोई मेरे साथ चले ।

हारानकी बूआ—अच्छा तो फिर मैं वहाँ नहीं जाऊँगी । चलो, मैं ही तुम्हारे साथ चलूँ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


रमा—नहीं नहीं। तुम वहाँ जरूर जाओ और जाकर देख आओ कि क्या बात है। मिसरानीजी तुम मेरे साथ चलो। ( स्त्री और बालकोंसे ) तुम लोग इस दालानमें बैठो। कुन्हई, तुम इन लोगोंको उधर ले जाओ। क्षान्तसे कह दो कि इन लोगोंको चटाई दे दे और इनके लिए पानी रख दे। तुम लोग बैठो। मैं जरा मन्दिरसे हो आऊँ।

उस दीन स्त्रीकी आँखोंमें जल भर आया था। पर ऐसा क्यों हुआ था, यह वही जाने। आँखें पोंछते हुए उसने कहा—अच्छा बेटी, जाओ।

उस समय आरती आरम्भ हो गई थी। रमा अभी तक वहाँ नहीं पहुँची थी, इस लिए कात्यायनीकी माँ कुछ दुःखित भावसे मन्दिरके पासकी एक कोठरीमें चुपचाप कोनेमें बैठी हुई थी। रमाके यहाँकी जप करनेवाली मिसरानी दरवाजेके बीचमें एक आसन बिछाकर उसपर बैठी थी और बीच बीचमें अभिमानपूर्वक अपनी प्रधानताका परिचय दे रही थी। उसके हाथमें तो माला थी और आँखें इधर उधर नाच रही थीं। इतनेमें रमा एक दासी और दूसरी मिसरानीके साथ आती हुई दिखाई दी। उन लोगोंको देखते ही जप करनेवाली वृद्धाकी सारी गम्भीरता जाती रही। वह धीरे धीरे उठ खड़ी हुई और बोली—आओ, इधर आ जाओ। तुमने तो कहा था कि मैं नहीं आऊँगी। भला तुम कहीं बिना आए रह सकती हो? तुम न आओ, तो ठाकुरकी सेवा पूजा हो सकती है!

इतना कहते हुए उसने अपना आसन एक ओर खींच लिया और उसीपर बैठ गई। रमाने किसीके साथ कोई बात चीत नहीं की। वह आरतीके प्रकाशमें चमकती हुई मूर्तिकी ओर देखती हुई दरवाजेके सहारे खड़ी हो गई। जब आरती समाप्त हो गई तब सब लोग प्रणाम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


करनेके लिए झुके। केवल रमा ही ज्योंकी त्यों खड़ी रही। सहसा किसीने उसकी पीठपर हाथ रखा और साथ ही साथ पुकारा—रमा!

रमाने पीछे मुड़कर देखा, कात्यायनी थी। वह उसकी ओर मुँह-करके कहने लगी—तुम लोग आ गईं। अब तक कहाँ थीं?

कात्या०—घाटपर।

रमा—वहाँ क्या कर रही थीं?

कात्या०—कुछ नहीं, यों ही खाली घाट देखनेके लिए चली गई थी। वहाँ गंगाजीको फूल भी चढ़ा आई।

रमाने सहसा हताश होकर पूछा—खाली? क्या सचमुच घाट बिलकुल खाली था? तो फिर वे फूल किसने लिए?

कात्यायनीकी माँने आगे बढ़कर कहा—जिसकी दृष्टिसे किसीका दुःख छिप नहीं सकता, जो सब लोगोंका सब कुछ लिया करता है, उसीने लिए और कौन लेगा? उस दिन तुमने जो बात कही थी वही आज देखनेके लिए आई थी। आज मैंने तुम्हारे ठाकुरजीको देखा है।

रमाके व्यथित अन्तःकरणने कात्यायनीकी माँके इस सरल स्निग्ध विश्वाससे मानो एक आश्रयहीन अवस्थासे निकलकर आश्रय पाया। उसने मन्दिरकी ओर घूमकर मूर्तिको प्रणाम किया और पूर्ण निर्भरताके कारण उसकी आँखोंसे झरझर आँसू बहने लगे।

---

## सातवाँ परिच्छेद।

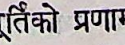

उस दिनसे कात्यायनी प्रायः सन्ध्या समय अपनी माके साथ मन्दिरमें जाया करती थी। कात्यायनीकी माँ कभी तो रमा और उसके साथकी स्त्रियोंसे बातचीत करती थी और कभी जप किया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


करती थी। रमा प्रायः ठाकुरजीकी सेवा-पूजामें लगी रहा करती थी। केवल कात्यायनी ही ऐसी थी जो उन सब लोगोंको वहीं छोड़कर गंगाजीके किनारे चली जाती थी और पानीमें पैर डालकर एकान्त घाटपर चुपचाप बैठी रहा करती थी। कभी कभी रमा उसे बुलानेके विचारसे वहाँ आया करती थी, पर उसकी तन्मय मूर्त्ति देखकर उसे आवाज देनेका साहस नहीं होता था और वह चुपचाप लौट जाती थी। उसने समझ लिया था कि आकाशके नीचे बैठकर दिगन्तकी ओर देखने और दूधके समान जलवाली नदीको स्पर्श करके चुपचाप बैठे रहनेमें ही कात्यायनीको सबसे अधिक आनन्द मिलता है। इससे अधिक संसारमें उसे न तो और कुछ मिला ही है और न वह कुछ पानेकी कामना ही करती है। इसी लिए रमा उसका वह ध्यान भग्न नहीं करना चाहती थी। कात्यायनी अपनी बाल्यावस्थासे चली आई हुई जीवनस्मृतिमें ही बैठी रहना चाहती थी, इसलिए रमा भी उसे नहीं छेड़ती थी। जब मन्दिरके घंटों और घड़ियालोंका बजना बन्द हो जाता था, तब मानो कात्यायनीको होश आता था और वह उठकर मंन्दिरमें सब लोगोंके पास पहुँचती थी। जिस स्थानपर सब लोग झुककर प्रणाम करते थे, उसी स्थानपर वह भी अपने अवश शरीरको किसी तरह झुका दिया करती थी।

उस दिन श्रावणकी पूर्णिमा थी और झूलनका अन्तिम दिन था। मन्दिरके शृंगार और उत्सवकी सीमा नहीं थी। खूब सजी हुई मूर्त्ति झूलेमें बैठी थी। उसके सामने मनुष्यके उपभोगके योग्य सजावटकी अनेक प्रकारकी चीजें रखी हुई थीं। कई तरहके नकशीदार बढ़िया अतरदान और गुलाबपाश रखे थे जिनमेंसे बहुत उत्तम सुगन्धि निकलकर चारों ओर फैल रही थी। सोने और चाँदीकी अच्छी अच्छी पुतलियाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


रखी हुई थीं। उनमेंसे किसीके हाथमें दीपक और किसीके हाथमें पुष्प-पात्र थे। स्फटिक पात्रसे जो प्रकाश निकल रहा था उससे मन्दिर और प्रतिमा मानो उज्ज्वल शोभामें हँस रही थी। मन्दिरके बाहर जगमोहनकी शोभा कुछ और ही थी। वहाँ रात भर गान वाद्य होनेको था। जगमोहनके खम्भोंमें कृत्रिम फूलोंकी मालाएँ और पत्तियाँ आदि लिपटी हुई थीं। बीचमें अनेक प्रकार और अनेक रंगोंके झाड़ और फानूस आदि टँगे हुए थे। दीवारोंपर बहुतसे बढ़िया बढ़िया चित्र टँगे हुए थे। गाँवके सब लड़के सब तरफसे छुट्टी पाकर वहीं जगमोहनमें उछल-कुद, मारा-मारी और छीन-झपटी कर रहे हैं जिनके चीखने चिल्लानेसे मन्दिरमें एक नये तरहका स्वर भर रहा है। भोग बँटनेके स्थानका शोर अभी तक कम नहीं हुआ है। गाँवके ब्राह्मण तथा दूसरे निमन्त्रित लोग भोजन करके चले गए हैं और उनकी जूठी पत्तलोंको लिए कुत्ते आपसमें नोच-खसोट कर रहे हैं। बहुतसे बुलाए और बिना बुलाए लोग अभी तक भंडारीको ढूँढ़ रहे हैं। भिखमंगे पाई हुई मिठाई और पूरी आदिकी पोटली बगलमें दबाकर और कुछ प्राप्त करनेके लिए इस प्रकार इधर उधर मँड़राते और शोक करते फिरते हैं कि मानो उन्हें कुछ मिला ही नहीं। जो लोग गाने बजानेके लिए आए हैं वे भर पेट भोजन करके और पान खाकर एक ओर दरी बिछाकर सोनेकी व्यर्थ चेष्टा कर रहे हैं। कुछ दुष्ट बालक एक ओर कौनेमें बैठकर आपसमें यह परामर्श कर रहे हैं कि ये लोग सो जायँ तो इनकी चोटी काट लें! मन्दिरके नौकर चाकर जब किसी कामसे इधरसे उधर आते हैं तब उन लड़कोंको डाँट डपटकर उनका उत्साह ठंढा कर देते हैं। रमा दिन भरकी थकी माँदी होनेके कारण मन्दिरके पासकी कोठरीके एक कौनेमें बैठी है। दिन भरमें उसने फूलोंकी जो मालाएँ बनाई थीं उनको वह रकाबियोंमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


अच्छी तरह सजाकर रख रही है और चाँदीके डंडेपर पत्ते आदि लगाकर उनका एक चँवर बनानेका उद्योग कर रही है। सन्ध्या हो रही है। सजे हुए मन्दिरके सब दीपक आदि जल गए हैं। कुछ दीपक जो बाकी हैं वे जलाए जा रहे हैं। आकाशके नक्षत्रोंकी भी कुछ ऐसी ही अवस्था है। पर उनके प्रकाशके अंकुरका विनाश करनेके लिए पूर्व आकाशमें पूर्णिमाका चन्द्रमा निकल रहा है। कोई पूर्वकी ओर उस स्निग्ध ज्योतिपिण्डकी ओर देखता है और कोई पश्चिम ओरके बादलके टुकड़ोंकी ओर देखकर सोचता है कि कहीं पानी न बरसने लगे और आजका सारा मजा ही न मिट्टी हो जाय।

जब रमाने देखा कि कात्यायनी अपनी माताके साथ आ रही है, तब उसने धीरेसे उठकर उन दोनोंके लिए आसन बिछा दिए। कात्यायनी तो खड़ी रही और उसकी माँ एक आसनपर बैठ गई। कात्यायनीका भाव समझकर रमाने कहा—आज तुम घाटपर मत जाना। वहाँ मरदोंकी बहुत भीड़ है।

कात्या०—सब लोग तो यहीं मन्दिरमें हैं। आज वहाँ घाटपर कौन जायगा?

रमा—लेकिन फिर भी आज तुम यहीं क्यों न बैठो।

कात्या०—मैं जाती तो हूँ, पर जल्दी ही लौट आऊँगी। देख रही हो, आज कैसे बादल छाए हैं?

रमा—मुझे तो डर लगता है कि आजका सारा उत्सव ही कहीं मिट्टी न हो जाय।

कात्या०—मिट्टी क्यों होने लगा, मैं तो समझती हूँ कि और भी शोभा बढ़ जायगी। इन काले मेघोंके ऊपर चन्द्रमाका जो प्रकाश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


पड़ रहा है उसके कारण और भी अपूर्व शोभा हो गई है। चलो तुम भी जरा घाटपर चलकर यह शोभा देखो न?

रमा—मेरी तो अभी यहाँ तलाश होने लगेगी। अभी तक बाबूजी भी नहीं आए।

कात्यायनीकी माँने कहा—घाटपर ज्यादा देर तक मत ठहरना। कहीं ऐसा न हो कि पानी बरसने लगे।

रमा—यदि खुलकर अच्छी तरह बरस जाय तो भी कुशल हो। पर वह बात तो होगी नहीं। रह रहकर थोड़ा बहुत पानी बरसेगा, जिससे सब लोगोंको रातभर कष्ट होगा। बरसात कभीकी लग गई, पर पानी अभी तक एक बूँद भी नहीं बरसा है। सब किसान लोग हाहाकार कर रहे हैं। आज तक तो पानी बरसा नहीं, पर जान पड़ता है कि आज रातको पानी बरसकर सब लोगोंका आनन्द किरकिरा कर देगा।

कात्यायनीकी माँने कहा—यह पानी तो कीर्तन भी न होने देगा। इसके मरनेको और कोई दिन नहीं था।

कात्यायनी यह कहकर वहाँसे चली गई कि—माँ, तुम क्यों इतनी चिन्ता करती हो? पानी नहीं बरसेगा। यह बादल यों ही उड़ जायगा।

इतनेमें कामाख्यानाथने आकर मूर्तिको प्रणाम किया और तब कात्यायनीकी माँको नमस्कार करके और चारों ओर देखकर कहा—क्या आज आपकी कन्या नहीं आई?

रमाने उत्तर दिया—आई है।

कामा०—मैं फिर एक बार आपके यहाँ आना चाहता था। अच्छा हुआ कि आज यहीं आपके दर्शन हो गए। सुनिए, मैंने एक बहुत अच्छा पात्र ढूँढ़ा है। उसकी कुंडली भी बहुत अच्छी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


ब्राह्म०—भइया, अब तुम मुझसे इस सम्बन्धमें क्यों बातें करते हो? कात्यायनीके ब्याहकी आशा मैं बिलकुल छोड़ चुकी हूँ। न तो अब मैं उससे इस विषयमें कुछ कहूँ सुनूँगी और न कुछ समझाऊँ बुझाऊँगी।

कामा०—लेकिन मैं उसे फिर एक बार अच्छी तरह समझाऊँगा, वह है कहाँ?

रमा—वह अभी घाटपर गई है। उसे बुलाऊँ?

ब्राह्मणीने बीचमें ही रोककर कहा—नहीं बेटी, चारों ओर मरद भरे हुए हैं। वह बड़ी जिद्दी लड़की है। अपनी जिदके सामने, अपनी अक्लके सामने वह किसीकी बात सुनती ही नहीं। वह इनकी बात भी नहीं मानेगी, सामने खड़ी होकर तर्क वितर्क करेगी। अगर कोई सुन लेगा, तो मैं तो मारे लज्जाके यहीं गड़ जाऊँगी। उसे तुम मत बुलाओ।

कामा०—अच्छा तो मैं आप ही घाटपर जाता हूँ। क्या आप भी मेरे साथ चलेंगी?

ब्राह्मण—नहीं, नहीं भइया, तुम उससे जो कुछ बातें कर आओगे वह मैं यहीं सुन लूँगी। मैं तो समझती हूँ कि वह किसी तरह नहीं मानेगी।

परन्तु कामाख्यानाथने ब्राह्मणीकी इस बातपर कोई ध्यान नहीं दिया और वे उठकर खड़े हो गए। उन्होंने सोचा कि क्या एक साधारण बालिका मेरा कहना न मानेगी? भला उसे किस बातकी जिद है? क्यों उसका यह दृढ़ निश्चय है कि समझाने बुझानेसे भी वह अपना भ्रम-पूर्ण विचार न छोड़ेगी? उन्होंने यह भी सोचा कि यदि वह किसी तरह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


राजी न होगी, किसी तरह अपनी जिद न छोड़ेगी, तो जबरदस्ती उसका ब्याह कर दिया जायगा। क्या जरासी लड़कीकी जिद तोड़ना कोई बहुत बड़ी बात है? लेकिन पहले जोर जबरदस्ती करनेकी आवश्यकता नहीं, पहले तो उसे अच्छी तरह केवल समझा बुझा देना चाहिए। मैं तो समझता हूँ कि वह बहुत ही समझदार है। यह हो ही नहीं सकता कि अच्छी तरहसे समझाने बुझानेसे भी वह न माने।

उठकर कामाख्यानाथने एक आदमीको आनवाले लोगोंकी अभ्यर्थनाके लिए नियुक्त किया और दूसरा आदमी कीर्तन करनेवालोंके पास उन्हें तैयार करानेके लिए भेजा और आप घाटकी ओर चल पड़े। ऐसा जान पड़ता था कि वे आज ही कात्यायनीको ब्याहके लिए राजी किए बिना दम न लेंगे। उन्होंने यह भी सोचा था कि इसे राजी करके आज ही इसकी कुंडली भी ज्योतिषार्णव महाशयके पास भेज दूँगा। क्यों कि उनसे यही बातें तै हो चुकी हैं। लेकिन वह कुंडली कात्यायनीके पास है, ब्राह्मणीके पास होती तो अब तक कभीकी मिल गई होती। इसी लिए कामाख्यानाथने निश्चय किया था कि आज जैसे होगा इस विषयका निपटारा करके ही छोड़ूँगा।

कामाख्यानाथने ज्यों ही घाटकी पहली सीढ़ीपर पैर रखा त्यों ही मेघने 'गडाम गुम्' गरजकर उनका हृदय और चारों दिशाएँ कँपा दीं। वे चौंककर खड़े हो गए और चारों ओर देखने लगे। म्लान ज्योत्स्ना सहसा छिप गई थी। आकाशमें हाथियोंके बच्चोंके समान जो मेघ एकत्र हो रहे थे और दल बाँधकर इधर उधर घूम रहे थे, उन्हींमेंसे कुछ मेघोंने पूर्व ओर आकर चन्द्रमाको भी ढक लिया था। अपनी ही वप्र-क्रीड़ामें उनका कृष्ण गात्र बीच बीचमें हँस पड़ता था और फिर तुरन्त ही चन्द्रमाके पाससे कुछ हटकर और ज्योत्स्ना-फेनमें स्नान करके वे समस्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


आकाशमें आनन्दपूर्वक विचरते थे। कभी तो वे चाँदको ढक लेते थे, कभी पूर्ण चन्द्रमाकी उज्ज्वल रश्मि उनके कृष्ण शरीरको भेदकर आकाशमें फैल जाती थी और वे चन्द्रमाको छोड़कर दूसरी ओर चले जाते थे और खेलमें मग्न हो जाते थे। उस समय कामाख्यानाथ स्थान और समयको भूल गए और उन्हें यह भी याद न रह गया कि मैं किस कामके लिए कहाँ जा रहा हूँ। वे वहीं खड़े हो गए और थोड़ी देर तक विमुग्ध होकर वही शोभा देखते रहे। ऐसा जान पड़ता था कि पूर्णिमाकी मेघाच्छन्न रात्रिमें बहुत दिनोंसे वृष्टि न होनेके कारण सब चराचर अपने दग्ध नेत्रोंसे उन्हीं स्निग्ध श्यामकान्ति बादलोंकी ओर देखकर ही शीतल होना चाहते थे। जिस प्रकार मेघदूतवाले रामगिरिके यक्षने आषाढके नए मेघके अभ्युदयके दिन कुटज-कुसुमोंका अर्घ्य तैयार किया था, उसी तरह आज सारा संसार इस वर्षाहीन श्रावणके सूखे वक्षमें पड़ा हुआ अपने मेघ अतिथिका सादर आवाहन कर रहा था।

जब मेघ हट गए तब चन्द्रमा अपनी सोलहों कलाओंके प्रकाशसे फिर समस्त संसारको हँसाने लगा। कामाख्यानाथने देखा कि कोई आदमी जलके बहुत ही पास बैठा हुआ पश्चिमके मेघकी ओर देख रहा है। उन्होंने समझ लिया कि यही कात्यायनी है।

अपने निश्चयको और भी निश्चय करनेके लिए कामाख्यानाथने उसके पास जाकर पुकारा—कौन, कात्यायनी ?

कात्यायनीने चकित होकर पीछेकी ओर मुड़कर देखा और वह साथ ही उठकर खड़ी हो गई।

कामा०—सुनो कात्यायनी, मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहता हूँ। तुम्हारी माँ नहीं चाहती थीं कि इस विषयमें मेरा और तुम्हारा जो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


वादविवाद हो उसे वह सुनें, इसलिए वह यहाँ नहीं आई और लाचार अकेले ही मुझे यहाँ आना पड़ा।

कात्यायनी चुपचाप खड़ी हुई उनकी बात सुनती रही। उसकी समझमें कुछ भी न आया कि मैं क्या कहूँ और क्या करूँ। कामाख्यानाथने बिना उसकी ओर कोई विशेष ध्यान दिए कहना आरम्भ किया—घबरानेकी कोई बात नहीं है, तुम जहाँ बैठी थीं वहीं फिर अच्छी तरह निश्चिन्त होकर बैठ जाओ। मैं यहाँ ऊपर सीढ़ीपर बैठता हूँ। क्योंकि बातोंमें कुछ देर लगेगी।

कात्यायनीने बड़ी कठिनतासे धीरेसे उत्तर दिया—मुझे आए बहुत देर हो गई है। वहाँ माँ घबराती होंगी।

कामा०—नहीं, उन्हें मालूम है कि मैं यहाँ तुमसे बातें करनेके लिए आया हूँ।

इतना कहकर कामाख्यानाथने गंगाजीका कुछ जल लेकर मस्तकपर लगाया और गंगाजीको प्रणाम करके वे दो तीन सीढ़ियाँ ऊपर चढ़कर बैठ गए। लाचार होकर कात्यायनी भी अपने स्थानपर बैठ गई।

कामाख्यानाथने कहना आरम्भ किया—मैंने रमासे तुम्हारी वे सब बातें सुन ली हैं, लेकिन यह तुम्हारा बहुत बड़ा भ्रम है। मैं स्वयं वहाँ बराबर उपस्थित था। तुम्हें तो याद ही होगा। उस समय तुम बहुत दुखी थीं, इसी लिए तुम्हें सब बातें अच्छी तरह याद नहीं हैं। बल्कि मैं तो समझता हूँ कि उस समय तुममें उनकी बातोंका ठीक ठीक अर्थ समझनेकी भी शक्ति नहीं थी, इसी लिए तुमने न जाने क्याका क्या सुन लिया और क्याका क्या समझ लिया और इसी लिए अब तुमने एक व्यर्थका झगड़ा कर रखा है। इस अवस्थामें तुमको सब प्रकारसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझपर ही निर्भर रहना चाहिए। उन्होंने जो तुम्हारी आजन्म कुमारी रहनेकी बात कही थी वह केवल उपयुक्त पात्र न मिलनेके कारण ही कही थी। हाँ, यह ब्याह करनेके लिए उन्होंने अवश्य मना किया था। परन्तु उपयुक्त पात्र मिलनेपर तुम्हारा विवाह करनेमें उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। मैंने जो कुछ सुना उससे उनका यही मतलब मेरी समझमें आया।

कात्यायनी बिलकुल चुपचाप बैठी थी, वह जरा भी हिलती डोलती नहीं थी। इसलिए कामाख्यानाथको यह आशा होने लगी कि इसपर मेरी बातोंका प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने फिर कहना आरम्भ किया—भला मैं तुमसे यह क्यों कहने लगा कि तुम अपने पिताकी आज्ञाका उल्लंघन करो? और फिर मुझमें ही उसको उल्लंघन करनेकी कहाँ शक्ति है? पर यह केवल तुम्हारे समझनेकी भूल है। क्या तुम्हें याद नहीं है कि एक बार उन्होंने यह भी कहा था कि ब्याह करनेका एक उपाय है?

कात्या०—हाँ, उन्होंने कहा अवश्य था; पर वह उपाय ही ऐसा था जो बिलकुल न होनेके बराबर था। और यह बात भी उन्होंने उसी समय कह दी थी।

कामा०—उनका विश्वास था कि तुम्हारे लिए कोई उपयुक्त पात्र ही न मिलेगा, मगर यह बात कभी ही हो नहीं सकती। उनकी जो कुछ सम्मति थी, ठीक उसीके अनुसार मैं काम करना चाहता हूँ। तुम यह जानती हो कि उन्हें इस बातका भी भय था कि कहीं लोग तुम्हें कुलक्षणा समझकर तुम्हारा निरादर न करें?

कात्या०—हाँ, यह मैं जानती हूँ।

कामा०—इन्हीं सब कारणोंसे उन्होंने वह बात कही थी। साथ ही उन्हें इस बातका भी भय था कि पीछेसे मुझे इस ब्याहके लिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कुछ तरद्दुद करना पड़ेगा, इसी लिए मुझपर ज्यादा बोझ न डालनेके विचारसे भी यह कहा था कि हमारी लड़की जन्मभर कुमारी ही रहेगी।

कात्या०—उस भारसे तो आपको मुक्त ही कर गए हैं। फिर क्यों आप इसके लिए व्यर्थ—

कामा०—तुम यही न पूछती हो कि मैं क्यों यह भार अपने सिर ले रहा हूँ? लेकिन इसका मैं तुम्हें क्या उत्तर दूँ। मैं तो समझता हूँ कि यदि वे इस समय जीवित होते, तो शायद उन्हें भी मैं इसका कारण न बतला सकता! पर मैं आशा करता हूँ कि अब वे सर्वज्ञता प्राप्त कर चुके होंगे। इसी लिए मैं यह बात तुम्हें बतलाता हूँ और उन्हींपर इस बातका भार देता हूँ कि वे तुम्हें यह बात अच्छी तरह समझा दें। तुमसे मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि लड़कपनके कारण तुम जिद कर रही हो और अभी तक तुम इतनी सयानी नहीं हुई हो कि यह समझ सको कि इसका परिणाम क्या हो सकता है। इसी लिए मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं तुम्हारा अभिभावक और शुभचिन्तक हूँ। मैं जो कुछ करना चाहता हूँ, उसमें तुमको इतना लड़कपन नहीं करना चाहिए। तुम अपना यह हठ छोड़ दो। क्यों व्यर्थ सब लोगोंको दुखी और चिन्तित कर रही हो। जब हम सब लोग कह रहे हैं कि तुम्हारे पिताजीके कहनेका वह अभिप्राय कभी नहीं था जो तुम समझ रही हो, तब तुम्हें यह बात मान लेनी चाहिए।

कात्यायनी उठकर खड़ी हो गई। कामाख्यानाथने कहा—मैं आशा करता हूँ कि तुम मेरी सब बातें अच्छी तरह समझ गई होगी। अब तुम इस तरहकी बातें मत करना। अब मुझे तुम्हारी जन्मपत्री चाहिए।

कात्या०—जन्मपत्री नहीं पा सकेंगे। इसके लिए व्यर्थ प्रयत्न मत कीजिएगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामा०—इसका क्या मतलब ? इतनी देर तक मैंने तुम्हें क्या समझाया था ?

कात्या०—वह बात तो मैं उस समय भी समझती थी और इस समय भी समझती हूँ। आपने मुझे कोई नई बात नहीं समझाई है।

कामा०—क्या मैंने तुम्हें कोई नई बात नहीं समझाई है ? क्या तुम अपनी जिद नहीं छोड़ोगी ?

कात्या०—आप चाहे इसे मेरी जिद ही समझें, पर यह मेरे पिताजीकी आज्ञा है।

कामा०—तुम्हारे पिताजीकी आज्ञा है ? क्या वे यह भी कह गए हैं कि यदि कोई उपयुक्त पात्र मिल जाय तो भी तुम्हारा विवाह न किया जाय ?

कात्या०—जी हाँ, यही बात है।

कामा०—इस 'यही बात' का क्या मतलब ? तुम जरासी लड़की होकर ऐसी बातें कर रही हो। मैं इतना वयस्क और प्रौढ़ बुद्धि होनेपर भी क्या तुम्हारे सामने बिलकुल निर्बोध हूँ ?

कात्यायनीने सिर उठाया। जिन प्रतिष्ठित और गण्यमान जमींदार बाबू कामाख्यानाथके सामने बड़े बड़े ज्ञानवृद्ध भी बातें करनेका साहस नहीं कर सकते थे, उन्हीं कामाख्यानाथके विरक्त और विस्मयपूर्ण मुखकी ओर देखकर कात्यायनीका हृदय विचलित हो गया। कुछ कहनेके लिए उसके मुखकी कई शिराएँ और उपशिराएँ चंचल हो उठीं। परन्तु उन सबका दमन करके और सिर झुकाकर कात्यायनीने कहा—मैं उनकी लड़की हूँ। ऐसी दशामें यदि मैं आपकी अपेक्षा उनके मनकी बात अधिक अच्छी तरह समझूँ तो क्या यह कोई असम्भव बात है ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कामा०—यदि उनके मनका वही भाव होता जो तुमने समझा है, तो वे कभी तुम्हारे ब्याहके लिए इतनी चेष्टा न करते। पर मैंने सुना है कि वे जन्मभर उसीकी चेष्टा करते रहे। क्या यह बात तुम नहीं जानती हो कि इसके लिए उपयुक्त वरकी एक कल्पित जन्मपत्री भी उन्होंने तैयार कर ली थी?

कात्या०—हाँ, यह तो मैं जानती हूँ।

कामा०—तब फिर ऐसी बातें क्यों कहती हो? यह सब तुम्हारी जिद सिवाय और कुछ नहीं है। मगर यह जिद तुम्हें छोड़नी पड़ेगी। ठहरो, पहले मेरी सब बातें अच्छी तरह सुन लो। वे मुझपर सब बातोंका भार छोड़ गए हैं। तुम यह जानती हो कि मैं जबरदस्ती तुम्हारा ब्याह कर सकता हूँ?

कात्या०—भला आप क्या नहीं कर सकते हैं? पर मैं यह नहीं जानती थी कि किसीकी दत्ता कन्याका आप जबरदस्ती किसी दूसरेके साथ ब्याह भी कर सकते हैं।

कामा०—दत्ता कन्याका ब्याह? इसका क्या मतलब?

कात्या०—आप ही न अभी अपनी प्रौढ़ावस्थाका अभिमान कर रहे थे! पर मैं तो यही देखकर अवाक् हो रही हूँ कि जो बात एक छोटी लड़की सहजमें समझ सकती है, बड़े बड़े बुद्धिमानों और ज्ञानियोंकी समझमें भी वह बात नहीं आती और शायद इसी लिए आप जबरदस्ती करनेके लिए कह रहे हैं?

कामा०—कात्यायनी यह तुम क्या कह रही हो? तुम्हारी इन सब बातोंका अर्थ क्या है? यदि मैं कोई बात न समझता होऊँ तो तुम्हें यही उचित है कि तुम वह बात मुझे अच्छी तरह समझा दो। मैं तो यही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


समझता हूँ कि यदि मैं जबरदस्ती भी तुम्हारा ब्याह कर दूँ, तो भी तुम्हारे या मेरे लिए कोई अधर्म न होगा।

कात्या०—क्या केवल समझनेसे ही जबरदस्ती चल सकती है? क्या आप यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि जबरदस्ती करनेमें कोई अधर्म न होगा?

कामा०—मैं तो यही समझता हूँ। तुम लड़कपनके कारण ही व्यर्थ जिद कर रही हो और मैं समझता हूँ कि इसी जिदके कारण तुम अनेक प्रकारकी कल्पित बाधाओंकी सृष्टि कर रही हो। तुम इन सब व्यर्थकी जल्पनाओंको छोड़कर साधारण लड़कियोंकी तरह सब काम करो।

कात्या०—क्या ये सब मिथ्या जल्पनाएँ और मनगढ़न्त बाधाएँ हैं?

कामा०—और नहीं तो क्या हैं? यदि तुम अपनी जन्मपत्री मुझे नहीं दोगी, तो मैं किसी बड़े ज्योतिषीको ले आऊँगा और तुम्हारी माँसे तुम्हारे जन्मका समय और दिन आदि जानकर नई जन्मपत्री तैयार करा लूँगा और उसी जन्मपत्रीसे मिलाकर किसी उपयुक्त वरके साथ तुम्हारा ब्याह कर दूँगा। यह बात तुम अच्छी तरहसे समझ रखो। अच्छा, अब तुम जा सकती हो; पर इसके लिए तैयार रहना।

कात्यायनी कुछ देर तक चुपचाप कामाख्यानाथके मुँहकी ओर देखती रही। उसके उज्ज्वल नेत्र क्रमशः और भी अधिक उज्ज्वल होने लगे और नीले आकाशके प्रकाशमान् शुक्रके समान चमकने लगे। उसके मुखका वह भाव और उसकी वह दृष्टि देखकर कामाख्यानाथ कुछ भयभीतसे हो गए। उन्होंने सोचा कि इस बालिकाके साथ तर्क करनेमें मैं जो इतना विचलित और क्रुद्ध हो गया, यह ठीक नहीं हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


परन्तु फिर उन्होंने सोचा कि बिना कहे भी तो काम नहीं चल सकता था। यह भार तो मुझे अपने सिरसे उतारना ही पड़ेगा। उन्होंने कुछ शान्त स्वरसे कहा—अच्छा, अब तुम जाओ। रात अधिक हो गई है। अब मैं भी चलता हूँ।

कात्यायनीने सहसा कुछ कठोर और अभिमानपूर्ण स्वरमें कहा—आप जाइए और अपने ज्योतिषी, उपयुक्त वर और सब लोगोंको बुला लाइए। मुझे जो कुछ कहना है, वह मैं उन सब लोगोंके सामने ही कह दूँगी।

कामा०—फिर वही बात! तुम भी बड़ी विलक्षण लड़की हो! भला जरा मैं भी तो सुनूँ कि तुम्हें क्या कहना है?

कात्या०—मैं उन लोगोंसे कह दूँगी कि मेरा ब्याह हो गया है। मेरे पिताजी मरते समय मुझे जिसके हाथ समर्पित कर गए थे, वही अधर्म करके फिरसे मेरा ब्याह करना चाहते हैं।

कामाख्यानाथकी आँखोंके सामने अँधेरा छा गया और उन्हें सारा विश्व घूमता हुआ जान पड़ने लगा। उन्हें ऐसा जान पड़ने लगा कि कोई भारी भूकम्प आया है जिससे सारा संसार बेतरह हिल रहा है। जल और स्थलको घोर अन्धकारमें एकाकार करके पूर्णिमाका चन्द्रमा एक भारी मेघसे ढक गया। कामाख्यानाथ चकित होकर चुपचाप बैठे रहे। कात्यायनी भी उसी तरह गंगा किनारे जलसे बिलकुल सटी हुई खड़ी रही। दोनों इस प्रकार निस्तब्ध थे मानो वज्रपात हो गया हो। प्रकृति भी बिलकुल निर्वाक् और निस्पन्द हो रही थी। उसके वक्षसे निरन्तर उत्पन्न होनेवाला शब्द मानो सहसा बन्द हो गया था। जलसे भरी हुई जाह्नवीकी अविराम छल छल और कल कल ध्वनि मानो किसी माया-मन्त्रके प्रभावसे बिलकुल बन्द हो गई थी। सब चर और अचर मानो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


कोई शब्द सुननेके लिए कान उठाए चुपचाप खड़े थे; परन्तु आकाश जल या स्थलमें कहीं कोई शब्द नहीं होता था। सदा चंचल रहनेवाली प्रकृति मानो सहसा विकल हो गई थी।

कात्यायनीने उस मृत नीरवताको शब्दमयी करते हुए धीरे धीरे कहा—आपको जो कुछ कहना था वह सब कह चुके न? अब मैं जा सकती हूँ?

अब मानो कामाख्यानाथको होश आया। उनके कण्ठसे धीरे धीरे स्वर निकला—तुम्हें यह बात किसने बतलाई? तुम्हारी यह बड़ी भारी भूल है, बिलकुल ही मिथ्या धारणा है।

कात्या०—मिथ्या नहीं है। मैं उनके मनका भाव बहुत अच्छी तरह जानती हूँ। आपकी जन्मपत्री देखकर उनके मनमें कुछ ऐसी ही धारणा हुई थी जिससे—

कामा०—इस विषयमें शुरूसे अन्ततक भूल ही भूल है। जन्मपत्री देखकर इस प्रकारकी धारणा करनेवाला एक परमात्माको छोड़कर और कोई दूसरा नहीं है। वे कभी ऐसा पागलपन—

कात्या०—इसे आप पागलपन मत कहें। हाँ, यह सम्भव है कि उनका यह विश्वास भ्रमपूर्ण हो। लेकिन मेरे तो वे विधाता ही थे। वे मेरे लिए जो विधान कर गए हैं, वही मुझे सिर आँखों ग्रहण करना पड़ेगा।

कामा०—लेकिन उन्होंने तो कभी एक बार भी यह बात मुँहसे नहीं कही। इसका कोई आभास भी उन्होंने—

कात्या०—दिया था। लेकिन उनकी वह बात मेरे सिवा और कोई समझ नहीं सका था। उन्होंने जिस उपायका जिक्र किया था, वह यही उपाय था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


कामा०—लेकिन यह तो कोई उपाय ही नहीं है। ऐसी बात उन्होंने कभी नहीं कही थी। उनके सरीखे धार्मिक व्यक्तिके द्वारा ऐसा होना कभी सम्भव नहीं है। तुमने झूठ ही—

कात्या०—उन्होंने वह बात अपनी इच्छासे नहीं कही थी। उनसे जहाँ तक हो सका था वहाँ तक उन्होंने उसे गुप्त ही रखा था। उन्होंने आपको और तरहसे समझा बुझाकर मेरे विवाहका प्रयत्न करनेसे रोकना ही चाहा था। परन्तु मरनेसे कुछ ही देर पहले बेहोशीमें उनके मनकी वह छिपी हुई इच्छा आप ही आप प्रकट हो गई थी। मैंने उसी समय समझ लिया था कि आप लोगोंमेंसे किसीने उनके उस समर्पणका अभिप्राय नहीं समझा था। मेरी भी कभी आपको यह बात समझानेकी इच्छा नहीं थी। लेकिन आज आपने मेरे परित्राणका कोई उपाय ही नहीं छोड़ा, इसलिए विवश होकर मुझे यह बात कहनी पड़ी।

कामा०—क्या उस समर्पणका यही अर्थ था? यह बिलकुल असम्भव है। इससे बढ़कर असम्भव और कोई बात हो ही नहीं सकती। भला ऐसा कभी हो सकता है?

कात्या०—आप इतना घबरा क्यों रहे हैं? पिताजीने तो आपसे कभी अधर्म करनेके लिए कहा नहीं। वे तो अपनी बात अपने मनमें ही गुप्त रखकर चले गए। उन्हें जो कुछ समझाना था वह मुझे ही समझा गए हैं। उस बातके साथ न तो आपका कोई सम्बन्ध ही है और न आपका कोई उदारदायित्व ही। आप निश्चिन्त रहें, यह बात और किसीको मालूम नहीं होगी। मैं आपको केवल यही समझा देती हूँ कि आप उनकी अविवाहित कन्याके विवाहके लिए यत्न करके अधर्म मत कीजिएगा। मेरे सम्बन्धमें आप यही समझ लीजिएगा कि मैं विवाहिता हूँ अथवा पिताजीकी आज्ञासे सदा कुमारी हूँ। मुझसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस प्रकारकी बातें कहना भी पाप है। मेरे सम्बन्धमें पिताजीने आपपर कोई भार नहीं रखा है और मैं भी जन्मभर आपपर किसी बातका भार नहीं डालूँगी। आपके धर्ममें किसी प्रकारका आघात नहीं पड़ेगा, इससे आप बिलकुल निश्चिन्त रहें। और साथ ही मुझे भी थोड़ीसी निश्चिन्तता दीजिए जिससे मुझे आगे कभी आपके द्वारा इस प्रकार विव्रत न होना पड़े। मैं आपको समझा देती हूँ कि मेरे लिए अब आप किसी प्रकारकी चेष्टा न कीजिएगा।

कामाख्यानाथ कुछ और कहना चाहते थे, पर उनके मुँहसे आवाज नहीं निकलती थी। बात उनके मुँहतक आकर रह गई थी। कात्यायनी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर जाने लगी। चार पाँच सीढ़ियाँ चढ़कर उसने देखा कि पत्थरकी मूरतकी तरह कोई सामने खड़ा है। कात्यायनीने चकित होकर देखा कि वह रमा थी। अब तक कामाख्यानाथ और कात्यायनी दोनोंमेंसे एकको भी इस बातका पता नहीं था कि रमा वहाँ आकर खड़ी है और सब बातें सुन रही है।

इतने बड़े प्रतिष्ठित और प्रौढ व्यक्तिके सामने भी अब तक कात्यायनीने जिस लज्जाका अनुभव नहीं किया था, रमाकी उपस्थितिके कारण उसने उसी लज्जाके आघातका अनुभव किया। पहले तो वह खड़ी रहकर कुछ स्थिर हुई और फिर वस्त्रसे मुख और मस्तक अच्छी तरह ढककर सीढ़ियोंके एक ओरसे धीरे धीरे ऊपर चढ़ने लगी। रमा भी उसके पीछे पीछे चली। सीढ़ियोंके ऊपरवाले फर्शपर पहुँचकर रमाने धीरेसे कहा—जरा खड़ी रहो। पर कात्यायनीने मानो रमाकी बात सुनी ही नहीं और वह जल्दी जल्दी मन्दिरकी ओर बढ़ी। जिस समय वह अपनी माँके पास पहुँची उस समय उसका सारा शरीर काँप रहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust


था। माताने अपनी कन्याके मुखकी ओर देखकर और उसके मस्तक-पर हाथ फेरकर पूछा—कात्यायनी, क्या हुआ? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?

कात्या०—नहीं, चलो माँ घर चलें।

माता—घर चलोगी? अभी तो कीर्त्तन हो रहा है।

कात्या०—नहीं, मेरी तबीयत बहुत खराब है। मुझसे बैठा नहीं जायगा।

माता—तभी तुम्हारा सिर गरम है। जान पड़ता है कि तुम्हें बुखार आया है। रमा, जरा देखो कात्यायनीको बुखार आया है। अब हम लोग घर जायँगी।

रमा—बुखार आया है? जरा देखूँ तो।

ज्यों ही रमाने कात्यायनीका ललाट छूनेके लिए हाथ बढ़ाया, त्यों ही कात्यायनी जल्दीसे खिसककर अपनी माँके पीछे चली गई और बोली—नहीं, बुखार नहीं आया है, पर सरदी बहुत लग रही है। बैठा नहीं जाता। चलो, माँ चलें।

रमाने थोड़ी देर तक उसकी ओर देखकर कहा—अच्छा तो फिर जाओ। अन्दाजसे मालूम होता है कि पानी आना चाहता है। आज शायद कीर्त्तन न हो सकेगा। सभी लोगोंको घर जाना पड़ेगा।

कात्यायनी अपनी माँके कन्धेपर हाथ रखकर उसीके सहारे घर चली गई। रमा कुछ चिन्तित होकर एक बार गोविन्ददेवकी ओर और फिर कात्यायनीके जानेके मार्गकी ओर देखने लगी। वह भी मानो किंकर्तव्यविमूढ़ होकर चारों ओर रास्ता ढूँढ़ रही थी।

बाहरसे किसीने कहा—अरे देखो, कैसा बादल आ रहा है! बिजली भी खूब चमक रही है, जोरोंका पानी आना चाहता है!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रमाने जल्दीसे जंगलेके पास आकर देखा कि चारों ओर इतना घोर अन्धकार छाया हुआ है कि कोई कह ही नहीं सकता कि आज पूर्णिमाकी रात है। पृथ्वीने अपने आपको घोर अन्धकारसे चारों ओरसे ढक लिया था। चारों ओरसे बड़े बड़े बादल आकर आकाशमें छाए जाते थे। ऐसा जान पड़ता था कि वे अभी पृथ्वीको डुबाकर रसातल पहुँचा देंगे। विश्वको ध्वंस करनेमें समर्थ उन बादलोंको कोई अदृश्य हाथ मानो जोरसे कोड़ोंसे मार रहा था और वह उन्मत्त बादल असह्य पीड़ासे तीव्र गर्जन कर रहे थे। हू हू शब्द करती हुई प्रचंड वायु मानो प्रमत्त होकर पृथ्वीके शरीरसे लग रही थी और दो चार धक्कोंमें ही उसे उलट पुलट देनेके लिए जोर लगा रही थी।

रमा मन्दिरसे जल्दीसे बाहर निकलकर घाटकी ओर दौड़ी। पर बीचमें ही किसीने उसे रोककर कहा—हैं! ऐसे समयमें तुम घाटकी ओर कहाँ जा रही हो? पर रमाने उसकी बात नहीं सुनी। वह दौड़कर फर्शपर जा पहुँची और जोरसे पुकारने लगी—बाबूजी, बाबूजी, बाबूजी।

कामा०—अरे तुम ऐसे समयमें मन्दिरसे बाहर कैसे निकल आई? चलो, मन्दिरमें चलो। भला मेरे लिए डर किस बातका?

इतना कहते कहते कामाख्यानाथने कन्याको अपने पास खींच लिया और मन्दिरकी ओर बढ़े। इतनेमें कई नौकर छाता और लालटेन लेकर उनके पीछे उपस्थित हो गए थे; पर उन लोगोंकी सहायताकी आवश्यकता नहीं पड़ी। कामाख्यानाथ उन लोगोंके पहुँचनेसे पहले ही मन्दिरमें पहुँच गए।

डरी हुई बालिका अपने पिताके पास खड़ी हुई काँप रही थी। उपस्थित आत्मीयोंमेंसे एकने उसे खींचकर अपने पास करना चाहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.


था, पर वह और भी अपने पितासे सटकर खड़ी हो गई और बोली बाबूजी, इतना पानी कहाँसे आ गया ? यह क्या हो गया ?

कामा०—भला इसमें डरनेकी कौनसी बात है !

रमाने देखा कि कामाख्यानाथके मुखपर असाधारण गम्भीरता छाई हुई है ।

उधर पानी बरसनेके कारण मन्दिरमें बड़ी गड़बड़ी मची हुई थी। जोरसे हवा चलनेके कारण सब झाड़ और फानूस आदि एक दूसरेसे टकराकर ठक ठक कर रहे थे और उनमेंसे कुछ झन झन शब्द करते हुए टूट भी गए थे। सब नौकर चाकर हाथमें लालटेनें और दूसरे दूसरे सामान लिए हुए इधरसे उधर दौड़ रहे थे। गाने बजानेवाले अपना अपना साज सामान जल्दी जल्दी समेट रहे थे। दर्शक और श्रोता लोग अपने सामने जिसका जूता पाते थे पहनकर घरकी ओर दौड़े चले जाते थे। कुछ लोग जूता पैरमें न पहनकर हाथमें ही लिए हुए चले जाते थे। पर बालक कुछ भी भयभीत नहीं थे। वे बहुत प्रसन्नतापूर्वक गाते जाते थे—"काल कलौटी उज्ज्वल धोती, काले मेघा पानी दे।" आदि आदि।

यह सोचा गया था कि अब कल सबेरे कीर्तन होगा, इसलिए गाने बजानेवालोंके लिए रात भर वहीं मन्दिरमें ठहरनेकी व्यवस्था कर दी गई। आगत लोगोंमेंसे जो लोग भागकर घर नहीं जा सके थे, उन्हें किसी तरह उनके घर पहुँचानेका बन्दोबस्त किया गया। इतना सब कुछ करके कामाख्यानाथ अपनी रिश्तेदार स्त्रियों और रमाको लेकर मकानकी ओर चले। रमाका वह लँगड़ा बालक भी उस समय वहीं मन्दिरके आँगनमें उपस्थित था। उसने रमासे कुछ प्रसाद माँग लिया था। वही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रसाद खाकर और दरीका एक कौना बिछाकर वह वहीं सो रहा। वहाँ उसके लिए संगी साथियोंका कोई अभाव नहीं था।

कई नौकर चाकर लालटेन लेकर आगे पीछे चल रहे थे। रमा अपने पिताकी बाँह पकड़े हुए डरती हुई धीरे धीरे चल रही थी। उस समय भी हवा बहुत जोरोंसे चल रही थी। रास्तेमें इधर उधर जो झोंपड़ियाँ आदि बनी हुई थीं, वे इस प्रकार हिल रही थीं कि मानो अभी जमीनपर गिर पड़ेंगी या उड़ जायँगी। थोड़ी देरमें कात्यायनीका मकान भी आ गया। उसे देखकर रमाने कहा—बाबूजी, इसी घरमें न कात्यायनी रहती है? अगर यह घर गिर पड़े तो?

कामाख्यानाथने रमाकी इस बातका कोई उत्तर न दिया। उन्मत्त झंझाके ताण्डव नृत्यमें वे अपनी लड़कीको सँभालते हुए बड़े कष्टसे आगे बढ़ रहे थे। ऐसा जान पड़ता था कि अन्धकारमयी प्रकृतिकी ओर देखकर वे यह सोच रहे थे कि इस प्रकृतिके कानोंमें भी कोई ऐसी ही असंगत बात पहुँची है जो इसकी प्रकृतिके विरुद्ध है और इसी लिए वह बहुत ही क्रुद्ध होकर पृथ्वीको नष्ट भ्रष्ट कर देना चाहती है। जब पिताने रमाकी बातका कोई उत्तर नहीं दिया तब उसने आप ही आप कहा—नहीं, यह उसके सोनेकी कोठरी नहीं है। ऐसे अन्धड़में तो इस तरहके लोगोंपर न जाने कितनी आपत्तियाँ आती होंगी। कौन किसकी खोज खबर लेता है?

कामाख्यानाथने उत्तर दिया—वही जो यह अन्धड़ चलाता है!

---

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE